श्री हेमचन्द्राचार्य

मोहरिते सच्चवयणस्स पलिमंथू (ठाणंगसुत्त, ५२९)

अनुसन्धान - ८३

प्राकृतभाषा अने जैनसाहित्य विषयक संपादन, संशोधन, माहिती वगेरेनी पत्रिका

संपादक : **विजयशीलचन्द्रसूरि**

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य
नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि - अमदावाद

डिसेम्बर - २०२०

मोहरिते सच्चवयणस्स पलिमंथू (ठाणंगसुत्त, ५२९)
'मुखरता सत्यवचननी विघातक छे'

अनुसन्धान

प्राकृतभाषा अने जैनसाहित्य-विषयक
सम्पादन, संशोधन, माहिती वगेरेनी पत्रिका

८३

सम्पादक :
विजयशीलचन्द्रसूरि

श्रीहेमचन्द्राचार्य

कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी
स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि
अहमदाबाद
डिसेम्बर - २०२०

अनुसन्धान ८३

आद्य सम्पादक : **डॉ. हरिवल्लभ भायाणी**

सम्पादक : **विजयशीलचन्द्रसूरि**

सम्पर्क : C/o. **अतुल एच. कापडिया**
A-9, जागृति फ्लेट्स, पालडी
महावीर टावर पाछळ, अमदावाद-३८०००७
M. 99798 52135
E-mail : s.samrat2005@gmail.com

प्रकाशक : **कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि, अहमदाबाद**

प्राप्तिस्थान : (१) **आ. श्रीविजयनेमिसूरि जैन स्वाध्याय मन्दिर**
१२, भगतबाग, जैननगर, नवा शारदामन्दिर रोड,
आणंदजी कल्याणजी पेढीनी बाजुमां,
अमदावाद-३८०००७
M. 99798 52135 (अतुल एच. कापडिया)

(२) **सरस्वती पुस्तक भण्डार**
११२, हाथीखाना, रतनपोल,
अमदावाद-३८०००१
फोन : ०७९-२५३५६६९२

प्रति : २५०

मूल्य : ₹ 150-00

मुद्रक : **क्रिश्ना ग्राफिक्स, किरीट हरजीभाई पटेल**
९६६, नारणपुरा जूना गाम, अमदावाद-३८००१३
(फोनः ०७९-२७४९४३९३)

निवेदन

संशोधननुं क्षेत्र घणुं विशाल छे. बहु मजानुं छे.

वरसोनां वरसो सुधी काम करीए, अने सेंकडो तज्ज्ञ जनो एमां काम करे, तो पण पूरेपूरुं तो न खेडाय; बल्के खेडाणनी नवीनवी दिशाओ ऊघडती ज आवे, नवानवा प्रकारो उपस्थित थतां ज रहे, तेवुं आ व्यापक क्षेत्र छे.

कंटाळवुं नहि, ए आ क्षेत्रमां काम करवा माटेनी तथा काम करनार माटेनी बुनियादी शरत छे. तमे थाको नहि, तमने रस पडे, तो आ क्षेत्रमां काम करवानी जे मजा आवे ते अतुलनीय होवानी.

गत अङ्कमां बे महान कोश-ग्रन्थो विषे वात करेली. आ वखते तेवा ज बीजा ग्रन्थो विषे वात करवी छे.

एक पुस्तक वर्षो पूर्वे जोएलुं '**जैन ग्रन्थ गाईड**'. मारी स्मरणशक्ति दगो देती न होय तो, ए पुस्तक श्रीबुद्धिसागरसूरि महाराजे तैयार करावेलुं एवुं याद छे. भूलचूक लेवीदेवी.

आ पुस्तकमां, जैन धर्मनी प्रकाशक एटले के पुस्तक-प्रकाशन करनारी संस्थाओए प्रकाशित करेला जैन धर्मना ग्रन्थो/पुस्तको तथा प्रतोनी सूचि हती. आवी सूचि एटला माटे अगत्यनी हती के एक ज ग्रन्थ एक ठेकाणेथी प्रगट थाय, थतो के थयो होय, तेनी जाण न होवाथी बीजी संस्था पण ते ज ग्रन्थ प्रकाशित करे, तो एक तो काम बेवडाय अने बीजुं समयनो, धननो, शक्तिनो अकारण व्यय वधे. आ पुस्तकमां तेना समय सुधीमां छपायेल हजारो ग्रन्थोनी यादी उपलब्ध थयेली. साथे ज, ते समयना प्रकाशनक्षेत्रे कार्यरत व्यक्तिओ, साधुओ, सम्पादको तथा संस्थाओ विषे पण जाणकारी सहेजे मळी हती.

आ पुस्तक कांई नहि तो ७० के ८० (के कदाच तेथी वधु) वर्षो पूर्वे प्रकाशित हतुं. तेना प्रकाशन पछी आज सुधीमां आपणे त्यां एटले के जैन धर्ममां केटला बधा ग्रन्थो, पुस्तकरूपे अने प्रतरूपे, मुद्रित थया छे ? गण्या गणाय नहि तेटला. आमां केटलायनी एकथी वधु आवृत्तिओ पण थई हशे. केटलायनां संशोधित के परिवर्धित संस्करणो पण थयां होय. अने आजे तो प्रतिवर्ष सेंकडो

ग्रन्थो तेना मूळरूपमां के अनुवादादिरूपे प्रगट थई ज रह्या छे. आ अंदाजित आठ दायकानां प्रकाशनोनी सूचि जो तैयार थाय तो जैन साहित्यनी विशाल सृष्टिनां जगतने दर्शन थाय; अने जैनोए केवी केवी साहित्यिक रचनाओ करी छे तथा केटली साहित्यसेवा करी छे, तेनो पण ख्याल जगतने, जैन समाजने आवे.

आवी यादीनुं काम एक संशोधनना काम करतां जराय ओछुं के ऊतरतुं नथी. आवुं काम करवा माटे, ते करनारे, चोटली बांधीने बेसवुं पडे. सेंकडो-हजारो लोकोनो, संस्थाओनो, ज्ञानभण्डारो तथा लायब्रेरीओनो सम्पर्क करवो पडे. जोके आवां काममां तेने आधुनिक डिजिटल-विश्वनां संसाधनोनो लाभ अवश्य मळे, पण तो पण तेने परिश्रम तो घणोघणो पडे ज.

पोतानी इतर सघळी रुचिओ-इच्छाओ-अपेक्षाओने संकेलीने कोई बेसी जाय, त्यारे ज आवां काम थई शके. पण आवुं काम एक सन्दर्भग्रन्थनी गरज, तमाम सम्पादको-प्रकाशको-संशोधको माटे, अवश्य सारे ए नक्की...

आवुं ज एक बीजुं पुस्तक जोएलुं. तेनुं नाम हतुं '**जैन ग्रन्थावली**' तेना सम्पादक-प्रकाशकनुं नाम स्मरणमां नथी. आ पुस्तकमां विविध जैन ग्रन्थसंग्रहोमां वर्तती हस्तलिखित प्रतिओनी नामावली तथा ते कया कया भण्डारमां छे, अथवा तो तेनो उल्लेख बृहट्टिप्पनिका, पीटर्सनना रिपोर्ट जेवा कया सन्दर्भमां मळे छे, तेनी नोंध हती. आ सूचि अधूरी अवश्य हती, पण जेटली हती ते पण घणी उपयोगी हती.

पूनाथी प्रकाशित डो. एच.डी. वेलणकर द्वारा सम्पादित ग्रन्थ 'जिनरत्नकोश' ते आ 'ग्रन्थावली'नुं ज विकसित अने वैज्ञानिक स्वरूप गणाय.

ई. १९८१मां पूना जवानुं बनेलुं त्यारे, त्यांना भाण्डारकर इन्स्टिट्यूटमां एक शोकेसमां 'जिनरत्नकोश'ना बीजा भागनी डो. वेलणकरे ज निर्मेली प्रेसकोपी अमे जोयेली. ते वखतना त्यांना डिरेक्टर डो. दाण्डेकरे ते बतावीने, अेना प्रकाशन माटे कोई जैन संस्था सहाय करे तो ते प्रकाशित थई शके- तेवी अपेक्षा पण अमने दर्शावेली. आ वात अमदावाद आववानो योग बन्यो त्यारे. ला.द. विद्यामन्दिरना नियामक पं. दलसुख मालवणियाने करी हती, अने तेमणे तेनुं

प्रकाशन ला.द. ग्रन्थमाळामां करवानो तेमज डो. दाण्डेकर साथे वात करवानो उत्साह पण दाखवेलो. पण गमे ते कारणे ते कार्य न थयुं.

आ पछी अमारे ई. २००२मां पुनः पूना जवानुं थयुं त्यारे इन्स्टिट्यूटनी मुलाकाते जवानुं थतां, ते प्रेसकोपी अंगे तपास तथा पृच्छा करी, त्यारे त्यांना कार्यवाहकोए आवी कोई वस्तु होवानो ज नहि, पण वेलणकरे आवो बीजो भाग तैयार कर्यानो पण दृढ इन्कार करेलो. ए वाते मनने घेरो आघात लागेलो. खेर, 'गतं न शोचामि' ए न्याये आवी वाते शोक करवानो मतलब नथी.

वात काम करवानी छे. 'ग्रन्थावली' प्रकारनुं कार्य करवा जेवुं तो छे ज.

आ वातना अनुसन्धानमां एक उल्लास जन्मावे तेवी वात ए छे के पूना-श्रुतभवन द्वारा 'वर्धमान जिनरत्नकोश' नामे एक सूचिग्रन्थ तैयार थई ज रह्यो छे. तेमां भारतभरना जैन ग्रन्थालयोमांनी हस्तप्रतिओनी यादी समाववानो तेमनो उद्देश तथा प्रयत्न छे. शक्य वधु ने वधु संचय तेओ करी रह्या छे. काम गंजावर छे. पण यशोदायी पण तेवुं ज छे, अने उपयोगी पण तेटलुं ज छे, एमां सन्देह नथी.

आवां कार्यो आपणे त्यां वधु नें वधु थाय एवी आशा.

— शी.

अनुक्रमणिका

स्तुति चतुर्विंशतिका — सं. गणि सुयशचन्द्रविजय
मुनि सुजसचन्द्रविजय

आवरणचित्र-परिचय

आवरण १ : एक साध्वीजीनी ऊभी प्रतिमा. आ प्रतिमा अंशतः खण्डित जणाय छे. तेमना जोडेला हाथमां मुखवस्त्र छे, बगलमां रजोहरण छे. वस्त्र (कपडो) पगना नीचेना भाग सुधी कायाने ढांके छे, पण मस्तक उघाडुं छे. तेमनी बेय बाजुए आ ज मुद्रामां बे साध्वी प्रतिमा कोतरेली छे. आ दुर्लभ शिल्प शत्रुंजय पर्वत पर खण्ड अवशेषोना जथ्थामां क्यांक पडेलुं वर्षो पूर्वे जोवा मळेलुं. सम्भवतः १२मा शतकनुं शिल्प.

आवरण ४ : एक खण्डित साधुप्रतिमा-काष्ठपीठनुं भान करावती पाषाण पीठ पर बेठेली स्थितिनी प्रतिमाना हाथ तथा छातीना अंश खण्डित छे. मस्तकना पृष्ठभागे लांबो रजोहरण टांगेलो देखाय. आ शिल्प पण शत्रुंजय पर ज जोयेलुं. अनुमानतः १२मा शतकनुं शिल्प.

स्तुति चतुर्विंशतिका

– सं. गणि सुयशचन्द्रविजय
मुनि सुजसचन्द्रविजय

जैन दर्शनना विविध साहित्यप्रकारोमां जो सौथी वधु खेडायेलो कोई साहित्यप्रकार होय तो ते भक्ति प्रधान काव्योनो छे । स्तोत्रो, स्तवनो, स्तुतिओ, पदो, गीतो, छन्दो, आवुं तो केटलुंय साहित्य आ काव्यप्रकारमां रचायेलुं जोवा मळे छे । प्राकृत, संस्कृत, मारु-गुर्जरादि भाषाओथी शरु करी जे ते प्रदेशना कविओए ते-ते प्रादेशिक भाषाओमां पण विविध स्तोत्रादि साहित्यनी रचना करी आ क्षेत्रने समृद्ध कर्युं । शोभनस्तुति चतुर्विंशतिका, भक्तामर स्तोत्र, कल्याणमन्दिर स्तोत्र, पू. आनन्दघनजीकृत चोवीशी, उपा. यशोविजयजीकृत चोवीशी वगेरे रचनाओ आ साहित्यनी उत्तम रचनाओ छे।

प्रभु भक्ति विषयक साहित्यनी विभाजना मुख्यत्वे २ प्रकारे करी शकाय। (१) तीर्थङ्करोने आश्रयी रचायेल स्तवना, (२) तेमना तीर्थोने के तेना इतिहासने आश्रयी रचायेली स्तवना । तेमां तीर्थङ्करोने आश्रयी रचायेल स्तवनाओ- (१) प्रभुनी गुणस्तुतिपरक रचना (२) दासत्वभावे रजू कराती रचना (३) सख्यभावनुं निरूपण करती रचना (४) स्वर्निंदा स्वरूप आलेखती रचना (५) आत्मानुभव सभर रचना एवा पांच भेदे, तथा अन्य प्रकारोमां प्रभुना माता-पिता-नगरादिनो उल्लेख करती (विविध बोलथी गर्भित) रचनाओ, साहित्यिक चमत्कृतिथी सभर रचनाओ जेवा प्रकारो पण विचारी शकाय । एक सन्दर्भ ग्रन्थमां प्रस्तुत साहित्यना नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भाव एम छ भेदो दर्शावाया छे तो अन्य एक ठेकाणे तेना वयण संस्तव तथा सम्बन्धि संस्तव एम २ भेदमां पण भक्ति विषयक सर्व साहित्यनो समावेश करायो छे ।

थोडी अपवादिक कृतिओ बाद करता आ प्रकारमां रचाती महत्तम कृतिओ भिन्न-भिन्न कविओ वडे रचाती लघु रचनाओ ज होय छे । एक ज कविए रचेल काव्यो अहीं घणा ओछा प्रमाणमां जोवा मळे छे । तेमांय चोवीशी, वीशी, स्तोत्रावली स्तोत्रकोश जेवी रचनाओ तो अति अल्प संख्यक छे । जो के तेम छतां तेवी रचनाओनी संख्या ४००-५००नी तो खरी ज, ओछी नहीं । अहीं सम्पादित थयेली कृति उपरोक्त साहित्यमां उमेराती मरुगुर्जर भाषानी चोवीशी (चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रसंग्रह) नामनी एक अप्रगट-विशिष्ट रचना छे । विशिष्ट एटला माटे कारण के चोवीशी

साहित्यमां मळती प्रगट रचनाओमां प्रायः आवी बृहद्काय रचना जोवा मळती नथी के जेमां एक-एक तीर्थङ्करोने आश्रयी अंदाजे ४० थी ५० पद्योनी स्तवनानो ग्रन्थाङ्क आवे । जो के अहीं एक नोन्धनीय विगत ए पण खरी के कृति मोटी होवा छतां घणे अंशे (पद्य ३१ पूर्वे) अजितनाथ प्रभुनी स्तवनामां तथा थोडे अंशे (पद्य ५ पछी) महावीर प्रभुनी स्तवनामां खण्डित पण छे ।

प्रस्तुत स्तवनामां कविए प्रभुना जीवनचरित्रने आलेखता विविध ६० बोलोनुं वर्णन स्तवनाना माध्यमे रजू कर्युं छे । जो के कृतिकारनी रचना शैली एटली बधी सुन्दर छे कृतिगत पदार्थ वर्णना वांचनारने कंटाळो न उपजावे, ऊलटुं तेना काव्यप्रवाहमां तेने ताणी जाय । तेमांय स्तवनोना विविध रागो, उपमादि अलङ्कारो, पद्यान्तमां प्रयोजायेल प्रासो काव्यने वधु सुन्दर बनावे छे ।

कृतिकारना सन्दर्भे प्रस्तुत काव्यनी विचारणा करीए तो काव्य वांचता ज कृतिकारश्री एक निवडेल कवि होय तेवुं लागे । काव्यमां प्रयोजायेल विविध रागो के देशीओ तेमना संगीत विषयक ज्ञानने, तो काव्यगत प्राकृत, संस्कृत के मारु गुर्जर भाषाना शब्दप्रयोगो तेमना शाब्दिक वैभवने दर्शावे छे । वळी केटलेक ठेकाणे कविए कवि होवाने नाते हरि, मुष्टि जेवा केटलाक शब्दोने पोतानी रीते प्रयोजी तेमनी काव्य रचना शक्तिनो परिचय आप्यो छे । जो के तेवा प्रयोगोनी जेवा ज क्षोणि, वाणि वगेरे पण थोडा शब्दो काव्यमां जोवा मळे छे जे कविए स्वीकारेला शब्दो छे के लहियानी भूलथी सर्जाएला ते अंगे प्रश्न रहे छे । अही कृति सम्पादनमां अमे तेवा शब्दोने प्रायः सुधार्या वगर ज स्वीकार्या छे ।

शब्दोनी जेम पदार्थालेखनमां पण काव्यमां २-३ जग्याए कृतिकारश्री वडे स्खलना रहेवा पामी छे । जेमके अनन्तनाथ प्रभुना गणधरनी संख्या लखता कविए एक-शत शब्द प्रयोज्यो छे । खरेखर त्यां अर्द्ध-शत शब्द होवो जोईए कारण के अनन्तनाथ प्रभुना गणधरनी संख्या ५० होवानी नोन्ध मळे छे । ते ज रीते अरनाथ प्रभुना यक्ष यक्षेन्द्रना वाहनरूपे कविए शिखि (मोर) होवानो उल्लेख कर्यो छे जे देव-देवीना वर्णनसम्बन्धि अन्य सन्दर्भग्रन्थो तपासता ते शिखि नही परन्तु शंख होवुं घटे ।

आवी ज एक वात कविद्वारा मल्लिनाथ प्रभुना लोचनी विगतो आलेखता बनी गई छे जेमां कविए "प्रभु पंच मौष्टिक लोच लिई" ए पद द्वारा प्रभुए पांच मुष्ठिथी लोच कर्यानुं उल्लेख्युं छे जे खरेखर मल्लिनाथ प्रभु स्त्री तीर्थङ्कर होई (दाढी-मूछना वाळ सिवायना) चउमुष्ठि लोच कर्यो होवानुं सम्भवे । आवी ज एक

चोथी स्खलना सुविधिनाथ प्रभुनी च्यवनतिथिमां छे । (आम तो कविए काव्यमां कल्याणकनी तिथिओनुं आलेखन करता मारवाडी के गुजराती ए बेमांथी जरूर (काव्यना शब्द अनुसार) कोई एक तिथिनो उल्लेख कर्यो छे) सुविधिनाथ प्रभुनी च्यवन तिथि अन्य सन्दर्भ ग्रन्थो मुजब तो फागण सुद ९नी छे ज्यारे कृतिकारे अहीं सातम लखी छे ते पण कदाच स्खलना ज होवी जोईए ।

आ सिवाय पण काव्यनी केटलीक अप्रसिद्ध वातो पण नोन्धवा योग्य छे जेमां केवलज्ञान बाद सुपार्श्वनाथ प्रभुनी सेवा करवा इन्द्रे प्रभुनी उपर १, ५, ९ सर्पफणानुं छत्र धारण कर्यानी विगत, कुन्थुनाथ भगवाननी माताए रात्रे स्वप्नमां रत्ननो कुन्थु (स्तूप) निहाळी बाळकनुं कुन्थु नाम पाड्यानी विगत तथा मल्लिनाथ प्रभुने साध्वीजीओनी आभ्यन्तर पर्षदा तथा साधु भगवन्तोनी बाह्य पर्षदा होवानी तेमज निर्वाण समये पण तेओ बन्ने पर्षदा साथे निर्वाण पाम्यानी विगत विशेष ध्यानार्ह छे । अन्य सन्दर्भग्रन्थोमां सहनिर्वाण पामेला मुनि-मुनिनीओनी संख्या ५००नी नोन्धाइ छे ज्यारे ते संख्या अहीं ३०० मुनि-मुनिनीओनी मळे छे । कविश्रीना आ पाठनो सन्दर्भ गोतवो रह्यो ।

जो के काव्यमां अहीं नोन्ध्या सिवायना पण थोडा मतान्तरो छे । जे अमे आगळ उपर परिशिष्टमां नोन्ध्या छे । ते सिवाय अन्य २ परिशिष्टो पण अमे बनाव्या छे जेमां (१) भग०ना माता-पितादि विगतोनुं (२) भग०ना यक्ष-यक्षिणीनी विगतोनुं परिशिष्ट छे । खास अहीं एक विशेष नोन्ध एटली के प्रस्तुत कृतिनुं सम्पादन अमे यथामति शुद्ध तैयार करवानो प्रयत्न कर्यो छे । परन्तु भोगविअ, रचिअ, वाधीअ, पाणीअ थापीय, पामीय, ठविय, जेवा केटलाक कृदन्तोना प्रयोगोमां कविए क्यांक ह्रस्व तो क्यांक दीर्घ 'इ'नो प्रयोग शा कारणथी कर्यो छे ते एक अमे समजी शक्या नथी ।

कृतिकार-कृतिकार रत्नसिंहजी धर्मसिंहजीना शिष्य छे । कृतिमां कृतिकारे क्यांय पोतानी सम्पूर्ण गुरु परम्परानो के गच्छनो उल्लेख कर्यो नथी तेथी ते अंगे कशुं स्पष्ट थतुं नथी । परन्तु कृतिनी लेखनशैली जोतां कृति अनुमानित १८मी शताब्दिमां लखाई हशे । माटे रचना ते पूर्वे थई गणाय । जो के कविए मल्लिनाथ प्रभुनी स्तवनामां पोताना गुरु माटे "कवि-कोटि-कुल-कोटीर-मणि ए जे विशेषणनो प्रयोग कर्यो छे ते प्रयोग पं. धर्मसिंहजीनी कवित्वशक्ति साथे तेमनी अन्य रचनाओ होवा तरफ पण ईशारो करे छे । तेमनी कोई कृतिमां कविनी गुरु परम्परा मळे तो ज प्रस्तुत कृतिकारना समय अंगे कशुं जाणी शकाय ।

हस्तप्रत — प्रस्तुत कृतिनुं सम्पादन एक ज प्रत परथी करायुं छे । जो के ते प्रत २ टुकडामां मळी । प्रथम २ पत्र श्रीसाहित्यमन्दिरना ज्ञानभण्डारना हस्तलिखित विभागमांथी, ज्यारे ४ नं. ना पत्रथी ३६ नं. ना पत्रो मुंबई गोडीजी पार्श्वनाथ जैन देरासरना ज्ञानभण्डारना हस्तप्रतसंग्रहमांथी मळ्यां छे । एक ज प्रतना २ टुकडाओनुं आम भेगा थवुं सानन्द-आश्चर्य पण छे । खास तो आ बन्ने प्रतो उपलब्ध करावववा बदल ते बन्ने ज्ञानभण्डारना व्यवस्थापकोनो तथा पू. मुनिराज जयभद्र विजयजीनो खूब खूब आभार । कोई सम्पादक संग्राहक पासे आ ग्रन्थनी अन्य कोपी होय अथवा प्रस्तुत कृतिनां अप्राप्य पत्रो (पत्र नं. ३, ३७) होय तो जाण करे जेथी एक अप्रसिद्ध कविनी कृतिने सम्पूर्णरूपे पुनर्जीवित करी शकाय।

*

षष्ठि स्थान नाम

नं.	स्थान नाम	नं.	स्थान नाम
१.	नगर नाम	१८.	नाम हेतु
२.	पितृ नाम	१९.	तनु-मान
३.	मातृ नाम	२०.	पाणिग्रहण
४.	पूर्वजन्म नाम	२१.	राज्याभिषेक
५.	अवतरण	२२.	लोकान्तिकागम
६.	तन्मास, पक्ष-	२३.	वार्षिकदान
७.	तिथि-नक्षत्र नाम	२४.	शिबिका नाम
८.	स्वप्नदर्शन	२५.	तपोवन नाम
९.	तद्विचार	२६.	लोचमुष्टि
१०.	प्रसव	२७.	व्रततपः
११.	तन्मासादि ४ (पक्ष-तिथि-नक्षत्र)	२८.	दंडकोच्चार
१२.	लांछन नाम	२९.	सहव्रतधर पुरुषसंख्या
१३.	देह वर्ण	३०.	तन्मासादि [४] (पक्ष-तिथि-नक्षत्र)
१४.	दिक्कुमारी-कृत्य	३१.	पारणापुर नाम
१५.	इन्द्र महोत्सव	३२.	पारणा दायक
१६.	नृप महोत्सव	३३.	पारणा वस्तु नाम
१७.	नाम स्थापन		

नं.	स्थान नाम	नं.	स्थान नाम
३४.	छाद्मस्थ्य मान	४८.	मुनि संख्या
३५.	केवलप्राप्ति	४९.	मुनिनी संख्या
३६.	तद्वृक्ष नाम	५०.	श्रावक संख्या
३७.	त्तपो नाम	५१.	श्राविका संख्या
३८.	तन्मासादि ४ (पक्ष-तिथि-नक्षत्र)	५२.	मुक्तिस्थान गमन
३९.	समवसरण	५३.	सहगामिजन संख्या
४०.	देशना	५४.	मुक्तितप
४१.	गणधर संख्या	५५.	तन्मासादि ४ (पक्ष-तिथि-नक्षत्र)
४२.	त्रिपदी दान		
४३.	सिद्धान्त रचना	५६.	मुक्तिगमन
४४.	शासनयक्ष नाम	५७.	कौमार वर्ष संख्या
४५.	तत्स्वरूप	५८.	राज्य वर्ष संख्या
४६.	शासनसुरी नाम	५९.	व्रत वर्ष संख्या
४७.	तत्स्वरूप	६०.	सर्वायु संख्या

॥ इति षष्ठि स्थान नामानि ज्ञेयानि ॥

*

स्तवन चतुर्विंशतिका

॥ ६०॥ श्रीसर्वज्ञाय नमः ॥

ऋषभदेव स्तवन

॥ दूहडा ॥

समरवि मनि चुवीस जिन, ऊलट माइ न अंगि ।
चुवीसइ जिनवर तणां, तवन रचिसुं मनरंगि ॥१॥
रिसह जिणंदह पयकमल, पणमी भाव भरेवि ।
पभणिसु परमानंदसिउं, तास चरित संखेवि ॥२॥
युगलकालि युगलाधिपति, अवनि **अयोध्या**-इंद ।
सुर-नरपति-नत-पदकमल, निरुपम **नाभि** नरिंद ॥३॥

तस **मरुदेवा** मानिनी, सुरपति घरि जिम रंभ ।
सुख विलसइ सुरवर परिं, नर नारी निर्दंभ ॥४॥
सुर **सर्वारथ सिद्धि**(द्ध)थी, **वज्रनाभनु** जीव ।
स्वर्ग तणा सुख भोगवी, पोतइ पुण्य अतीव ॥५॥
ज्ञान त्रणि संयुक्त तव, असित पक्ष आषाढ ।
देवी ऊयरिं अवतरइ, चुथि उत्तराषाढ ॥६॥
एह दिवसि निशि नींदरसि, पुढी पदमिनि सेजि ।
देखइ देवी दीपतां, चऊद सपन मन हेजि ॥७॥
वसह[१] गयंद[२] मयंद[३] सिरि[४], कुसुम-दाम[५] ससि[६] भानु[७] ।
धज[८] [१]निप[९] सरवर[१०] वारिनिधि[११], सुरगृह[१२] मणि[१३] चित्रभानु[१४] ॥८॥
पूछइ पदमनि प्रेमरसि, पामी प्रि(पि)उनइ पासि ।
निज मति नाभि नरिंद तव, बोलइ मन उल्हासि ॥९॥
कुलमंडण होसि तनय, सनय विनय सविवेस ।
हरखी हर(रि)णंखी हसइ, वहइ गर्भ वर वेस ॥१०॥
समये सुत प्रसवइ सती, बहुल पक्ष मधु मास ।
अष्टमि(मी?) तिथि नक्षत्र वर, वैश्वदेव[२] गुणवास ॥११॥
दिसिकुमरी छपन्न तिहिं, सूतिकृत्य विरचंति ।
सुर-परिवृत सौधर्मपति, आवइ चिति एकंति ॥१२॥
सुरगिरिसिरि हरि हरख भरि, करइ स्वामि अभिषेक ।
सोवन मणिमय कुंभ भरि, निरमल जल सुविवेक ॥१३॥
लंछनि वृषभ विराजतु, ऊरु देस निवेस ।
वर्ण-सुवर्ण-सवर्ण-रुचि, लक्षण अंगि असेस ॥१४॥
सपनमाहिं पहिलुं वृषभ, लंछन वृषभ (जगत?) विख्यात ।
तिणि कारणि प्रभुनुं धरइ, वृ(ऋ?)षभ नाम प्रभुतात ॥१५॥
उत्तरकुरु फल आहरइ, क्षीरजलधि जल पान ।
धनुष पंच शत उच्चपण, देहमान असमान ॥१६॥

---

१. घट । २. उत्तराषाढा ।

जिन यौवनवय जाणि(णी?) करि, इंद्र करइ उपयाम[३] ।
सुंदर रूप **सुमंगला**, देवि **सुनंदा** नाम ॥१७॥
सुख भोगवतां स्वामिनइ, न्यून लख पूरव जाइ ।
तव शत सुत तनया-युगल, संतति सगुण-सखाय (इ?) ॥१८॥
नाभि नरिंद निदेशथी, इंद्र करइ अभिराम ।
वीस लाख पूरव पछी, राज्य-महोत्सव ताम ॥१९॥
नर नारी सकला(ली) कला, ज्ञान सहित विज्ञान ।
धर्माधर्म विचार वर, भासइ भुवि भगवान ॥२०॥
आयुर्दाय अतिक्रमिइं, पूरव च्यालीस लाख ।
जिन जाणी वैराग्य सुर, कहइ **लोकांतिक** भाख ॥२१॥
जय जय जय जगदादिजिन, बूझि बूझि भगवंत ।
तव शत सुतनइ राज-धुर, आरोपइ अरिहंत ॥२२॥
धन कण कंचण रयण मणि, वरस एक पर्यंत ।
जलधर परि जिन वरसतु, दान दीइ गुणवंत ॥२३॥
शिबिका नाम **सुदर्शना**, आरोहइं जिननाथ ।
आवइ **सिद्धारथ** वनिइं, सहस च्यारि नर साथ ॥२४॥
चैत्र मासि बहुलाष्टमी, वैश्वदेव नक्षत्र ।
स्वामी चु मुट्ठिय करी, लोच लीइ चारित्र ॥२५॥
शम दम संयम अणुसरइ, तप जप निर्मल ध्यान ।
आवइ महीअलि विहरतु, **हथिणाउरि** भगवान ॥२६॥
संवच्छर तप पारणुं, करइ सदनि **श्रेयांस** ।
राध[४] शुद्ध तृतीया तिथिं, इक्षुरसि सुप्रसिद्ध ॥२७॥
वरस सहस एक तप तपी, वर तरु तलि न्यग्रोध ।
अट्ठम तप तपतां उसभ, पामइ केवल-बोध ॥२८॥
समवसरण सुरवर रचइ, दिइ देशन भगवंत ।
वाणी योजनगामिनी, सुणइ सुरासुर संत ॥२९॥
पुत्र **भरतना** पांचसइं, पौत्र सातसइं तत्र ।
प्रथम देशना स्वामिनी, लिइ चारित्र पवित्र ॥३०॥

३. विवाह । ४. वैशाख ।

प्रथम पुत्र चक्री तणुं, **पुंडरीक** अभिधान ।
ते आदिइं गणधर हूआ, चउरासी भगवान ॥३१॥
त्रिपदी पामी ते रचइ, पूरव अंग अग्यार ।
आगम श्रुति श्रवणे सुणी, लहीइ भवजल पार ॥३२॥
शासनसुर सोहइ सबल, **गोमुख** नामिइं यक्ष ।
सोविनवन्न गयंद-रथ, च्यारि बाहु परतक्ष ॥३३॥
वरद अक्षमाला-कलित, जिमणा दोइ कर जास ।
बीजपूर पाश प्रसर, कलित वाम कर तास ॥३४॥
तिम सोहइ शासनसुरी, **अप्रतिचक्रा** नाम ।
अष्ट-भुजा गरुडासना, हेमकांति अभिराम ॥३५॥
वरद चक्र शर पाशयुत, दक्षण कर वर धाम ।
धनुष वज्र चक्रांकुशे, कलित तास कर वाम ॥३६॥
श्रमण **ऋषभसेन** प्रमुख, सहस चुरासी होइ ।
साध्वीजन **ब्राह्मी** प्रमुख, लाख त्रणि जस जोइ ॥३७॥
श्रेयांस प्रमुख प्रवर, सुश्रावक त्रणि लाख ।
पांचे सहसे आगला, पालइ जिननी भाख ॥३८॥
आदि **सुभद्रा** श्राविका, आण वहइ अरिहंत ।
लाख पांच चउपन सहस, संघ चतुर्विध संत ॥३९॥
पूरव आयु अतिक्रमिइं, लाख चउरासी मान ।
आवइ मुनि दस सह[स]सिउं, अष्टापदि भगवान ॥४०॥
माघ बहुल तेरसि तिथिइं, शुचि अभीचि नक्षत्र ।
आदि अजरपद पामिउं, तप चउद्दसम पवित्र ॥४१॥
आदि जिणेसर वर तवन, चारु चरित्र रसाल ।
जे भवियण भाविइं भणइ, तेह घरि मंगलमाल ॥४२॥
धर्मसिंह पंडित तणउ, पामी वचन विसेस ।
रत्नसिंह मुनिवर भणइ, ए संबंध असेस ॥४३॥

॥ इति पण्डितश्रीधर्मसिंहगणिशिष्यविरचिते चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रसङ्ग्रहे
साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे ऋषभदेवस्तवनं प्रथमम् ॥१॥

अजितनाथ स्तवन (अपूर्ण)

[प्रण]मइ सुरासुरवृंद ॥३१॥
हवइं चैत्र मास शुदि पक्ष रे, पंचमि(मी?) तिथि मृगशिर ऋक्ष ।
अपुनर्भव-पद जिन पायु रे, तब सकल सुरासुरि गायु ॥३२॥
साढा च्यारि सयां धनु देह रे, संसार-दवानल-मेह ।
अष्टादश पूरव लक्ष रे, जस कुमरपणइ परतक्ष ॥३३॥
वली त्रइपन पूरव लक्ष रे, निज राज करइ प्रभु दक्ष ।
तिहां एक अधिक पूर्वांग रे, पछइ बार वरस व्रत-संग ॥३४॥
हवइं केवलनाणनु काल रे, एक पूरव लक्ष विशाल ।
पूर्वांग ऊणउं तिहां एक रे, बार वरस वली सुविवेक ॥३५॥
इम बहुत्तिरि पूरव लाख रे, सर्वायु इसी जिन भाख ।
इम अजिअ जिणेसर जाण रे, परमायु तणुं परिमाण ॥३६॥
श्री**धर्मसिंह** गुरुराय रे, मिइं पामी तास पसाय ।
श्री**अजित** जिणेसर गायु रे, हवइं मनवंछित फल पायु ॥३७॥

*॥ इति पण्डितश्री**धर्मसिंह**गणिशिष्यविरचिते चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रसङ्ग्रहे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीअजितदेवस्तोत्रं द्वितीयम् ॥२॥*

सम्भवजिन स्तवन

त्रीजा **संभव**स्वामि, पयकमल सिर नामि ।
गुणगण तस थुणूं ए, चारु चरित भणूं ए ॥१॥
श्रावस्ती पुर सार, इंद्रपुरी अवतार ।
जितरिपु नरपती ए, नारि **सेना** सती ए ॥२॥
विमलवाहननृप जीव, सुख भोगवीअ ।
अतीव **आनतथी** चवइ ए, सेना उरि हवइ ए ॥३॥
मास फागुण सित पक्ष, अष्टमि(मी?) मृगशिर ऋक्ष ।
ग्रहगण इणइ समइ ए, शुभ गति संक्रमइ ए ॥४॥

निशिरसि सेना मात, सुपन लहइ बिइ-सात ।
सातवती[५] सती ए, सा तव कहइ पती ए ॥५॥
तव कहइ वचन जितारि, शास्त्र तणइ आधारि ।
पूरव कृत वशिइं ए, सुत उत्तम हसिइ ए ॥६॥
पूरव दिसि रवि जेम, गरभ वहइ सा तेम ।
हरख हीइ धरइ ए, शुभ मति अणुसरइ ए ॥७॥
मार्गशीर्ष शुदि योगि, चऊदसि मृगशिर भोगि ।
प्रसवइ गुणनिलु ए, बालक कुलतिलु ए ॥८॥
छपन कुमारी नारि, सुकृत तणइ अणुसारि ।
जनम-उच्छव करइ ए, भवसागर तरइ ए ॥९॥
आसन कंपिइं इंद, जाणी जनम जिणंद ।
आवइ हरखता ए, जिननइं निरखता ए ॥१०॥
सुरगिरिशिखरि सुरिंद, जल-अभिषेक जिणंद ।
हरि हरखिइं करइ ए, पुण्य पोतइ भरइ ए ॥११॥
निज घरि नृपति जितारि, संपतिनइं अणुसारि ।
धवल मंगल कर[इ] ए, हरख हीइ धरइ ए ॥१२॥
धान्य-संभव बहु दीठ, सुपनमांहिं सुपईठ ।
संभव सहू मिली ए, नाम दीइ रुली ए ॥१३॥
वाधइ नयणानंद, बीज तणुं जिम चंद ।
प्रभु यौवन लहइ ए, सुहज(ज्ज)न गहगहइ ए ॥१४॥
सोविनवन सुरसाल, लंछन वाजि विशाल ।
च्यारि सयां धनुं ए, उन्नत जस तनुं ए ॥१५॥
पामी राय निदेस, कन्या वरय विसेस ।
हरिण-विलोचना ए, रुचिजित-रोचना ए ॥१६॥
राज तणउ अधिकार, सुत सउंपी सुविचार ।
जितरिपु नृप शिरइ ए, व्रत अंगीकरइ ए ॥१७॥
स्वामी राज रसाल, सुख भोगविअ विशाल ।
व्रतमति मनि धरइ ए, ममता परिहरइ ए ॥१८॥

---

५. सौख्यवती ।

लोकांतिक, सुर वाणि, निसुणी अमिय समाणि ।
दान संवच्छरी ए, दिइ प्रभु मनि धरी ए ॥१९॥
सिद्धार्था जस नाम, शिबिका अति अभिराम ।
मारगि संचरइ ए, जन मंगल करइ ए ॥२०॥
मागशिर पूनिम दिन्न, मृगशिरयुत एकमन्न ।
सहस नरिंदसिउं ए, जनमन उल्हसिउं ए ॥२१॥
सहसरसाल वनंत, आवइ जिन गुणवंत ।
छठ तप अणुसरइ ए, समता मनि धरइ ए ॥२२॥
पंच मुष्टि लेई लोच, कीधु शुभ आलोच ।
दंडक उच्चरइ ए, भवसागर तरइ ए ॥२३॥
श्रावस्तीपुर ठाम, **सुरेंद्रदत्त** नृप नाम ।
खीरिइं पारणउं ए, पाप-निवारणुं ए ॥२४॥
चऊद वरस सुविचार, चारित निरतिचार ।
ध्यान विमल धरइ ए, तप जप अणुसरइ ए ॥२५॥
हवइं कार्त्तिक वदि पक्ष, पंचमि(मी?) मृगशिर ऋक्ष ।
साल शिखरि(खि?) तलइ ए, जिन केवल कलइ ए ॥२६॥
छट्ठ तणु तप कीध, काज सकल तव सीध ।
समवसरण करइ ए, सुर पातक हरइ ए ॥२७॥
योजन वाणि(णी?) विशाल, देशन दिइ सुरसाल ।
शत गणधर हूआ ए, बिइ अधिका जूआ ए ॥२८॥
त्रिपदी आपइ तास, निरमल नाण-निवास ।
तेह आगम रचइ ए, भवियणजण रुचइ ए ॥२९॥
शासनरक्षक देव, **त्रिमुख** करइ नित सेव ।
त्रिणि वदन भलां ए, लोचन तेतलां ए ॥३०॥
वाहन जास मयूर, श्याम रंग रुचि-पूर ।
छय कर जाणीइ ए, तेह वखाणीइ ए ॥३१॥
दक्षणि नकुल उदार, गदा अभय-दातार ।
वामि बीजोरडूं ए, अक्षदाम रूअडूं ए ॥३२॥
देवी तिम **दुरितारि**, वाहन मेष विचारि ।
चारु चतुर्भुजा ए, गौररुचि-व्रजा ए ॥३३॥

दक्षण बाहु विधान, अक्षसूत्र वरदान ।
वाम विराजिता ए, अभयद फणियुता ए ॥३४॥
संभव जिन परिवार, सुणयो शास्त्रविचार ।
लाख बिइ मुनिवरू ए, सेवक सुरतरू ए ॥३५॥
महासती त्रिणि लाख, सहस छत्रीस सुभाख ।
श्राद्ध दोइ लाख थुणउं ए, सहस त्राणउं भणउं ए ॥३६॥
श्राविका हूई छय लाख, सहस छत्रि(त्री)स जिनभाख ।
जिन परिकर नमुं ए, निशिदिन नीगमुं ए ॥३७॥
पूरव पन्नर लाख, कुमर पणइ जिनभाख ।
काल अतिक्रमइ ए, नृपपद संक्रमइ ए ॥३८॥
पूरव चिउंआलीस लाख, सोहावी निज साख ।
च्यार पूर्वांग वली ए, अधिकां मनरूली ए ॥३९॥
संयम केरु काल, पूरव लाख विशाल ।
च्यारि अंग जाणि(णी)इ ए, न्यून वखाणि(णी)इ ए ॥४०॥
पूरव साठि प्रमाण, जिन सर्वायु वखाण ।
आगमि इम कहिंउ ए, मिइं मनि सद्दहिउं ए ॥४१॥
मुनिवर सहस समेत, आवइ शैलि **समेत** ।
जाणी निज तणउं ए, आयु अथिरपणउं ए ॥४२॥
अनशन पाली मास, अनुपम महिमनिवास ।
कर्म सकल दहइ ए, अविचल-पद लहइ ए ॥४३॥
मधु सित सातमि(मी?) दिन्न, मृगशिरि जिन एकमन्न ।
पर[म]-पद पाईआ ए, गुणगण गाईआ ए ॥४४॥
जिनवर जगदाधार, सेवकजन साधार ।
जे तस गुण थुणइ ए, नव निधि तेह तणइ ए ॥४५॥
धर्मसिंह गुरुराय, प्रणमी तेहना पाय ।
मिइं जिन गाईउ ए, सवि सुख पाईउ ए ॥४६॥

*॥ इति पण्डितश्री**धर्मसिंह**गणिविरचिते चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रसङ्ग्रहे*
साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीसम्भवजिनस्तोत्रं तृतीयम् ॥३॥

अभिनंदन जिन स्तवन

॥ ढाल-फागनु ॥ राग-वसंत ॥

हवइं चुथा **अभिनंदन** दुरित-निकंदन देव,
तस पदपंकज मनि वहुं कहुंअ संबंध संखेव ।
नामि **विनीता** पुरवर सुरवरपुर सम सार,
सुंद(संव)र वर नरपति सुरपतिनु अवतार ॥१॥

सोहइ तस पटराणी जाणीय सुभग सुशाम,
रति-रतिपति सम तेह सनेह **सिद्धारथा** नाम ।
विजय सजय असमान विमान अनुत्तर जेह,
देव **महाबल** जीअ चवीअ वसइ तस देह ॥२॥

स्वर्ग तणां सुख साधीअ वाधीअ माधव[६] मास,
चउथि तिहां शुदि पक्ष सुऋक्ष अभीचि प्रकास ।
एक दिनि पुढीअ कामिनि स्वामिनि सतीअ समाज,
सपन लहइ दस च्यार विचार करइ महाराज ॥३॥

सुत होसिइ जगतीजन भयभंजन भगवंत,
गरभ वहइ तव देवीअ सेवीय सुर नर संत ।
हिव अधिका नव मास निवास हूइ सुविचार,
माघ बीज तिथि पक्ष वलक्ष[७] अभीचि उदार ॥४॥

प्राची दिशि जिम सूरिज सुरिजन हरिख-निदान,
प्रसवइ देवीय पुत्र पवित्र चरित्र विधान ।
सूतिकृत्य दिशिकुमरीय अमरीअ करय असेष,
आवइ सुरपति शुभमति संपति धरीअ विसेष ॥५॥

सोविन मणिमय कुंभ पयोनिधि पूरीअ अंभ,
न्हमण करइ श(सि)र नामीअ धामीअ स्वामी रंभ ।
थापीअ जननी पासि निवासि वसइ सुरनाथ,
निज घरि हरि परि उत्सव विरचइ नरपति साथ ॥६॥

---

६. वैशाख । ७. उज्वल ।

सज्जन-मन-आनंदन-चंद तणी परि बाल,
नाम दीइ **अभिनंदन** नंदननुं नरपाल ।
क्रमि क्रमि पाम्या यौवन सोवनवन्न प्रकास,
कपिलंछन उन्नत तनु धनु त्रणिसइं पंचास ॥७॥
ससिवयणी गयगमणीय रमणीयसिउं मनरंग,
भोग्यकरम जिन जाणीय भोगवइ भोग अभंग ।
नयनानंद सुधाकर आकर गुणमणि सार,
संवर नरपति जिनपति सुंपइ निज पद भार ॥८॥
इ(ई)ति अनीति स टालइ ए पालइ पुण्य-प्रचार,
न्याय करी निज मंडल आखंडल अवतार ।
पुत्र पवित्र विचित्र चरित्र अनेक उदार,
हय गय मह रह जोह अखोह अखय भंडार ॥९॥
राज यवस[८] परि वर्जीय तर्जीय मोह विपक्ष,
लोकांतिक सुर वाणीय जाणीय चित्रि सुदक्ष ।
दान दीइ संवच्छर मच्छर रहित उदार,
अविरल धण कण कंचण भूषण रयण भंडार ॥१०॥
आवइ इणइ अवसरि हरि मनि धरि विनय विवेक,
निरमल जल परिपूरित कुंभ करइ अभिषेक ।
शिबिका सुंदर सारथ **अरथ सिद्धा** अभिधान,
आरोहइ भगवान अमान विमान समान ॥११॥
सकल सुरासुर नरवर प्रणमइ जिनवर पाय,
स्वामी **सहसरसाल** विसाल वनंतरि जाइ(य) ।
सहस-महीपति-संपति-संयुत संयम लेइ,
पंच मुष्टि करी लोच आलोच अनुत्तर देइ ॥१२॥
माघ मास तस पक्ष वलक्ष अभीचि नक्षत्र,
बारसि दिन जिन जाणीइ संयमसमय पवित्र ।
नयरि **विनीता** नरपति जिनपति तस घर जाइ,
छट्ठ तणुं तिहां पारणुं वर परमान्नि कराइ ॥१३॥

८. तृण

पंचशबद वर वाजइ ए राजइ ए वृष्टि सुवन्न,
करइ प्रशंस सुरेंद्र ए **इंद्रदत्त** नृप धन्न ।
महीमंडलि छदमस्त समस्त गुणार्णव देव,
विहरइ वरस अढार विचार लहइ सयमेव ॥१४॥
विहित-षष्ट तप-जप-पर तलइ प्रियाल रसाल,
कर्म करी क्षय स्वामीय पामीय ज्ञान विशाल ।
पोस मास शुदि चऊदसि सशुचि अभीचि नक्षत्र,
समवसरण सुर विरचइ ए चरचइ चरण पवित्र ॥१५॥
पूरव दिसि मुख सवि सुखदायक देशन देव,
सुणइ सुरासुर नागर नाग विद्याधर हेव ।
गण गणधरपद थापइ व्यापइ सुजन अनंत,
सोल अधिक शत एक विवेक वहइ गुणवंत ॥१६॥
त्रिपदीय स्वामि प्रकासइ नासइ तास अनाण,
विरचइ अंग उवंग अभंग सुरंग सुजाण ।
भविअणजण पडिबोहइ मोहइ सुरनरवृंद,
सज्जन-मन-आनंदन अभिनंदन जिन-चंद ॥१७॥
तीरथरक्षक यक्ष सपक्ष **यक्षेश्वर** नाम,
श्याम द्विरदवाहन मनवंछित पूरइ काम ।
अक्षसूत्र मातुर्लिग-कलित दक्षण भुज जास,
नाग अंकुशधर सुंदर वाम भुजद्वय तास ॥१८॥
शासनदेवीअ **कालीअ** घन-वन कालीअ जेह,
पंकज-आसन भासन चारु चतुर्भुज तेह ।
वरद पाशयुत दक्षण बाहु सुलक्षण जास,
नाग अनइं अंकुशयुत वाम भुजद्वय तास ॥१९॥
मुनिजन जस त्रणि लाख स-साख हूआ सुविचार,
त्रीस सहस छिइ लाख ज साध्वीजन परिवार ।
श्रावक जस दोइ लाख अठ्यासी सहस उदार,
श्राविका पंचय लाख सत्तावीस सहस सुसार ॥२०॥

जाणीय निज निरवाण स केवलनाण(णी?) जिणंद,
जाइ सैल **समेत** समेत सहस्र मुणिंद ।
माधव मास सिताष्टमी पुष्य नक्षत्र जिणंद,
मास दिवस अनशन लही पामइ परमाणंद ॥२१॥
कुमरपणइ पूरव लख साढ बारस जस जाइ,
साढ छत्रीस भूपतिपणइ आठ पूर्वांग-युत थाइ ।
अष्टांगोन पूरव लख व्रतपर्याय प्रकार,
लाख पंचास ज पूरव स्वामि सर्वायु विचार ॥२२॥
वंदन जिन अभिनंदन जे विरचइ नर नारि,
इह भवि परभवि भावुक[९] ते विलसइ संसारि ।
धर्मसिंह पंडित तणु पामी वचनविलास,
अभिनंदन जिन गाईउ भविअण पूरइ आस ॥२३॥

*॥ इति पण्डितश्री**धर्मसिंह**गणिशिष्यविरचिते चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रसङ्ग्रहे [साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्री]अभिनन्दनजिनस्तोत्रं चतुर्थम् ॥४॥*

सुमति जिन स्तवन

॥ आदि ए आदि जिणेसरू - ए ढाल ॥

हरख ए हरख धरी जिनगुण थुणुं ए, त्रिभुवन त्रिभुवन केरु राय कि ।
सुमति जिणेसर पांचमउ ए, सुर नर सुर नर सेवइ पाय कि ॥ हरख.....
गुण थुणउं जिनवर सकल सुर नर तास चरित वखाणि(णी)इ,
नयरी **विनीता** जगवदीता सुरपुरी सम जाणीइ ।
तिहां **मेघ** नरपति जिसिउं सुरपति तास मानिनि **मंगला**,
कल-केलि-कमला सुगुण-विमला सकल-विहित-सुमंगला ॥१॥
श्रावण श्रावण शुदि द्वितीया तिथि ए, अनघ ए अनघ ए मघा संयोग कि,
पुरुषसिह पूरवभविइं ए, स्वर्ग ए स्वर्ग तणा शुभ भोग कि ॥ श्रावण...
भोगविअ भोग अभंग सुरवर **वैजयंत** विमानना,
अवतरइ मानिनि **मंगला** उरि परम पुण्य-प्रभावना ।

९. कल्याण ।

तव देवि(वी) निसिरसि नींद्रनइं वसि लहइ सुपन सोहामणा,
गजगतिइं चालइ मन्नि माल्हइ कहइ कंत कुलांगना ॥३(२)॥
नरपति नरपति चिति अति हरखीउ ए, बोलइ ए बोलइ ए वयण रसाल कि।
शशिवयणी सुणि भामिनी ए, होसि ए होसि ए बाल भूआल कि ॥ नरपति...
तव देवि(वी?) हरखी स्वामि सरखी गर्भ निय उअरिइं धरइ,
गर्भ प्रभाविइं शुद्ध भाविइं साधु समकित अनुसरइ ।
वैशाख उज्वल अष्टमी तिथि मघा ऋक्ष एणइ समइ,
मंगला मंगल-माल-मंजुल सूनु प्रसवइ मनि रमइ ॥३॥
आविअ आविअ छपन कुमरिका ए, उत्सव उत्सव करइ अनेक कि ।
विरचइ त्रिणि केलीहरां ए, जिननइं ए जिननइं ए करइ अभिषेक कि ।
आविअ...
छप्पन्न कुमरी करी उच्छव धवल मंगल उच्चरइ,
जिन जन्म जांणी भाव आणी **सुधर्माधिप** संचरइ ।
हरि शिखरि सुरगिरि स्वामि थापइ अवर इंद्र तिहां मिलइ,
जन्माभिषेक विवेकि विरची ठामि निज निज ते वलइ ॥४॥
उत्सव उत्सव नृप निज घरि करइ ए, वाजइ ए वाजइ ए वर वाजित्र कि।
धवल मंगल सधवा दीइ ए, पूरव पूरव पुण्य-पवित्र कि ॥ उत्सव.....
एह गर्भ वासिथिकइ सुतिं एह मात मति हूई निरमली,
दोइ नारि केरु वाद भांजिउ तास मनि पूगी रली ।
ए हेतु सुतनुं नाम थापइ सुमति मति-संयुत पिता,
तनुवान सोविन क्रोंच लांछन मूर्त्ति गुणलक्षणयुता ॥५॥
क्रमि क्रमि {क्रमि क्रमि} जिन वृद्धि चडइ ए, ऊजल ऊजल पखि जिम चंद कि।
मंदरगिरि परि धीर-धी ए, सेवइ ए सेवइ ए सुरनरवृंद कि ॥ क्रमि....
जिन वृद्धि पामइ सुक्रत कामइ जांम यौवन अनुसरइ,
धुरि धाम वाधइ काम साधइ राज-तनया बहु वरइ ।
नृप राज आपइ महिम व्यापइ पाप कापइ अरि दमइ,
दर दोष टालइ दुरित डालइ प्रजा पालइ गुण गमइ ॥६॥
अनुदिन अनुदिन इम सुख भोगवइ ए, योगवइ योगवइ युवती जांण कि ।
भोग्यकरम जाणी करी ए, सुरवर सुरवर करय वखांण कि ॥ अनुदिन....

भोगविय राग विराग पावइ ताम आवइ सुरवरा,
मधु-मधुर वाणी गुण वखाणी समय जांणी सुहकरा ।
जय जय जगत्त्रय जीवजीवन बूझि बूझि इसिउं कहइ,
सुर वचन पांमी मुगतिगांमी स्वामि ते मनि सद्दहइ ॥७॥

दांन ए दांन ए दीइ संवत्सरी ए, धण कण धण कण रयण भंडार कि ।
जलधर परि जिन दीपतु ए, वरसइ ए वरसइ ए अविरल धार कि ॥ दांन ए...

देई दांन **उदयंकरा**-शिबिका-रूढ मारगि संचरइ,
सुर असुर किन्नर नर विद्याधर भूरि भाविइं अणुसरइ ।
वाजित्र वाजइ गयण गाजइ राध[१०] शुदि नवमी समइ,
नक्षत्र ठार्मि मघा नामिइं स्वामि व्रत लेवा गमइ ॥८॥

दीक्षा ए दीक्षा ए दंडक उच्चरइ ए, सार्थि ए सार्थि ए सहस नरेस कि ।
सहसरसाल वनंतरि ए, पंच ए पंच ए मुष्टि हरी केस कि ॥ दीक्षा ए...

उच्चरइ दीक्षा नित्यभक्तिइं **विजयपुरि** जिन संचरइ,
तिहां **पद्म** नरपति तिणइ मंदिरि पारणुं खीरिइं करइ ।
तव पंचदिव्य सुरेंद्र विरचइ चरण चरचइ जिन तणा,
जिन वीस वरस विहार करता कर्म मर्म खपइ घणा ॥९॥

पालइ ए पालइ ए पंचाचारसिउं ए, चारित चारित निरतिचार कि ।
वृक्ष प्रियंगु तणइ तलइ ए, पामइ ए पामइ ए ज्ञांन उदार कि ॥ पालइ...

मधु मासि शुदि एकादशी दिनि मघा ऋक्ष तणइ समइ,
कृत-छट्ठ स्वामी ज्ञांन पामी कनकपंकजि पद ठवइ ।
सुर असुर किन्नर वर विनिर्मित समवसरण विराजए,
सिंहासन ध्वज छत्र चामर देवदुंदुभि गाजए ॥१०॥

वांणीय वांणीय योजनगांमिनी ए, जिनवर जिनवर करय वखाण कि ।
गणधर शत एक थापीया ए, पूरव पूरव पुण्य प्रमांणि कि ॥ वांणीय...

वांणी सुधारस मधुर त्रिपदी तास प्रभु आपइ तदा,
सिद्धांत विरचइ सुकृत संचइ विमलगुण गणधर मुदा ।
तस तीर्थरक्षक यक्ष **तुंबर** नाम निर्मल जाणि(णी)इ,
संपदा पूरइ पाप चूरइ विबुधवृंद वखाणि(णी)इ ॥११॥

१०. वैशाख ।

सितरुचि सितरुचि सोहइ सुंदरू ए, वाहन वाहन गरुड उदार कि ।
चारु चतुर्भुज जांणि(णी)इ ए, आयुध आयुध कहूंअ विचार कि ॥ सितरुचि...
सोहइ वर-प्रद शक्तिधारी बाहु दक्षण जेहना,
तिम वाम बाहु गदा समन्वित पास-संयुत तेहना ।
तिम देवि कहीइ **महाकाली** कनकरुचि कमलासना,
कर वरद पासिं सहित दक्षण जास जन-विहितावना[११] ॥१२॥
अंकुश अंकुशनइं बीजोरडूं ए, करि धरइ करि धरइ डावे दोइ कि ।
सोइ शासनदेवति सदा ए, सुमतिनइं सुमतिनइं शासनि होइ कि ॥ अंकुश...
श्रीसुमति शासनदेवि सेवी दीइ मनवंछित मुदा,
प्रभु भूत भव्य भविष्य भाखइ विमल केवल संपदा ।
संसार पारावार तारइ दुरित दारइ जिनवरू,
हवइं कहुं परिकर तणी संख्या सुणु भविअण नरवरू ॥१३॥
साधुनी साधुनी जेहनइं संपदा ए, त्रिणि ए त्रिणि ए लाख प्रमांण कि ।
वीस सहस अधिकेरडा ए, गुणमणि गुणमणि केरी खाणि कि ॥ साधुनी...
संपदा साध्वी तणी जेहनइं लाख पांच वखांणीइ,
वली सहस त्रीसे अधिक आगम-मांन ए मनि आंणि(णी)इ ।
तिम सहस एकासी समन्वित लाख बिइ श्रावक वली,
सह सहस सोलस लाख पंचय श्राविका पूगी रली ॥१४॥
भवीअण भवीअण जण प्रतिबोधता ए, जाणीय जाणीय निज निरवांण कि ।
शैल **समेत** समोसर्या ए, सह मुनि सह मुनि सहस प्रमांण कि ॥ भवीअण...
प्रतिबोध देई भविकजननई मास अनशन उच्चरइ,
जिन सकल कर्म क्षय करीनइं सिद्धि मारगि संचरइ ।
मधु बहुल नवमी दिन पुनर्वसु समइ ए मनि आणीइ,
संबंध सुमति जिणंद केरुं साधु साधु वखाणीइ ॥१५॥
कुमर ए कुमर ए पणइ वली अतिक्रमइ ए, पूरव पूरव जस दस लाख कि।
बारस अंग सहित कहुं ए, ओगण ओगणत्रीस ज लाख कि ॥ कुमर ए...
अतिक्रमइ नरपतिपणइ जेहनइं मुनिपणइं हवइं जांणीइ,
एक लाख पूरव बार अंगे न्यून मांन वखांणीइ ।

११. जनकृतरक्षणे ।

च्यालीस पूरव लाख जेहनुं आयु सिद्धांतिइं कहिउं,
त्रिणिसइं धनु तनुमांन तेहनुं विमलमति पुरुषे लहिउं ॥१६॥
सुमति ए सुमति ए जिणेसर गाईउ ए, शुभ मति शुभ मति तणु दातार कि।
सार संसारनुं फल लहिउं ए, पामीउ पामीउ भवजल पार कि ॥ सुमति ए...
गाईउ सुमति जिणंद सुंदर करइ सवि सुख-संपदा,
आनंद-अंकुर-जलद-जिनवर दूरि टालइ आपदा ।
श्रीधर्मसिंह सुसीस वर **मणिसिंह** वांणि वखाणीइ,
श्रीसुमति जिनपति तवन भणतां सयल संपद आणीइ ॥१७॥

॥ इति पण्डितश्रीधर्मसिंहगणिशिष्यविरचिते चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रसङ्ग्रहे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीसुमतिजिनस्तवनं पञ्चमम् ॥

पद्मप्रभ जिन स्तवन

॥ थूलभद्रना एकवीसानुं ढाल ॥

हवइं छठ्ठा रे पद्मप्रभ जिन जाणीइ, मनि आणी रे तास संबंध वखाणीइ ।
कौशांबी रे नगरी सुरनगरी सखी, **धर** राजा रे नारि **सुसीमा** शशिमुखी ॥
शशिमुखिअ सोहइ मन्न मोहइ कला सवि वासिइं वसइ,
निज नाथ साथिइं गुण-सनाथिइं रमइ नित हरखिइं हसइ ।
हिव नवम **ग्रैवेयक** विमानिइं काल-मांनिइं अति घणु,
निज आयु पूरी पाप चूरी जीव **अपराजित** तणु ॥१॥
माघ मासिइं रे सित पखिइं षष्टी दिनिइं, वर चित्रा रे पुण्यपवित्र शुभ मनिइं।
गुणखाणी रे धर राणी उरि अवतरइ, तिणि रयणी रे शशिवयणी निद्रा धरइ ॥
जव धरइ निद्रा सुभग मुद्रा चौद सुपन तदा लहइ,
तव हर्ष आणी मधुर वांणी जई प्रिउनइं सा कहइ ।
पूछीआ पंडित मति-अखंडित ते विचार करइ इसिउ,
त्रैलोक्यनायक सौख्यदायक स्वामि सुत तुम्हे पामसिउ ॥२॥
गजगमनी रे गर्भ वहइ सा सुभमती, सु[भ] महूरति रे साधिक नव मासिइं सती ।
कार्त्तिक वदि रे चित्रा-संयुत द्वादशी, सुत प्रसवइ रे निर्मल जिम राका शशी ॥

शशि-सौम्य पंकज अंक शंकर कोकनद[१२] देहप्रभा,
छप्पन कुमारी कृत्यकारी करइ उच्छव मति-शुभा ।
जिन जन्म जाणी गुंण वखाणी इंद्र परिकर परिवरिउ,
पय सीस नामी स्वामि पामी शृंगि सुरगिरि संचरिउ ॥३॥

सवि वासव रे तास न्हवण करइ तत्र रे, मणिकुंभे रे पूरी अंभ पवित्र रे ।
धरणीधर रे धर निज घरि करइ जंग रे, वर मंगल रे सधवा धवल सुरंग रे ॥

शुभ-रंग-अंग-अनंग-सुंदर अरुण-पंकज-वान ए,
धर नृपति पद्मप्रभ इसिउं सुत नाम दिइ असमान ए ।
सुर कुमर रूपिइं निज सरूपिं स्वामिसिउं रामति करइ,
इम जनक जननी तणुंअ जिनवर बाल-केलिइं मन हरइ ॥४॥

क्रमि क्रमि जिन रे यौवनवय जब अनुसरइ, दोइ साढां रे धनु तनुमान सदा धरइ ।
शशिवयणी रे मृगनयणी बहु सोहवइ, युवतीसिउं रे यौवननुं फल भोगवइ ॥

भोगवइ भूपतिनइं निदेसिइं राज्यभार धुरा धरइ,
अरिवर्ग गंजइ प्रजा रंजइ न्यायमारग अणुसरइ ।
लोकांतिकामर मधुर बंधुर सधर वाणि(णी?) समुच्चरइ,
जय जीव नंद नरिंद-धर-कुल-कमल-दिनकर तुं सिरइ ॥५॥

भवसागर रे नागर नर निस्तारीइ, निज कीरति रे त्रिभुवनि घन विस्तारीइ ।
सुर वांणी रे अमिय समाणी मनि धरी, जिन अविरल रे दान दीइ संवत्सरी ॥

संवत्सरी तव दांन देई ऊर्ज[१३] कृष्ण त्रयोदशी,
नक्षत्र चित्रा तणइ योगिइं स्वामि निज मनि उल्हसी ।
जे नामि **निर्वृतिकरा** शि[बि]का-रूढ पुर-मारगि चलइ,
पुरहूत-निर्मित विविध उत्सव धवल मंगल मन मिलइ ॥६॥

जिन आवइ रे **सहसरसाल** वनंतरिइं, प्रभु साथिइं रे सहस नराधिप संचरइ ।
गतदूषण रे सयल विभूषण परिहरइ, तिणि अवसरि रे छट्ठ तणु तप मनि धरइ ॥

मनि धरीअ समता त्यजीअ ममता पंच मौष्टिक शिरि करइ,
नृप सहस साथिइं गुण-सनाथिइं चरणदंडक उच्चरइ ।
सुर असुर किन्नर नर विद्याधर स्वामि पदपंकज नमइ,
निज काज साधइ सुजस वाधइ महीमंडलि मुनि गमइ ॥७॥

---

१२. रक्तकमल । १३. कार्तिक ।

ब्रह्मस्थल रे पुर निरुपम वखाणि(णी)इ, तिहां राजा रे **सोमदेव** मनि आणीइ।
तस मंदिरि रे पारणुं परमान्निइं करइ, तेहनु जस रे त्रिभुवनमांहिइं विस्तरइ ॥
विस्तरइ तस जस सरस समता स्वामि ममता मनि गणइ,
व्रत पंच पालइ दोष टालइ सकल मन निर्मलपणइ ।
इम करण शुद्धिइं विमल बुद्धिइं मास छय वुल्या जिसिइं,
तप छट्ठ करतां कर्म जरतां ऊपनुं केवल तिसिइं ॥८॥
मधु राका रे चित्रा चारु एणइ समइ, वट हेठलिं रे उत्सव सुरवर मनि गमइ।
तिहां सुंदर रे समवसरण जन मन हरइ, जिन योजन रे वाणी वखाण समुच्चरइ ॥
उच्चरइ स्वामी सुकृतकामी बोध बहु जन ऊपजइ,
शत एक सत्तोतर समन्वित स्वामि गणधर संपजइ ।
त्रिपदी प्रकासइ भाव भासइ अंग अभ्यासइ वली,
भवि लोक तारइ दुरित वारइ स्वामि सारइ मनरुली ॥९॥
सुर शासन रे नाम **कुसुम** अभिराम रे, मृगवाहन रे नीलवरण तनुधाम रे ।
फल अभयद रे दक्षण करि जस दोइ रे, नकुलान्वित रे साक्षसूत्र वाम जोइ रे ॥
तिम स्वामि शासनसुरीय सोहइ **अच्युता** उचित-प्रदा,
श्यामांगवर्ण-विराजिता नरवाहना वंदुं मुदा ।
वर वरद अंकुश सहित सुंदर दोइ दक्षण भुज धरइ,
बीजपूर पाश प्रसार शोभित वाम कर मंगल करइ ॥१०॥
जस मुनिवर रे लाख त्रिणि मनि आणीइ, अधिकेरा रे सहस त्रीस वलि जाणीइ।
यतिनीजन रे च्यारि लाख ऊपरि कही, अधिकेरी रे वीस सहस वंदुं सही ॥
वंदुं सही बिइ लाख श्रावक सहस छ्युत्तिरि जाणीइ,
श्राविका शोभन लाख पंचय पांच सहस वखाणीइ ।
निर्वाण समय विचार जाणी मुक्तिमानिनि मनि धरी,
स्वामी **समेद**(त)गिरिंद आवइ मास अनशन उच्चरी ॥११॥
मारगशर रे बहुल एकादशी जाणीइ, तव चित्रा रे चारु नक्षत्र वखाणीइ ।
प्रभु साथिइं रे आठ सवा(त्रि-?)सइं मुनि तदा, जिन पाम्या रे अजर अमरपद संपदा।
संपदा सुंदर सुगुणमंदिर कुमरपदवी भोगवइ,
पूर्वांग सोलस सहिस साढां सात पूरव जोगवइ ।

प्रभु राज पालइ दुरित डालइ साढ एकवीस लाख ए,
पूर्वांग सोले ऊन एक लख पूर्व व्रतधर भाख ए ॥१२॥
पद्मप्रभ रे जिन सर्वायु वखाणीइ, त्रीस पूरव रे लाख विशेषिइं जांणीइ ।
प्रभु केरुं रे चारु चरित मनि आणीइ, नित भणीइ रे सरस सुधारस वांणीइ ॥
वांणी सुधारस सदृश तेहनी जेह जिनवर गुण थुणइ,
आनंद आणी जन वखाणी अंगि ऊलट अति घणइ ।
श्रीधर्मसिंह गणि शिष्य सुंदर चरणपंकज मनि धरी,
मिइं भगति भाविइं निज सभाविइं थुणिउं पद्मप्रभ चरी ॥१३॥

॥ इति पण्डितश्रीधर्मसिंहगणिशिष्यविरचिते चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रसङ्ग्रहे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीपद्मप्रभस्तवनं षष्टम् ॥६॥

सुपार्श्वनाथ स्तवन

[चंद्रायणानी]

प्रभु पयपंकय प्रणमीइ रे, निरुपम महिमनिवासो ।
मानवभव फल लीजीइ रे, सेवी स्वामि सुपासो ॥
सेवी स्वामि सुपास जिणेसर, नयर **वाराणसी** जाणे सुर-पुर ।
सुप्रतिष्ठ राजा तिहां जाणउं(णुं), **महिला पृथिवी** तास वखाणुं ॥१॥
जी सुपास जिनजी रे,
जय जय जगदाधार जिणंद वखाणीइ रे, दूतर पार ऊतार दयापर जाणीइ रे (द्रूपद) ।
हिव छट्ठइ **ग्रैवेयकिइं** रे, **नंदिषेण** नृप जीवो ।
स्वर्ग तणां सुख भोगवइ रे, पूरव पुण्य अतीवो ॥
पूरव पुण्य अतीव चिवीनइं, वसइ उदरि देवी पृथिवीनइं ।
भाद्र बहुल अष्टमि(मी?) अनुराधा, देवी गर्भ वहइ निरबाधा ॥२॥ जी सुपास...
सूती सुखि रयणी समइ रे, देखइ सुपन उदारो ।
पूछइ पतिनइं पति कहइ रे, तीर्थंकर अवतारो ॥
तीर्थंकर अवतार ज जाणी, हीयडइ हरख न माइ राणी ।
गीत गान नाटक नव नव परि, भाव-भेद विरचइ सुभगा सिरि ॥३॥ जी सुपास...

एक फणु पंचय फणु रे, अहवा नव फण नागो ।
तास शय्या ऊपरि सूइ रे, सुहणइ देवि सुरागो ॥
सुहणुं एक इसी परि देखइ, वृद्धि पामतइ गर्भि सुलेखइ ।
ज्येष्ठ शुद्ध बारसि सविशाखा, सुत प्रसवइ माता शुचिशाखा ॥४॥ जी सुपास...
स्वस्तिक लांछन जाणि(णी)इ रे, वन्न सुवन्न-सवन्नो ।
अवधिज्ञानि आवइ मिली रे, दिसिकुमरी छप्पन्नो ॥
दिसिकुमरी छप्पन्न ते आवइ, सूति करी जिनना गुण गावइ ।
इंद्र तणुं आसन तव कंपइ, विनय करी **शक्रस्तव** जंपइ ॥५॥ जी सुपास...
ततखिणि सुरपति संचरइ रे, सुर-परिवार समेतो ।
जिन जिनजननीनइं नमइ रे, गुण पभणइ एकांतो ॥
गुण भणतु आवइ शिशु लेई, सुरगिरि-सिरि सवि इंद्र मिलेई ।
दुग्धोदधि जल कुंभ भरेई, जिन मस्तकि अभिषेक करेई ॥६॥ जी सुपास...
मात पासि शिशुनइं धरी रे, धन वस्सी सुररायो ।
अंगूठइ अमृत ठवी रे, हरि **नंदीश्वरि** जायो ॥
नंदीश्वरि यात्रा नीपाई, निज थानकि जाई सुह पाई ।
निज घरि नरपति संपति खरचइ, सुत केरु जन्मोच्छव विरचइ ॥७॥ जी सुपास...
गर्भिथिकइ माता तणां रे, पासा हूआ अभिरामो ।
बालकनां पणि अति भलां रे, तिणि कारणि सुत(भ?) नामो ॥
तिणि कारणि सुत नाम ज थापइ, कुमर सुपास इसिउं जगि व्यापइ ।
समरंतां जे सवि सुख आवइ, कर्म तणां बंधन बहु कापइ ॥८॥ जी सुपास...
ऊजल पखि यम चंद्रमा रे, दिनि दिनि वाधइ देवो ।
बालकरूप करी नवां रे, सुर सारइ तस सेवो ॥
सयल सुरासुर सेवा सारइ, क्रमि क्रमि जिन यौवनवय धारइ ।
बिसइं धनुष उन्नत तनु सोहइ, सुभगपणइ मानिनि-मन मोहइ ॥९॥ जी सुपास...
मात पिता आदेशथी रे, जिन विरचइ उपयामो ।
भोग्यकर्म प्रभु भोगवइ रे, पूरइ वंछित कामो ॥
पूरइ वंछित काम नरेसर, राजभार सुंपइ परमेसर ।
पालइ राज प्रजा मन मोहइ, देव-पुरंदरनी परि सोहइ ॥१०॥ जी सुपास...

भावं लही आवइ हवइ रे, **ब्रह्मलोक**थी देवो ।
दीक्षासमय जणावता रे, करइ स्वामिनी सेवो ॥
सेव करइ शुभ वचन प्रकासइ, संवच्छर वितरण जिन भासइ ।
अविरल दान देई जिनराजा, दीक्षा कारणि करइ दिवाजा ॥११॥ **जी** सुपास...
ततखिणी चुविह सुर मिली रे, स्वामि करइ अभिषेको ।
शिबिकारूढ **मनोहरा** रे, व्रत लेवा सुविवेको ॥
सहसरसाल वनंतरि आवइ, लोच पंच मौष्टिक मनि भावइ ।
सुरदुंदुंभि मधुर ध्वनि वाजइ, तिणि नादिइं गयणंगण गाजइ ॥१२॥ जी सुपास...
छट्ठ धरी जिनवर करइ रे, व्रतदंडक उच्चारो ।
सहस राइ साथिइं धरइ रे, दुर्धर संयमभारो ॥
संयमभार धरइ निर्बाधा, द्येष्ट शुद्ध तेरसि अनुराधा ।
पाडलि पुरवर केरु भूपति, इंद्र समान **महेंद्र** महामति ॥१३॥ जी सुपास...
तेह सदनि करइ पारणउं रे, परमान्निइं जिनरायो ।
हर्ष धरी राजा रचइ रे, रत्नपीठ तिणि ठायो ॥
रत्न वृष्टि सुरवर तिहां विरचइ, चंदनि चरणकमल जिन चरचइ ।
पंचाचार चतुर परिपालइ, ध्यानजलिइं निज पंक पखालइ ॥१४॥ जी सुपास...
स्वामिनइं संयम पालतां रे, वुल्या जब नव मासो ।
वृक्ष शरीष तणइ तलइ रे, तव लहइ केवल-वासो ॥
केवल-वास लहइ फागुण वदि, छट्ठि विशाखा छट्ठ धरइ हृदि ।
केवल-महिम करी सुरराया, समोसरणि वंदइ जिनपाया ॥१५॥ जी सुपास...
मात सपन मनमांहइं धरी रे, इंद्र करइ एक कामो ।
छत्र परिइं शिर ऊपरिइं रे, नागरूप अभिरामो ॥
नागरूप अभिराम निरंतर, एक पंच नव फण घण विस्तर ।
द्योतिरूप मणिमंडल राजइ, सुरदुंदुभि गयणंगणि गाजइ ॥१६॥ जी सुपास...
वांणी योजनगामिनी रे, दिइ देशन जिनरायो ।
निसुणइ बारइ पर्षदा रे, हीयडइ हर्ष न मायो ॥
हीयडइ हर्ष न माइ निरंतर, बोध लहइ भवि लोक अनंतर ।
पंचाणुं गणधरपद थापइ, कृपा करी त्रिपदी तस आपइ ॥१७॥ जी सुपास...

ततखिणि गुणि गणधर रचइ रे, पूरव अंग अग्यारो ।
महीमंडलि विहरइ वली रे, जिनवर दुत्तर-तारो ॥
दुत्तर पार ऊतारइ स्वामी, शासनयक्ष कहुं शिर नामी ।
मातंग नाम मतंगजवाहन, नीलवरण कर च्यारि ससाधन ॥१८॥ जी सुपास...
बिल्व पाशधर जाणि(णी)इ रे, दक्षण दोए कर जासो ।
नकुल अनइं अंकुश धरइ रे, वाम युगल कर तासो ॥
वाम युगल कर जास विराजइ, तिम तस शासनि देवी छाजइ ।
श्यामा नाम मतंगजगामिनि, देहकांति झलकइ सौदामिनि ॥१९॥ जी सुपास...
वरद अक्षसूत्रिइं करी रे, दक्षण दोए कर सोहइ ।
अभयदान शूलिइं करी रे, वाम बाहु मन मोहइ ॥
मन मोहइ जिन केरु परिकर, त्रिणि लाख हूआ जस मुनिवर ।
च्यारि लाख मुनिनीजन जाणुं, त्रीस सहिस अधिकी वखाणुं ॥२०॥ जी सुपास...
सहस सत्तावन लाख बिइ रे, श्रावक समकितधारी ।
पांच लाख वलि श्राविका रे, सात सहस विण सारी ॥
सारी वात सुणु हवइं स्वामी, मोक्षकाल जाणी शुभकामी ।
शैल **समेतशिखरि** तव आवइ, सहस-अर्द्ध मुनि साथिइं लावइ ॥२१॥ जी सुपास...
फागुण वदि *शुभ सप्तमी रे, निर्मल मूल नक्षत्रो ।
मास दिवस अनशन धरी रे, पामइ धाम पवित्रो ॥
पामइ धाम पवित्र जिणेसर, विरचइ उत्सव सुर-असुरेसर ।
भव्य जीव बहुनइं भव तारी, शाश्वतपद पामिउं उपगारी ॥२२॥ जी सुपास...
लाख पंच पूरव कह्यां रे, कुमरपणइ जिनराजो ।
वीस पूर्वांगे आगलां रे, चौद लाख तस राजो ॥
चौद लाख पूरव प्रतिपाली, राज पछइ दीक्षा अजूआली ।
वीसे अंगे ऊणुं जाणुं, एक लाख पूरव वक्खा(खा)णुं ॥२३॥ जी सुपास...
वीस लाख पूरव हवइ रे, जिन सर्वायु सुचंगो ।
ते उत्तम जन जाणि(णी)इ रे, जेहनइं जिनसिउं रंगो ॥

---

* अहीं नवमी शुभा रे- ऐ पाठ थवो जोईए ।

रंग धरी जिनना गुण गाउं, इह भवि पर-भवि जिम सुख पाउं ।
धर्मसिंह गुरु सीस पयंपइ, जिन गायु आपइ सुह-संपय ॥२४॥ जी सुपास...

॥ इति पण्डितश्रीधर्मसिंहगणिशिष्य-पं. रत्नसिंहगणिविरचिते चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रसङ्ग्रहे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीसुपार्श्वजिनस्तोत्रं सप्तमम् ॥७॥

चंद्रप्रभजिन स्तवन

॥ साहेलडीनुं ढाल ॥

चंद्रप्रभ जिन गाईइ साहेलडी रे, थाईइ निर्मल अंग गुणगेलडी रे,
नयरि भली **चंद्रानना** साहेलडी रे, **महसेन** भूप अभंग गुणगेलडी रे ।
तास सुंदरी लक्ष्मणा साहेलडी रे, लक्षण गुण तणी खाणि(णी?) गुणगेलडी रे,
सती-श(शि)रोमणि सोहती साहेलडी रे, बोलइ मधुरी वांणि(णी?) गुणगेलडी रे ॥१॥
वैजयंत सुरलोकथी साहेलडी रे, **पदम** नराधिप जीव गुणगेलडी रे,
देवी कूखिइं अवतरइ साहेलडी रे, पूरव पुण्य अतीव गुणगेलडी रे ।
शशिवदनी सा निशिसमइ साहेलडी रे, पामइ सपन पवित्र गुणगेलडी रे,
चैत्र बहुल पंचमि समइ साहेलडी रे, अनुराधा नक्षत्र गुणगेलडी रे ॥२॥
सुपन पाठक तेडावीआ साहेलडी रे, ते कहइ सपन विचार गुणगेलडी रे,
तीर्थंकर सुत पामसिउ साहेलडी रे, जिनवर जगदाधार गुणगेलडी रे ।
सुणी वयण मनि हरखती साहेलडी रे, गर्भ धरइ अभिराम गुणगेलडी रे,
रत्नभूमि जिम रत्न धरइ साहेलडी रे, सीझइ वंछित काम गुणगेलडी रे ॥३॥
पोष बहुल बारसि समइ साहेलडी रे, अनुराधा नक्षत्र गुणवेलडी रे,
राका शशि यम सा सती साहेलडी रे, प्रसवइ पुत्र पवित्र गुणगेलडी रे ।
शशिलंछन सोहइ सदा साहेलडी रे, देहवरण शशिकंत गुणगेलडी रे,
आवइ छपन कुमारिका साहेलडी रे, सूति करइ एकांत गुणगेलडी रे ॥४॥
आसन कंपिइ इंद्र तिहां साहेलडी रे, आवइ सुरवरवृंद गुणगेलडी रे,
जिन जिनजननीनइं नमी साहेलडी रे, अधिक धरइ आणंद गुणगेलडी रे ।
पंच रूप प्रभुनइं लेई साहेलडी रे, आवइ सुरगिरिशृंगि गुणगेलडी रे,
सयल सुरासुर तिहां मिलइ साहेलडी रे, निज मन केरइ रंगि गुणगेलडी रे ॥५॥
सोविनमय कलशे करी साहेलडी रे, स्वामि करइ अभिषेक गुणगेलडी रे,

गीत गान नाटक करी साहेलडी रे, हरख धरइ अतिरेक गुणगेलडी रे ।
माता पिता पासि ठवी करी साहेलडी रे, सुर जाइ सुरठामि गुणगेलडी रे,
राजा पणि उत्सव करइ साहेलडी रे, सुत जनमिइं निज धामि गुणगेलडी रे ॥६॥
चंद्रकिरण पीवा तणु साहेलडी रे, दोहद देविनइं जाणि गुणगेलडी रे,
ते प्रपंच करि पूरीउ साहेलडी रे, निज मति तणइ विनाणि गुणगेलडी रे।
तिणि कारणि सुतनुं दीइ साहेलडी रे, चंद्रप्रभ अभिधान गुणगेलडी रे,
चंद्रकिरण परि ऊजला साहेलडी रे, गुणगण जस असमान गुणगेलडी रे ॥७॥
दिनिदिनि वाधइ दीपतु साहेलडी रे, सित पखि जिम सित-धाम गुणगेलडी रे,
यौवनवय जिन पामीउ साहेलडी रे, रतिपति जिम अभिराम गुणगेलडी रे ।
पाणिग्रहण करावीउ साहेलडी रे, मात पिता मनि रंग गुणगेलडी रे,
भोग्यकर्म मनि भावतु साहेलडी रे, भोगवइ भोग अभंग गुणगेलडी रे ॥८॥
उन्नत तनु सोहइ सदा साहेलडी रे, डुढसु धनुष प्रमाण गुणगेलडी रे,
रूप अनोपम अभिनवुं साहेलडी रे, कवि किम करय वखाण गुणगेलडी रे।
पितादेश पामी करी साहेलडी रे, राज धरइ जिनराज गुणगेलडी रे,
न्याय करी पालइ प्रजा साहेलडी रे, सारइ वंछित काज गुणगेलडी रे ॥९॥
लोकांतिक सुर आवीआ साहेलडी रे, जाणी जिन मन भाव गुणगेलडी रे,
राज रिद्धि तृण परि त्यजइ साहेलडी रे, स्वामी सरल सहाव गुणगेलडी रे।
जलधर परि वरसइ वली साहेलडी रे, स्वामी जल-धन-धार गुणगेलडी रे,
शिबिका नाम **मनोरमा** साहेलडी रे, बइसइ जगदाधार गुणगेलडी रे ॥१०॥
पोष बहुल तेरसि तिथिइं साहेलडी रे, मैत्र नक्षत्र सहेत गुणगेलडी रे,
सहसरसाल वनंतरिइं साहेलडी रे, सहस नरेस समेत गुणगेलडी रे ।
दीक्षादंडक उच्चरइ साहेलडी रे, पंच मौष्टिक करी लोच गुणगेलडी रे,
महीमंडलि विहरइ वली साहेलडी रे, मनि धरइ शुभ आलोच गुणगेलडी रे ॥११॥
पद्मखंडपुर राजीउ साहेलडी रे, **सोमदत्त** भूपति नाम गुणगेलडी रे,
छट्ठ तणुं तिहां पारणउं साहेलडी रे, परमान्निइं करइ ताम गुणगेलडी रे ।
सुरदुंदुभि वाजइ वली साहेलडी रे, हुइ कनकनी वृष्टि गुणगेलडी रे,
जिन वसुधा विहरइ वली साहेलडी रे, शत्रु-मित्र-समदृष्टि गुणगेलडी रे ॥१२॥
त्रिणि मास छद्मस्तपणइ साहेलडी रे, समय गमइ भगवान गुणगेलडी रे,
छट्ठ तणुं तप जिन करइ साहेलडी रे, शुक्लध्यान समान गुणगेलडी रे ।

नागद्रुम केरइ तलइ साहेलडी रे, पामइ केवलज्ञान गुणगेलडी रे,
फागुण शुदि तिथि सप्तमी साहेलडी रे, मैत्र नक्षत्र असमान गुणगेलडी रे ॥१३॥
समवसरण सुरवर रचइ साहेलडी रे, देशन दिइ जिननाथ गुणगेलडी रे,
सकल कर्मनु क्षय करइ साहेलडी रे, निसुणइ भवियण साथ गुणगेलडी रे।
त्राणुं गणधर थापीआ साहेलडी रे, त्रिपदी करइ प्रसाद गुणगेलडी रे,
तव गणधर विरचइ वली साहेलडी रे, ततखिणि ते दृष्टिवाद[१४] गुणगेलडी रे ॥१४॥
शासनसुर सोहइ सदा साहेलडी रे, जास **विजय** अभिधान गुणगेलडी रे,
राजहंस वाहन सही साहेलडी रे, नीलवरण तनुवान गुणगेलडी रे ।
डावइ मुद्गर दीपतु साहेलडी रे, करि जिमणइ जस चक्र गुणगेलडी रे,
शासनदेवी सोहती साहेलडी रे, **भ्रुकुटी** नाम अवक्र गुणगेलडी रे ॥१५॥
पीतवरण तनु जेहनुं साहेलडी रे, वाहन जास बिडाल गुणगेलडी रे,
दक्षण दोए भुजि जे धरइ साहेलडी रे, मुद्गर खड्ग विशाल गुणगेलडी रे।
डावे बिहु भुजि जेहनइ साहेलडी रे, फलक परशु अभिराम गुणगेलडी रे,
चंद्रप्रभ जिनवर तणी साहेलडी रे, सेव करइ शुभ-धाम गुणगेलडी रे ॥१६॥
प्रभु-परिवार कहुं हवइ साहेलडी रे, साढ़ बिइ लाख मुनिंद गुणगेलडी रे,
असी सहस अधिकेरडा साहेलडी रे, लाख त्रिणि मुनिनीवृंद गुणगेलडी रे ।
श्रावक साढ बिलाख वली साहेलडी रे, श्राविका पंचय लाख गुणगेलडी रे,
सूधूं समकित मनि धरइ साहेलडी रे, पालइ जिननी भाख गुणगेलडी रे ॥१७॥
मुगतिसमय जाणी करी साहेलडी रे, आवइ शैल **समेत** गुणगेलडी रे,
मास दिवस अनशन धरइ साहेलडी रे, सहस मुणिंद समेत गुणगेलडी रे ।
भाद्र बहुल सप्तमि(मी?) दिनिइं साहेलडी रे, श्रवण नक्षत्र जिणंद गुणगेलडी रे,
सहस मुणीसर परिवरिउ साहेलडी रे, पामइ परमानंद गुणगेलडी रे ॥१८॥
कुमरपणइ जेहनइं हूआ साहेलडी रे, पूरव साढ बिइ लाख गुणगेलडी रे,
साढ छ लाख ते जाणीइ साहेलडी रे, नृपतिपणइ जिनभाख गुणगेलडी रे ।
तेहमांहिं अधिका वली साहेलडी रे, चुवीस पूरव अंग गुणगेलडी रे,
चुवीसे अंगे ऊणुं साहेलडी रे, व्रत एक लाख सुचंग गुणगेलडी रे ॥१९॥
आयु अपूरव जाणीइ साहेलडी रे, पूरव जस दस लाख गुणगेलडी (तु) रे,
ते धन दिन वेला घडी साहेलडी रे, मास वरस वर पाख गुणगेलडी (तु) रे।

१४. द्वादशांगी ।

जिहां चंद्रप्रभ जिन तणुं साहेलडी रे, धरीइ ध्यान-विधान गुणगेलडी (तु)रे,
यम मनवंछित पामीइ साहेलडी रे, लहीइ नवय निधान गुणगेलडी (तु)रे ॥२०॥
श्रीचंद्रप्रभस्वामिनुं साहेलडी रे, बोलिउं मूल चरित्र गुणगेलडी तु(रे),
भणइ गुणइ जे सांभलइ साहेलडी रे, ते लहइ पुण्य पवित्र गुणगेलडी तु(रे)।
धर्मसिंह पंडित तणु साहेलडी रे, पांमी वचनविलास गुणगेलडी (तु)रे,
चंद्रप्रभ जिन गाईउ साहेलडी रे, पूरइ भवियण आस गुणगेलडी तु(रे) ॥२१॥

॥ इति पण्डितश्रीधर्मसिंहगणिशिष्यविरचिते श्रीचतुर्विंशतिजिनस्तोत्रसङ्ग्रहे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीचन्द्रप्रभस्वामिस्तवनम् अष्टमम् ॥८॥

सुविधिनाथ स्तवन

॥ राग-मल्हार ॥

एक अणुसरि अरिहंत देव कुदेव न याचीइ रे, कुदेव न याचीइ रे, - ए ढाल ॥

हिवइं नुमा **सुविधि** जिणंद सुरिंद सेवइ सदा रे*, सुरिंद सेवइ सदा रे,
तेहनुं मूल चरित्र पवित्र कहूं मुदा रे, पवित्र कहूं मुदा रे।
नयरी **काकंदी** राय **सुग्रीव** वखाणीइ रे, सुग्रीव वखाणीइ रे,
रामा तस अभिराम रामा जगि जाणीइ रे, रामा जगि जाणीइ रे ॥१॥
वैजयंत सुरसद्म तणां सुख भोगवी रे, तणां...,
महापद्म नृप जीव च्यवइ अतिशयजवी रे, च्यवइ... ।
फागुण वदि तिथि सप्तमि(मी?) मूल वखाणीइ रे, मूल...,
पूरव पुण्य-प्रचार तणुं फल जाणीइ रे, तणुं... ॥२॥
रामा उरि अवतार धरइ एणइ समइ रे, धरइ...,
सूती सयल सपन्न लही मनसिउं रमइ रे, लही... ।
पूछइ पदमिनि प्रेम धरी प्रिउनइ तदा रे, धरी...,
निसुणी तव नरनाथ वचन्न वदइ मुदा रे, वचन्न... ॥३॥

---

* अहीं हस्तप्रतमां संपूर्ण पद्यनी द्विरुक्ति माटे 'रे'नी पासे २(बे)नो आंकडो बधी ज गाथामां लखायो छे। परंतु अमारा ध्यान मुजब अर्ध चरणनी ज आवा पद्योमां पुनरुक्ति थती होई अमे सम्पादनमां ते ज पद्धति वापरी अर्द्धचरण ज बधे पुनरुक्त कर्युं छे।

होसिइ पुत्र पवित्र सुणी वाणी सती रे, सुणी....,
गर्भ वहइ मनरंगि विशुद्ध महामती रे रे, विशुद्ध.... ।
मार्गशीर्ष वर मास सितेतर पंचमी रे, सितेतर...,
सुत प्रसवइ सा मूल समइ हृदयंगमी रे, समइ... ॥४॥
शुभ्र वर्ण मकरध्वज लक्षण गुण धरइ रे, लक्षण ...,
दिसिकुमरी छप्पन्न आवी उत्सव करइ रे, आवी... ।
आसन कंपिइं इंद्र आवी जिननइं नमइ रे, आवी...,
पंच रूप करी मेरुशिखरि हरषिइं गमइ रे, शिखरि... ॥५॥
खीरजलधि जल पूर कनक कलशे करी रे, कनक...,
जिन मस्तकि अभिषेक करइ हरषिइं हरी रे, करइ... ।
थापी जननी पासि जिनेश महामती रे, जिनेश...,
निज निज थानकि जाइ सुरावृत सुरपती रे, सुरा... ॥६॥
नरपति निज घरि उत्सव विविध विधिइं करइ रे, विविध...,
मग्गण-जण घण दान देई दारिद हरइ रे, देई...
गुणगण गीत रसाल धवल मंगल करइ रे, धवल...,
घरि घरि वर वाजित्र चतुर्विध[१५] विस्तरइ रे, चतुर्विध... ॥७॥
गर्भथिकइ एणइ एहनी जननीइं जाणीउ रे, जननीइं....,
धर्माधर्म तणउ विधि शुद्ध वखाणीउ रे, शुद्ध...
कुसुम तणी परि दंत मनोहर मनि रुली रे, मनोहर...,
सुविधि अनइं **पुष्पदंत** ए नाम दीधुं वली रे, ए नाम... ॥८॥
सुरतरु परि वाधइ शिशु यौवनवय धरइ रे, यौवन...,
रूप कला अधिकाधिक तिम तिम अणुसरइ रे, तिम ... ।
मात-पिता आदेश लही तरुणी वरइ रे, लही...,
ईहा[१६] विण पण गुणनिधि राज्य अंगीकरइ रे, नव... ॥९॥
तपन परिइं परताप दहुं दिसि संचरइ रे, दहुं...,
भाव लही **लोकांतिक** वांणी उच्चरइ रे, वांणी... ।

१५. तत-घन-शुषिरा-ऽनद्धभेदाच्चतुर्विधं वाद्यम् । तत्र ततं वीणाप्रभृतिकं, तालप्रभृतिकं घनं, वंशादिकं तु शुषिरं, आनद्धं उ(मु)रजादिकमिति ।

१६. वांछा

जय जय जगदाधार महाव्रत लीजीइ रे, महाव्रत...,
भवियणनइं प्रतिबोध परम-पद दीजीइ रे, परम... ॥१०॥
निसुणी वाणि दीइ जिन दान संवत्सरी रे, दान...,
अविरलतर तब त्रिभुवनि कीरति विस्तरी रे, कीरति... ।
शिबिका **सूरप्रभा** प्रभु बइसी संचरइ रे, बइसी...,
सहसरसाल वनंतरि दंडक उच्चरइ रे, दंडक... ॥११॥
मारग वदि षष्ठी दिन मूल एणइ समइ रे, मूल...,
पंच मौष्टिक करइ लोच सहस नर मन रमइ रे, सहस... ।
महीअलि करय विहार कि छट्ठनइ पारणइ रे, कि छट्ठ...,
आवइ **स्वेत** नगरि प्रभु **पुष्प** नृप बारणइ रे, पुष्प... ॥१२॥
तिहां विरचइ परमेश्वर खीरिइं पारणुं रे, खीरिइं...,
पुण्य तणुं ते कारण पाप-निवारणुं रे, पाप... ।
सुर वरसइ धन सार विविध उत्सव करइ रे, विविध...,
तिहांथी जगदाधार विहार-क्रम करइ रे, विहार... ॥१३॥
निरतीचार चरित्र पवित्रपणइ वरइ रे, पवित्र...,
च्यार मास छदमस्थपणइ प्रभु संचरइ रे, प्रभु... ।
कार्तिक शुदि त्रि(तृ)तीया दिन मूल एणइ समइ रे, मूल...,
छट्ठ करइ मालूर-तलइ केवल रमइ रे, तलइ... ॥१४॥
समवसरण सुर विरचइ चरचइ भावसिउं रे, चरचइ...,
योजन वाणि वखाण सुणी मन उल्लसिउं रे, सुणी...
बोध लहइ बहु मानव दानव देवता रे, बोध...
गुण गाइ जिनचरण-सरोरुह सेवता रे, सरोरुह... ॥१५॥
गणधरपद अठ्यासी थाप्या जिनवरिइं रे, थाप्या...,
त्रिपदी पामी अंग रच्यां तव गणधरिइं रे, रच्या... ।
तीरथरक्षक यक्ष **अजित** जगि जाणीइ रे, अझित...,
स्वेत देहरुचि वाहन कूर्म वखाणीइ रे, कूर्म... ॥१६॥
मातुलिंग अक्षसूत्र दक्षिण करि जे धरइ रे, दक्षिण...,
नकुल कुंत अति सुंदर दोइ वामिइं वरइ रे, दोइ... ।

शासनदेवी सार **सुतारा** मन हरइ रे, सुतारा...,
वाहन वृषभ विशाल सितच्छवि सुख करइ रे, सित... ॥१७॥
अक्षसूत्र वर दायक दक्षण जेहना रे, दक्षण...,
कलश अंकुश-संजुत्त वाम कर तेहना रे, वाम... ।
जिन परिकर मुनिवर दोए लाख वखाणीइ रे, दोए...,
वीस सहस एक लाख ज यतिनी जाणीइ रे, यतिनी... ॥१८॥
ओगणत्रीस सहस दोए लाख श्रावक वली रे, लाख...,
सहस बहुत्तिरि च्यारि लाख कि श्राविका संवि मिली रे, श्राविका... ।
अंतरंग रागादि रिपुनइं ते नडइ रे, रिपु...,
जाणी निज निर्वाण **सम्मेतशिखरि** चडइ रे, सम्मेत... ॥१९॥
मास एक अनशन मुनि-सहससिउं अणुसरइ रे, सहस...,
महानंद-पद पामीय भवसायर तरइ रे, भव... ।
भाद्र कृष्ण नवमी तिथि मूल एणइ समइ रे, मूल...,
साथिइं सहस मुनीवर स्वामि सिद्धिइं गमइ रे, स्वामि... ॥२०॥
कुमरपणइ पूरव लाख अर्द्ध वखाणीइ रे, अर्द्ध...,
अंग अट्ठावीस-संयुत राज्य जस जाणीइ रे, राज्य... ।
न्यून अट्ठावीस अंग पूरव लख व्रत वली रे, पूरव...
पूरव जस दोए लाख सर्वायु कहइ केवली रे, सर्वायु... ॥२१॥
भणइ गुणइ बहु भावि भविक जे सांभलइ रे, भविक...,
पामइ पुण्य-प्रकास दुरित दूरिइं पलइ रे, दुरित...
धर्मसिंह गुरुराय पसाय पामी करी रे, पसाय...
थुणिउं सुविधि जिणंद सयल संपद वरी रे, सयल... ॥२२॥

*॥ इति पण्डितश्री**धर्मसिंह**गणिशिष्य-रत्न**सिंह**गणिविरचिते श्रीचतुर्विंशतिजिनस्तोत्रसङ्ग्रहे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीसुविधिजिन स्तवनं नवमम् ॥९॥*

शीतलनाथ स्तवन

॥ राग - केदार गुडी ॥ देस सुरठ द्वारापुरी - ए ढाल ॥

हवइ **शीतल** जिन गुण थुणउं, संपति सयल आवास रे ।
तास संबंध भाविइं भणउं, जिम हुइ पुण्य-प्रकास रे ॥
जी रे जी रे शीतल जगि जयु, भयु सफल संसार रे ।
प्रभु पदपंकज जु ग्रहि, उपायु भवजल पार रे ॥१॥ जी रे... (द्रुवपद)
भद्दिलपुर सुरपुर समुं, तिहां हूआ **दृढरथ** भूप रे ।
हरि घरि जिम रंभा रमइ, **नंदा** अधिक सुरूप रे ॥२॥ जी रे...
सुर **प्राणत** सुरलोकथी, **पद्मोत्तर** नृप जीव रे ।
आयु सकल सुख भोगवी, पूरी पुण्य अतीव रे ॥३॥ जी रे...
राध बहुल षष्ठी दिनिइं, पूर्वाषाढ नक्षत्र रे ।
नंदा कूखिइं अवतरइ, पूरव पुण्य-पवित्र रे ॥४॥ जी रे...
पुढी निशि निद्रारसिइं, सुपन लहइ दस च्यार रे ।
पूछइ पतिनइं पति कहइ, तीर्थंकर अवतार रे ॥५॥ जी रे...
माघ बहुल बारसि दिनिइं, पूर्वाषाढ नक्षत्र रे ।
श्रीवत्स लंछन सोहतु, सोविनवन्न विचित्र रे ॥६॥ जी रे...
नंदा सुत प्रसवइ सती, लक्षण गुण अभिराम रे ।
आवइ अवधिज्ञानथी, छपन कुमारी ताम रे ॥७॥ जी रे...
विरचइ त्रिणि केलीहरां, जिन जिनजननीनइं तत्र रे ।
न्हवण उत्सव करइ भावसिउं, गाइ गीत विचित्र रे ॥८॥ जी रे...
आसन कंपिइं जाणी करी, हरख धरी पुरहूत रे ।
प्रभु प्रभु-जननीनइं नमइ, सुर परिकर-संजूत रे ॥९॥ जी रे...
सुरपति पंच रूपे करी, ल्यावइ सुरगिरिशृंगि रे ।
अवर पुरंदर तिहां मिलइ, प्रणमइं प्रभु मनरंगि रे ॥१०॥ जी रे...
मृन्मणि रजत सुवर्णना, आणी कलश अनेक रे ।
खीरजलधि जल पूरीआ, जिननइं करइ अभिषेक रे ॥११॥ जी रे...
नाटक सुर विरचइ तिहां, गाइ गीत रसाल रे ।
इणि परि उत्सव अति करी, थापइ थानकि बाल रे ॥१२॥ जी रे...

नंदीश्वरि यात्रा करी, सुर पुहुचइ सुरधाम रे ।
दृढरथ निज घरि हरि परिं, उत्सव करइ अभिराम रे ॥१३॥ जी रे...
गर्भथिकइ इणइ बालकिइं, ज्वर-संतप्त सरीर रे ।
देवी स्पर्शथी रायनुं, शीतल थयुं जिम नीर रे ॥१४॥ जी रे...
तिणि कारणि सुतनुं दीइ, शीतल नाम नरिंद रे ।
दिनि दिनि वाधइ दीपतु, ऊजल पखि जिम चंद रे ॥१५॥ जी रे...
क्रमि क्रमि यौवनवय धरइ, हरइ मानिनी मन्न रे ।
ऊंचपणइ स्वामी तणुं, नेऊ धनुष सुतन्न रे ॥१६॥ जी रे...
मात-पिता आग्रहथिकु, करइ प्रभु उपयाम[१७] रे ।
नरपतिपद अंगीकरइ, पालइ राज सुधाम रे ॥१७॥ जी रे...
लोकांतिक सुर आवीआ, बोलइ वाणि(णी?) विशाल रे ।
जिन संवत्सर दान दिइ, त्यजइ राज रसाल रे ॥१८॥ जी रे...
सुरपति सवि आवी करइ, संयमनु अभिषेक रे ।
शिबिका नाम **चंद्रप्रभा**, आरोहइ प्रभु छेक रे ॥१९॥ जी रे...
सहसरसाल वनंतरिइं, भूपति सहस प्रसिद्ध रे ।
दीक्षादंडक उच्चरइ, सिरि पंच मौष्टिक किद्ध रे ॥२०॥ जी रे...
माघ बहुल बारसि तिथिइं, पूर्वाषाढ नक्षत्र रे ।
छट्ठ तणुं तप प्रभु करी, लिइं संयम सुपवित्र रे ॥२१॥ जी रे...
नयर **अरिष्टपुर** जांणीइ, राय **पुनर्वसु** नाम रे ।
पारणुं परमान्निइं करइ, तेहनइं घरि अभिराम रे ॥२२॥ जी रे...
वसुधारा सुर तिहां रचइ, जिनवर करइ विहार रे ।
असह परीसह बहु सहइ, पालइ पंच आचार रे ॥२३॥ जी रे...
मास त्रिणि प्रभु तप तपइ, छट्ठ धरइ शुभ ध्यान रे ।
प्लक्ष सुवृक्ष केरइ तलइ, पामइ केवलन्यान रे ॥२४॥ जी रे...
पोष बहुल चऊदसि दिनिइं, पूर्वाषाढ नक्षत्र रे ।
समवसरण सुरवर रचइ, दिइ देशन जिन तत्र रे ॥२५॥ जी रे...
एकासी गणधर हूआ, आपइ त्रिपदी उदार रे ।
ततखिणि चऊद पूरव रचइ, आगम अंग अग्यार रे ॥२६॥ जी रे...

१७. विवाह ।

तीरथरक्षक सुर जयु, **ब्रह्मा** नामिइं छइ जेह रे ।
लोचन त्रिणि विराजतु, च्यारि वदन वली तेह रे ॥२७॥ जी रे...
आसनि कमल विमल भणउं, अति उज्वल तनुवान रे ।
आठ अछइ भुज तेहनइं, तस आयुध अभिधान रे ॥२८॥ जी रे...
मातुर्लिंग मुदगर वली, अभयद अदभुत पाश रे ।
दक्षण चिहुं करि जेहनइं, सोहइ पुण्य-प्रकास रे ॥२९॥ जी रे...
नकुल गदा अंकुश वली (अनइं), अक्षसूत्र विशाल रे ।
वाम चिहुं करि जे धरइ, सज्जनजन प्रतिपाल रे ॥३०॥ जी रे...
देवि **अशोका** जाणीइ, प्रभुनइं शासनि सार रे ।
मुद्गवर्णा अब्जवाहना, कर जस च्यार उदार रे ॥३१॥ जी रे...
वरण(द) पाशयुत जेहना, दक्षण बाहु छइ दोइ रे ।
फल अंकुशधर तिम वली, दोइ कर वाम तूं जोइ रे ॥३२॥ जी रे...
प्रभु परिवार कहुं हवइ, मुनिवरजन एक लाख रे ।
मुनिनीजन एक लाख छइ, छए अधिक सुभाख रे ॥३३॥ जी रे...
सहस नव्यासी आगला, श्रावक छइ लाख दोइ रे ।
लाख साढां च्यार जेहनइं, श्राविकाजन जस जोइ रे ॥३४॥ जी रे...
हवइं अवसान लही करी, मुनिवर सहस समेत रे ।
मास एक अनशन धरी, जाइ गिरि-शिखरि **समेत** रे ॥३५॥ जी रे...
राध बहुल द्वितीया तिथिइं, पूर्वाषाढ नक्षत्र रे ।
स्वामि अजरपद पामीआ, जयु जयु एह चरित्र रे ॥३६॥ जी रे...
कुमरपणइ पूरव गयां, जेहनइं सहस पंचवीस रे ।
सहस पंचास भूपतिपणइ, संयम सहस पंचवीस रे ॥३७॥ जी रे...
एक पूरव लख जेहनइ, पूरण आयु सुचंग रे ।
शीतल जिन गुण जे थुणइ, तेह घरि बहुविध रंग रे ॥३८॥ जी रे...
धर्मसिंह पंडित तणु, पामी वचनविलास रे ।
श्रीशीतल जिन गाईउ, पूरइ भवियणजण आस रे ॥३९॥ जी रे...

॥ इति पण्डितश्रीधर्मसिंहगणिशिष्य-पण्डितरत्नसिंह[गणि]विरचिते श्रीचतुर्विंशतिजिनस्तोत्रे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीशीतलजिनस्तवनं सप्तमम् ॥१०॥

श्रेयांसनाथ स्तवन

॥ राग- असाउरी ॥ श्रीशांति जिणेसर भुवन-दिणेसर राय - ए ढाल ॥

श्रेयांस जिणेसर सवि सुखदायक देव,
देवा सुर नरपति सारइ जेहनी सेव ।
तस पदपंकेरुह प्रणमी परम पवित्र,
सुणयो भवियण जण बोलिसु मूल चरित्र ॥
मूलचरित्र सुणयो भवियण जण नयर **सिंहपुर** जाणूं(णुं),
विष्णुं राय नरपति तिहां तेहनइं महिला विष्णुं वखाणुं ।
शशि-रोहिणि जिम रति-रतिपति जिम पौलोमी-पुरहूत,
तिम नरपति नारीसिउं निरुपम सुख विलसइ उदभूत ॥१॥
अच्युत सुरमंदिरि **नलिनगुल्म** नृप जीव,
सुरलोक तणां सुख विलसी तेह अतीव ।
ज्येष्ट मास बहुल छट्ठि श्रवण नक्षत्र उदार,
आवी देवीनइं उअरि धरइ अवतार ॥
उअरि धरइ अवतार तदा सा सपन लहइ दस च्यार,
चंदमुही महिपतिनइं पूछइ सपन तणु सुविचार ।
राय कहइ महिला सुणि पामिसि नंदन पुण्य-पवित्र,
गुण परखी हरखी हरिणंखी गर्भ धरइ सुचरित्र ॥२॥
फागुण वदि बारसि श्रवण नक्षत्र संयोग,
सुत प्रसवइ देवी लंछन खड्गी अशोग ।
गुण-लक्षण-लक्षित कनक-विशद तनुकंति,
दिसिकुमरी आवी न्हवण करइ एकचिंति ॥
न्हवण करइ एकचिंति तदनंतरि आसन कंपिइं आवइ,
जन्म लही बहु बुद्धि बिडौजा जिन-जननी गुण गावइ ।
कंचनगिरिशृंगिइं मनरंगिइं जन्म-महोत्सव विरचइ,
दुग्धजलधि जल न्हवण करीनइं चंदनरसि तनु चरचइ ॥३॥
मूंकइ हरि जिननइं निज जननीनइं पासि,
नंदीश्वरि यात्रा करीअ जाइ आवासि ।

तव नरपति निज घरि उत्सव करय रसाल ।
नाटक एक विरचइ सधवा धवल विशाल ॥
धवल विशाल दीइ सुत आविइं भूपति अति रति आणइ,
हुइ श्रेय अम्ह घरि आविइं नरपति मनि इम जाणइ ।
तिणि कारणि श्रेयांसकुमर तस नाम दीइ अभिराम,
स्वजन वर्ग भोजन धन दानिइं संतोषइ नृप ताम ॥४॥
शिशुरूप सुर हसइ रमइ गुण गाइ,
प्रभु राचइ माचइ नित नाचइ ऊजाइ ।
क्रमि क्रमि जिन वाधइ सुरतरु जिम सुरलोकि,
यौवनवय पामिइं जन हरखइ आलोकि ॥
जन हरखइ निरखइ अइसी धनु देहमांन उत्तंग,
पाणिग्रहण करइ नृप-तनया पामइ अति घण रंग ।
पितृ आदेश लही पृथिवीनुं भार धरइ भगवंत,
भोग्यकर्म भोगवतु भूपति पालइ सज्जन संत ॥५॥
संवेग धरइ जव जिन ममता मनि नाणइ,
लोकांतिक आवी तब चारित्र वखाणइ ।
संवत्सर-वितरण जलधर परि जिन मंडइ,
हय गय मह रह मणि धन कण कंचन छंडइ ॥
छंडइ राज अखंड अनोपम साधइ जिन निज काज,
व्रत-अभिषेक करइ मनरंगिइं सयल सुरासुरराज ।
शिबिका **विमलपहा** आरोहइ साथिइं सहस नरिंद,
सहसरसाल वनंतरि आवी विरचइ लोच जिणंद ॥६॥
फागुण वदि तेरसि श्रवण नक्षत्र विशाल,
निज परिकर-संयुत लिइ संयम सुरसाल ।
भूतलि विहरंतु **सिद्धारथपुरि** आवइ,
तिहां **नंद** नरेसर जिनपतिना पद पावइ ॥
जिनपति पद पावइ सुर गुण गावइ प्रभु पारणुं करावइ,
अति निर्मल मन्निइं वर परमन्निइं दारिद दूरि गमावइ ।

छद्मस्थपणइ दोइ मास रही तव छट्ठ करइ भगवंत,
माघ मास अमावसि श्रवणिइं पामइं केवलनांण अनंत ॥७॥
तिदुंक(तिंदुक) तलि ततखिणि समवसरण तिहां राजइ,
चल चामर दुंदुभि नादिइं अंबर गाजइ ।
जिन योजनगामिणि वाणी करय वखाण,
छ्युतिरि गणधरपद आरोपइ अति जाण ॥
गणधर आरोपइ त्रिपदी सुंपइ विरचइ अंग अग्यार,
यक्षेश्वर तस तीरथरक्षक कहीइ यक्ष उदार ।
शुभ्र-वर्ण वृषवाहन लोचन जेहनइ त्रणि विराजइ,
बीजपूर वर गदा विराजित दक्षण कर जस **छाजइ** ॥८॥
अक्षसूत्र नकुलयुत अद्भुत होइ कर वाम,
सेविउ सेवकनइं पूरइ वंछित काम ।
जस शासनदेवी मनि **मानवीअ** वखाणुं,
तनु गौरवरण तस वाहन मृगपति जाणउं(णुं) ॥
जाणउं वरद अनइं मुद्गर वर दक्षण करि छइ जेहनइं,
कलश अनइं अंकुशयुत सुंदर वाम बाहु छइ तेहनइं ।
पहिलुं हरि नइं पहिलुं हलधर **त्रिपृष्ट अचल** अभिधान,
होआ समकितधारी तेहना श्रावक होई **असमान** ॥९॥
यतिजन चुरासी सहस हूआ जस सार,
त्रिहूं सहसे अधिकी यतिनी लाख विचार ।
श्रावक दोइ लाख सहस उगण्यासी जाणउं,
श्राविका च्यार लाख सहस अडयाल वखाणउं ॥
वखाणउं स्वामि तणउ परिकर इम मोक्षसमय हिव जाणी,
आवइ शैल **समेत** त्यजीनइं मास एक अन्न पाणी ।
सहस मुनीसर साथिइं सामी पामइ पद निर्वाण,
श्रावण वदि तृतीया तिथिसंयुत ऋक्ष धनिष्ठा जाण ॥१०॥
एकवीस वरस लख कुमरपणइ जस जाइ,
बइतालीस लाख वरस जस राज कहाइ ।
संयम एकवीस वरस लख कहीइ जास,

सर्वायु सुणउ हिव लाख चउरासी तास ॥
चउरासी लाख लही जे वच्छर आयु अखय भगवंत,
भविअण भव तारी दुरित निवारी पाम्या सौख्य अनंत ।
धर्मसिंह पंडितवर केरु पामी वचनविलास,
रत्नसिंह मुनि जंपइ संपइ भविअण पूरइ आस ॥११॥

॥ इति पण्डितधर्मसिंहगणिशिष्यविरचिते श्रीचतुर्विंशतिजिनस्तोत्रसङ्ग्रहे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीश्रेयांसजिनस्तवनं एकादशमम् ॥११॥

वासुपूज्यस्वामी स्तवन

हवइं **वासुपूज्य** जिणंदा, भविजन-कैरव-चंद ।
नमइ सुरासुरवृंदा, थुणसिउं धरिअ आणंद ॥१॥
नयरी निरुपम **चंपा**, अलका-निर्मित-कंपा ।
तिहां **वसुपूज्य** नरिंद, यम सुरलोकि सूरिंद ॥२॥
तास **जया** पटराणी, लक्षण-गुणगण-खाणी ।
रति-रतिपति यम रंग, भोगवइ भोग अभंग ॥३॥
पद्मोत्तर नृप नाम, **प्राणत** सुरलोक धाम ।
तिहांना भोगवी भोग, तेह चिवइ गतशोक ॥४॥
नवमी ज्येष्ठनी शुद्ध, शतभिष नक्षत्र बुद्ध ।
देवि जया उरि वास, विरचइ पुण्य-प्रकास ॥५॥
ततखिणि रयणि सा देखइ, सूती सपन अलेखइ ।
पूछइ प्रियनइं सा हरखी, पति कहइ निज मति निरखि ॥६॥
तीर्थंकर सुत होसिइं, सयल सुरासुर जोसिइ ।
सा अति आणंद पामी, गर्भ वहइ मनकामि ॥७॥
फागणनु शुदि पक्ष, चौदसि वारुण ऋक्ष ।
प्रसवइ सुत द्युतिपूर, दिसि प्राची जिम सूर ॥८॥
छपन कुमरिका आवइ, सूति करी गुण गावइ ।
अवधिज्ञानथी इंद, जाणी जन्म जिणंद ॥९॥

आवइ सुर परवारिउ, भवसायर तव तरिउ ।
प्रभु लेई मनरंगिइं, आवइ सुरगिरिशृंगिइं ॥१०॥
अवर पुरंदर तत्र, विरचइ उत्सव चित्र ।
खीरसमुद्रनुं अंभ, पूरी सोविन कुंभ ॥११॥
जिनमस्तकि अभिषेक, विरचइ विबुध विवेक ।
प्रणमी प्रभुनइं उल्हासि, थापी जननीनइं पासि ॥१२॥
नंदीश्वरि जई ताम, हरि आवइ निज धाम ।
राजा निज घरि जंग, विरचइ अति घण रंग ॥१३॥
वासुपूज्य एह नाम, थापइ सुतनुं धाम ।
वाधइ दिनि दिनि ते बाल, सुरगिरि जिम सुरसाल ॥१४॥
अरुणवरण तनुरंग, अंक महिष शुभ संग ।
सितिरि धनुष देहमान, रूप अधिक असमान ॥१५॥
यौवनवय जिन पामी, युवतीजन मनकामी ।
नृप उपयाम[१८] करावइ, भोग्यकर्म प्रभु भावइ ॥१६॥
मात-पितर शिर नामी, तेहनी अनुमति पामी ।
व्रत लेवा धरइ ध्यांन, मूंकइ ममता नइं मांन ॥१७॥
लोकांतिक सुर आवइ, संयमसमय जणावइ ।
दिइ संवच्छरी दान, धण कण मणि असमान ॥१८॥
इंद्रादिक सुर आवइ, व्रत-अभिषेक करावइ ।
पृथिवी शिबिकानुं नाम, तिहां बइसइ गुणधाम ॥१९॥
विहारगेह अभिधान, वनि आवइ भगवान ।
चउत्थ तणउ तप कीध, जन मनवंछित सीध ॥२०॥
छसइं नराधिप साथिइं, लोच करइ निज हाथिइं ।
फागुण मास अमास, शतभिष ऋक्ष प्रकाश ॥२१॥
जिन लिइ संयमभार, भूतलि करय विहार ।
पालइ पंचाचार, भासइ विविध विचार ॥२२॥
महापुर नगर मझारि, **सुनंद** महीपति बारि ।
विरचइ पारणउं स्वामी, परमान्निइं शिवकामी ॥२३॥

१८. विवाह ।

गामागर पुर वास, विहरइ जिन एक मास ।
शम दम संयम पालइ, व्रत-दूषण प्रभु टालइ ॥२४॥
तदनंतर जिन सामी, चउत्थ धरइ शिवगामी ।
पाडल-तरुतलि ध्यान, पामइ केवलज्ञान ॥२५॥
माघ शुदि बीज ते कहीइ, शतभिष नक्षत्र ते लहीइ ।
समवसरण सुर विरचइ, प्रभु पदपंकज चरचइ ॥२६॥
योजनगामिणी वाणी, निसुणइ भविअण प्राणी ।
छासठि गणधर थापइ, त्रिपदी तेहनइं आपइ ॥२७॥
विरचइ अंग इग्यार, जाणइ शास्त्रविचार ।
तीरथरक्षक यक्ष, नाम **कुमार** प्रत्यक्ष ॥२८॥
राजहंस रथ जास, वर्ण समुज्वल तास ।
धरइ बीजोरूं नइ बाण, दक्षण भुजयुग जाण ॥२९॥
नकुल अनइ धनुंधारी, वाम करद्वय-हारी ।
शासनदेवीअ लहीइ, नामिइं **चंडा** ते कहीइ ॥३०॥
श्यामवरण जस गात, वाहन वाह[१९] विख्यात ।
दक्षण भुजयुग जेह, वरद शक्तियुत तेह ॥३१॥
पुष्प गदायुत वाम, भुजयुग अति अभिराम ।
समरइ जिनवर नाम, पूरइ वंछित काम ॥३२॥
बहुत्तिरि सहस मुर्णिद, नमइ सुरासुरवृंद ।
मुनिनी लाख वखाणउं, तेहना गुण मनि आणउं ॥३३॥
श्रावक दोइ लाख कहीइ, अधिक सहस दस लहीइ ।
श्राविका च्यारि लाख जाणुं, सहस छत्रीस वखाणउं(णुं) ॥३४॥
मुक्तिसमय हवइं जाणी, चंपा नगरी वखाणी ।
तिहां आवइ जगनाथ, छसइं मुनीसर साथ ॥३५॥
अनशन लिइ एक मास, पामइ मुगतिनिवास ।
शुचि[२०] सित चौदशि(सि) दिन्न, उत्तर भद्रपद धन्न ॥३६॥
वत्सर लाख अढार, कूंअर-पदवी उदार ।
वत्सर चउपन लाख, संयमसिरि जिनभाख ॥३७॥

१९. अश्व । २०. आषाढ

लाख बहुत्तिरि जाणुं, स्वामि सर्वायु वखाणुं ।
जिनवर बारमु देव, कीजइ तस पय सेव ॥३८॥
धर्मसिंह पंडितराय, प्रणमी तेहना पाय ।
वासुपूज्य जिनवर गायु, परम पदारथ पायु ॥३९॥

*॥ इति पण्डित**धर्मसिंह**गणिशिष्य-**रत्नसिंह**गणिविरचिते श्रीचतुर्विंशतिजिनस्तोत्रसङ्ग्रहे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीवासुपूज्यजिनस्तवनं द्वादशम् ॥१२॥*

विमलनाथ स्तवन

॥ राग-मेवाडु धन्यासी ॥ रंगडु रमीनइं रे उचाऊ थयां – ए ढाल ॥

विमल जिणंद तणा गुण गाईइ, प्रणमी तेहना पाय ।
जन मनवंछित दायक सुरतरु, सेवइ सुर-नरराय ॥१॥
स्वामि सलूणडा रे सुणि मुझ वीनती, जयु जयु विमल जिणंद ।
चंद तणी परि तुह दंसण लही, पामीउ परम आणंद, स्वामि.. (द्रु(ध्रु)वपद)
कांपील्य पुरवर केरु राजीउ, करइ सुकृत **कृतवर्म** ।
रामा **श्यामा** नामि सोहामणी, लहइ जिनधर्मनु मर्म ॥२॥ स्वामि...
पद्मसेन भूपति जीव पूरव भविइं, जे अष्टमि(मी?) सुरलोकि ।
ते तिहांनां सुख विलसी अवतरइ, श्यामा-उअरि अशोक ॥३॥ स्वामि...
राध शुदि बारशि(सि) तिथि वखाणीइ, उत्तर भद्र नक्षत्र ।
निशिभरि सूती नरपतिभामिनी, पेखइ सुपन पवित्र ॥४॥ स्वामि...
प्रेम धरंती प्रमदा संचरइ, मंदिरि निज भरतार ।
सरस सुधारस वाणी वरसती, पूछइ सुपन विचार ॥५॥ स्वामि...
नरपति जंपइ निसुणउ पदमिनी, पूरव पुण्य-प्रचार ।
सुत कुलमंडन सुंदर पामसिउ, जिनवर जगदाधार ॥६॥ स्वामि...
गर्भ धरंती भूपतिभामिनी, सोहइ अति अभिराम ।
तप[२१] सित त्रि(तृ?)तीया ऋक्ष भद्रोत्तरा, सुत प्रसवइ सा ताम ॥७॥ स्वामि...
छपन कुमारी सारी संचरइ, भगति धरइ अतिरेक ।
जिन जिनजननीनइं प्रणमी करी, विरचइ विधि अभिषेक ॥८॥ स्वामि...

२१. माघ ।

आवइ निज परिकर परिवरिउ, पालक रचिअ विमान ।
अवधिज्ञानिइं करी अरिहंतनुं, जनम लही असमान ॥९॥ स्वामि...
जिन जिनजननी गुणवर्णन करइ, नींद देई जिनमात ।
प्रभुनइं लेई सुरपति संचरइ, सुरगिरिशिखरि विख्यात ॥१०॥ स्वामि...
कल कलधौत कलश भाविइं भरी, दुग्धजलधि जल पूर ।
हरि अभिषेक अनेक परिइं करइ, गयणि गडइ घण तूर ॥११॥ स्वामि...
जिनजननीनी निद्रा परिहरी, करीअ कनक मणि वृष्टि ।
जिन अंगूठइ अमृत ठवी करी, पामइ सुरपति तुष्टि ॥१२॥ स्वामि...
नरपति निज घरि तव उत्सव करइ, वर वादित्र विचित्र ।
अविरल जलधर परि धन वरसतु, पूरव पुण्य-पवित्र ॥१३॥ स्वामि...
गर्भथिकइ एणइ जननी एहनी, मति तनु विमल अपार ।
तिणि कारणि तस नरपति नाम दिइ, सुतनुं विमलकुमार ॥१४॥ स्वामि...
क्रमि क्रमि वाधइ कुंअर कला धरइ, चडत पखि जिम चंद ।
देखी चतुर चकोर तणी परिइं, लहइ आनंद अमंद ॥१५॥ स्वामि...
यौवनवय जव जिनवर पामीआ, मनमथरूप रसाल ।
राजसुतासिउं तव परणावीया, गति जस बाल-मराल[२२] ॥१६॥ स्वामि...
नयणां निरुपम पंकज पांखडी, वदन पूनिमनुं चंद ।
रति-रतिपति जिम सुख विलसइ, सदा जाणी भोग्य जिणंद ॥१७॥ स्वामि...
जगदानंदन नंदननइं पिता, सुंपइ निज पदभार ।
भाव भलेरा नीति अनीतिना, जाणइ जगदाधार ॥१८॥ स्वामि...
तव **लोकांतिक** सुरवर आवीआ, बोलइ वचन विशाल ।
जय जिन जीवन तीरथ थापीइ, त्यजीइ भव-जंजाल ॥१९॥ स्वामि...
वचन सुणीनइं जिनपति जागतु, छंडइ राग विषाद ।
जलधरनी परि वितरण वरसतु, बोलइ मधुर निनाद ॥२०॥ स्वामि...
धण कण कंचण भूषण परिहरइ, हय गय रह परिवार ।
संयम लेवा जिन उच्छक थयु, जाणी अथिर संसार ॥२१॥ स्वामि...
चुसठि हरि हरखिइं आवी मिलइं, विरचइ व्रत-अभिषेक ।
देवदत्ताभिध शिबिका शोभना, आरोहइ सुविवेक ॥२२॥ स्वामि...

२२. राजहंस ।

सहसरसाल शुशोभित वनि गमइ, ऊचा(च्चक?)इ कचभार ।
सहस नरेसर साथिइं जिन, करइ व्रतदंडक उच्चार ॥२३॥ स्वामि...
माघ समुज्वल चउथि वखाणीइ, उत्तर भद्र नक्षत्र ।
संयम लेई संचरतु रच(ह?)इ, पृथिवी पीठ पवित्र ॥२४॥ स्वामि...
धनकड नामिइं नयर सोहामणउं, तिहां **जय** नामि नरिंद ।
छट्ठ तणुं तिहां प्रभु करइ पारणुं, आवइ सुरवरवृंद ॥२५॥ स्वामि...
सुर वसुधारादिक पंचक करइ, महीअलि वाधइ वांन ।
ग्रामाकर पुर नगरि विरतपणइ, विहरइ भुवि भगवांन ॥२६॥ स्वामि...
मास युगल छदमस्थपणइ चरइ, करइ करमनु अंत ।
तरु अश्वत्थ तलइ छठ धरी, ज्ञान लहइ अरिहंत ॥२७॥ स्वामि...
छठि अजूआली पोस तणी सुणी, उत्तर भद्र विशाल ।
विमल जिणंद तणउ भवि भावयो, केवल केरु काल ॥२८॥ स्वामि...
ततक्षणि सुर नर किन्नर सवि मिल्या, केवलमहिम करंति ।
छत्र चमर सिंहासन भासतु, समवसरण विरचंति ॥२९॥ स्वामि...
अमीय समाणी वांणी वरसतु, जिणवर करय वखांण ।
बोध पमाडी गणधर थापीया, सत्तावन जगि जांण ॥३०॥ स्वामि...
त्रिपदी पामी प्रभुथी ते रचइ, पूरव अंग अग्यार ।
निसुणी भवियण जण क्षण अंतरिइं, पामइ भवजल पार ॥३१॥ स्वामि...
तीरथरक्षक सुर जस जाणीइ, **षण्मुख** नामिइं यक्ष ।
द्वादश कर जस शिखि-रथ मनहरइ, सोहइ वर्ण वलक्ष[२३] ॥३२॥ स्वामि...
दक्षण पासइ आयुध जे धरइ, फल अनइ चक्र उदार ।
सायक खड्ग सुपाश वखाणीइ, वली अक्षसूत्र विचार ॥३३॥ स्वामि...
डावइ पासइ आयुध जेहनइं, चक्र नकुल कोदंड ।
फलक अनइं अंकुश वली जाणीइ, अभयद आण अखंड ॥३४॥ स्वामि...
शासनदेवी स्वामि सेवा करइ, **विदिता** नामि विशाल ।
पद्मारूढा वंछितदायिनी, वांनि हसइ हरीआल ॥३५॥ स्वामि...
सायक पास विराजित जेहना, दक्षण कर दोइ सार ।
नाग अनइं कोदंड कलित वली, कर जस वाम उदार ॥३६॥ स्वामि...

२३. उज्वल ।

सकल सुरासुर नरवर सिरि धरइ, जेहनी आण अभंग ।
भविअणजण कामित पूरवइ, साठि धनुष तनु तंग ॥३७॥ स्वामि...
विमल जिणेसर परिकर जांणीइ, अडसठि सहस मुणिंद ।
यतिनी एक लक्ष अधिकी आठसइं, सेवइ सुरनरवृंद ॥३८॥ स्वामि...
श्रावक आठ सहस अधिकेरडा, लाख-युगल जस होइ ।
सहस चुत्रीसे अधिकी श्राविका, जस च्यारि लाख ज जोइ ॥३९॥ स्वामि...
शैल **समेतशिखरि** प्रभु आवीआ, जाणी निज निर्वाण ।
छ सहस मुनिजन साथिइं उच्चरइ, अणसण स्वामि अपाण ॥४०॥ स्वामि...
मास आषाढ सितेतर सप्तमी, रेवति नामि नक्षत्र ।
मास पछी प्रभु श(शि)वपद पामीआ, ए जिन विमल चरित्र ॥४१॥ स्वामि...
लाख पनर जस कुमरपणइ गयां, नृपतिपणइ त्रीस लाख ।
संयम पन्नर लाख वरस वली, आयु सकल सठि लाख ॥४२॥ स्वामि...
गुणमणि-रोहणगिरि सम सोहता, **धर्मसिंह** पंडितराय ।
विमल जिणेसर रंगि गाईउ, पामी तास पसाय ॥४३॥ स्वामि...

*॥ पण्डितश्री**धर्मसिंह**गणिशिष्य-पंडित**रत्नसिंह**गणिविरचिते*
श्रीचतुर्विंशतिजिनस्तोत्रसङ्ग्रहे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीविमलजिनस्तवनं
त्रयोदशमम् ॥१३॥

अनंतनाथ स्तवन

॥ राग- गुडी ॥ म म करुं माया काया कारिमी - ए ढाल ॥

जिनपति चरणपंकज नमी, बोलिसुं **अनंत** चरित्र रे ।
नयरी **विनीता**नु राजीउ, **सिंहरथ** राय पवित्र रे ॥
जयु जयु अनंत जिनेसरू, जे करइ दुरितनुं अंत रे,
जास भविअणजण गुण थुणइ, नमय सुरासुर संत रे ॥१॥ जयु... (द्रुवपद)
भुवनभूषण तस भामिनी, नाम **सुयशा** अभिराम रे ।
भोगवइ भोग भली परिइं, दंपती यम रति-काम रे ॥२॥ जयु...
प्राणत कल्प अनल्पथी, **पद्मरथ** रायनु जीव रे ।
च्यवय(इ) सुरभव सुख भोगवी, पूरव पुण्य अतीव रे ॥३॥ जयु...

श्रावण वदि तिथि सप्तमी, रेवती चंद्र संयोग रे ।
देवि सुयशा उरि अवतरइ, लग्न उत्तम तणु योग रे ॥४॥ जयु...
निशिभरि पउढीअ पदमनी, सुपन लहइ दस च्यार रे ।
भूपति भामिनी पूछीउ, निज मति करय विचार रे ॥५॥ जयु...
मास नव अधिक जव वउलसिइ, त्रिभुवनमंडन देव रे ।
तीरथंकर सुत पामिसिउं, सुर करइ जेहनी सेव रे ॥६॥ जयु...
गर्भ धरइ नृपमानिनी, आकर भूमि यम रत्न रे ।
गति रति अशन शयनासनिइं, गर्भ तणउ करइ यत्न रे ॥७॥ जयु...
विशाख बहुल तेरसि तिथिइं, रेवती जेह नक्षत्र रे ।
पुत्र प्रसवइ सुयशा सती, लांछन श्येन पवित्र रे ॥८॥ जयु...
सोविनवन तन सोहतु, लक्षण गुणयुत देह रे ।
उत्सव छपन कुमारिका, सुचिर विरचइ गुणगेह रे ॥९॥ जयु...
सुरपती(ति) तव सुरलोकथी, पालक रचिअ विमान रे ।
स्वामि समीपि आवी करइ, जिनजननी गुणगान रे ॥१०॥ जयु...
सोविनगिरि हरि हरखतु, स्वामिनइं करि धरी जाय रे ।
अपर पुरंदर तिहां मिलइ, स्वामि तणा गुण गाय रे ॥११॥ जयु...
निरमल तीरथजल भरइ, सोविन मणिमय कुंभ रे ।
सुरपति अधिक उत्सव रचइ, करइ अभिषेक अदंभ रे ॥१३॥ जयु...
स्वामि निज धामि थापी करइ, वसु वासव तणी वृष्टि रे ।
निज निज थानकि ते गमइ, रमय धरी मन तुष्टि रे ॥१३॥ जयु...
सिंहरथ राय निय मंदिरि, करय उत्सव मनरंगि रे ।
धवल मंगल ललना मिलइ, करय नाटक बहू भंगि रे ॥१४॥ जयु...
गर्भिथिकइ एणइ बालकिइं, मिइं जीता शत्रु अनंत रे ।
कुमर अनंतजित एहवुं, नाम दिइं नृप गुणवंत रे ॥१५॥ जयु...
क्रमि क्रमि त्यजीअ शैशवपणुं, यौवनवय लहइ सार रे ।
दार-परिग्रह प्रभु करइ, भोगवइ भोग उदार रे ॥१६॥ जयु...
धनुष पंचास तनु जेहनुं, रूप अनुपम अभिराम रे ।
उपम-चकित अध ऊरधिइं, दूरि ग्या नाग नइं काम रे ॥१७॥ जयु...

राज्यधुर धीर अंगीकरइ, पामीअ जनक निदेस रे ।
जनक तणी परिइं निज प्रजा, प्रभु धरइ पुण्य-निवेश रे ॥१८॥ जयु...
रंग संवेग जव मनि धरइ, तव करइ जय-जयाराव रे ।
आवी **लोकांतिक** देवता, प्रभु लहइ संयमभाव रे ॥१९॥ जयु...
देव दिइ दान संवत्सरी, हरि करइ व्रत-अभिषेक रे ।
जेह **सागरदत्ता** पालखी, आरुहइ स्वामि सुविवेक रे ॥२०॥ जयु...
छत्र चामर सुरवर रचइ, विविध वादित्र निनाद रे ।
कीरति कवियणजण भणइ, मनि नहीं राग विषाद रे ॥२१॥ जयु...
सहसरसाल वनंतरिइं, पंच मौष्टिक करइ लोच रे ।
षष्ठधर सहस नरनाथसिउं, व्रत तणउ करइ आलोच रे ॥२२॥ जयु...
वैशाख बहुल चौदशि(सि) दिनिइं, रेवती चंद्र संयोग रे ।
संयमदंडक उच्चरइ, त्यजीय मानवभव भोग रे ॥२३॥ जयु...
स्वामी महीमंडलि विहरता, **वर्धमान** पुरवरि जाइ रे ।
खीरिइं करावइ पारणुं, स्वामिनइं **श्रीविजयराय** रे ॥२४॥ जयु...
त्रिणि वरस लगइं तप तपइ, जिन धरमध्यान एकांत रे ।
वृक्ष अशोक तलइ करइ, कर्मनुं अंत अनंत रे ॥२५॥ जयु...
मास वैशाख वदि चौदसिइं, रेवती चारु नक्षत्र रे ।
उज्वल केवल झलहलइ, तप तपइ छट्ठ पवित्र रे ॥२६॥ जयु...
[रूप्य?]कनक {कलधौत}मणिमय रचइ, समवसरण सुरवृंद रे ।
वाणीय योजनगामिनी, देशना दिइ जिनचंद रे ॥२७॥ जयु...
एक (अर्ध?) शत गणधर थापीआ, आपीआ त्रिणि पद तास रे ।
आगम अंग पूरव रचइ, पूरइ भवियण आस रे ॥२८॥ जयु...
नाम **पाताल** छइ जेहनुं, तीरथरक्षक यक्ष रे ।
त्रिणि-मुख मकरवाहन वली, रक्तरुचि भक्त परतक्ष रे ॥२९॥ जयु...
दक्षण त्रिणि कर तिणि धरइ, पंकज खड्ग नइं पाश रे ।
नकुल फलकाक्षसूत्रे करी, त्रिणि कर वाम प्रकास(श)रे ॥३०॥ जयु...
अंकुशा नाम शासनसुरी, पूरवइ वंछित काम रे ।
गौररुचि पंकजवाहना, च्यारि छइ बाहु शुभ-धाम रे ॥३१॥ जयु...

दक्षण भुजयुगि जे धरइ, खड्ग नइं पाश विशाल रे ।
वाम भुजयुगलि जेहनइं अछइ, फलक अंकुश अरि-काल रे ॥३२॥ जयु...
सहस छासठि मुनि जेहनइं, नामि पातक पलइ दूरि रे ।
साहुणी सहस बासठि नमुं, मनि धरुं तस गुण भूरि रे ॥३३॥ जयु...
शुद्ध श्रावक हूआ स्वामिनइं, साठि शत सहित दोइ लाख रे ।
श्राविका लाख च्यारि ज वली, सहस च्यालीस जिनभाख रे ॥३४॥ जयु...
मुक्तिनु समय जाणी करी, स्वामि **सम्मेतगिरिशृंगि** रे ।
सात सहस मुनि परिवरिउ, देव आवइ मनरंगि रे ॥३५॥ जयु...
मास दिन अनशन उच्चरी, भव तरी देव अनंत रे ।
चैत्र शुदि पंचमी रेवती, मुगति पामइ भगवंत रे ॥३६॥ जयु...
कुमरपणइ जसु वुलीआ, वरस साढा सात लाख रे ।
लाख पन्नर नरपतिपणइ, सात साढा व्रत भाख रे ॥३७॥ जयु...
वरस त्रीस लाख जेहनइं, आयु केरुं परिमाण रे ।
परम-आनंद-पद पामीउ, तेहनुं कहुंअ वखाण रे ॥३८॥ जयु...
धर्मसिंह पंडितरायनुं, मनमांहइं धरी अभिधान रे ।
चौदमुं जिनपति गाईउ, महीअलि वाधीउ वान रे ॥३९॥ जयु...

*॥ इति पण्डितश्री**धर्मसिंह**गणिशिष्य-**रत्नसिंह**गणिविरचिते श्रीचतुर्विंशतिजिन-स्तोत्रसङ्ग्रहे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीअनन्तजिनस्तवनं चतुर्दशम् ॥१४॥*

धर्मनाथ स्तवन

॥ शमरसमांहइ झीलीइ-ए ढाल ॥ राग-सामेरी, अथ आसाउरी ॥

धर्म जिणेसर गाईइ, जिम लहीइ शिवशर्मजी ।
जे भवियण जिन अनुसरइ, ते कहीइ कृतकर्म[२५]जी ॥

कृतकर्म धर्म चरित्र निसुणउ **रत्नपुरनु** राजीउ,
श्रीभानु भूपति जिसिउ सुरपति जास महिमा गाजीउ ।
तस पट्टराणी गुण-वखाणी पुण्यखाणी पतिव्रता,
रतिरूप सोहइ मन्न मोहइ नाम जेहनुं **सुव्रता** ॥१॥

२४. प्रवीण ।

जीव **दृढरथ** नरपति तणुं, **वैजयंत** सुरलोकजी ।
ते तिहांना सुख भोगवी, वेगि च्यवइ गतशोकजी ॥

गतशोक पुण्यशलोक शोभन रांध शुदि सप्तमि(मी?) दिनिइं,
नक्षत्र पुष्यइं अवतरइ सुव्रता-उयरिइं शुभ मनिइं ।
तव मध्य-रयणी चंद्रवयणी लहइ सुपन सोहामणां,
तस प्राणनाथ कहइ विचारी चारु फल सुहणा तणां ॥२॥

शशिवयणी सुणी सुंदरी, सुपन तणउ सुविचारजी ।
तीर्थंकर सुत पामसिउ, त्रिभुवननु आधारजी ॥

त्रिभुवन्ननु आधार देवी धरइ गर्भ महामती,
तप[२५] शुक्ल तृतीया पुष्य ऋक्षिइं पुत्र प्रसवइ सा सती ।
छप्पन्न कुमरी करइ अमरी सूतिकरणी सुंदरू,
तव अवधि जाणी इंद्र आवइ नमइ जननी जिनवरू ॥३॥

सुरपति शिशुनइं करि धरी, आवइ सुरगिरिशृंगिजी ।
सयल सुराधिप तिहां मिलइ, न्हवण करइ मनरंगिजी ॥

मनरंगि न्हवण करइ सुराधिप कनक कलसे जल भरी,
प्रभु धामि थापी सुजस व्यापी ठामि निज जाइ हरी ।
तव राय उत्सव रचइ मंदिरि धवल मंगल कीजीइ,
वाजित्र वाजइ गयण गाजइ दान बहुविध दीजीइ ॥४॥

गर्भिथिकइ इणइ धर्मनु, दोहद हूउ एह मातजी ।
धर्मकुमर तेणइ कारणिइं, दीजइ नाम विख्यातजी ॥

विख्यात लांछन वज्र जेहनइं तन्न सोविनवन्न ए,
क्रमि क्रमिइं वाधइ सुगुण साधइ लहइ जिन यौवन्न ए ।
तनु धनुष पिस्तालीस उन्नत जनक अनुमति जिन लही,
महिला-परिग्रह करइ कारणि भोग्यकर्म तणइ सही ॥५॥

पितृ आदेश लही करी, राज्य धरइ जिनदेवजी ।
न्याय करी पालइ प्रजा, राय करावइ सेवजी ॥

---

२५. माघ ।

सवि राय जेहनी सेव सारइ लहीय जिन मनभाव ए,
सारस्वतादिक कहइ संयमसमय शुद्ध सहाव ए ।
तव देव वच्छर दीइ वितरण चरण लेवा मति धरइ,
पुरहूत चुसठि मिलीअ आवइ न्हवण उत्सव तव करइ ॥६॥

नागदत्ता जे पालखी, आरोहइ जिनदेवजी ।
जनवृत्तवप्रगाभिध[२६] वनिइं, आवइ सुरकृत-सेवजी ॥

कृत-पंच-मौष्टिक सहस भूपति सहित छठ तप अणुसरइ,
माघमास शुक्ल त्रयोदशी तिथि पुष्य संयमसिरि वरइ ।
सोमनसपुरि धर्मसिंह नृप पारणउं खीरिइं करइ,
वसु वृष्टि सुर विरचइ तदौकसि नृपति भवसायर तरइ ॥७॥

श(स)मतारसमांहिइं झीलतु, जगगुरु करय विहारजी ।
वरस-युगल प्रभु तप तपइ, भावइ अथिर संसारजी ॥

संसार अथिर जिणंद जाणइ ध्यान मनि आणइ तदा,
दधिपर्ण-तरुतलि लहइ केवलनांण छठ तव संपदा ।
प्रभु पोस मासि सपुण्य पूनिमि पुष्य ऋक्ष इणइ समइ,
तव देव दानव नाण-महिमा करइ यम मननइं गमइ ॥८॥

समवसरण सुरवर रचइ, प्रभु करइ विमल वखांणजी ।
निसुणइ बारइ परषदा, वाणी अमीय समाणजी ॥

प्रभु सुणिय वाणी चित्ति आणी बोध पामइ बहु नरा,
व्रतभार आपइ नाम थापइ तव त्रइतालीस गणधरा ।
त्रिपदी प्रकासइ भाव भासइ चित्त वासइ तेहना,
सिद्धांत विरचइ चरण चरचइ देव दानव जेहना ॥९॥

गुण पांत्रीस वाणी तणा, अतिशय जस चउत्रीसजी ।
दोष अष्टादश जे कह्या, तेह रहित जगदीसजी ॥

जगदीस सुर-नत-सीस सेवा जेह भवियण अणुसरइ,
दर दुरित चूरइ पुण्य पूरइ तेह भवसायर तरइ ।

---

२६. वननाम ।

तस तीर्थरक्षक यक्ष सुणि(णी)इ नाम **किन्नर** मन हरइ,
जस कूर्म रथ त्रिणि वदन सोहइ वर्ण-रातु तनु धरइ ॥१०॥
दक्षण त्रिहुं करि जे धरइ, मातुलिंग अभिरामजी ।
अभय गदा वली जाणीइ, दिइ मनवंछित कामजी ॥
दिइ काम मनवंछित विशेषिइं वाम करि त्रिहुं ए धरइ,
जे नकुल पंकज अक्षमाला स्वामि सेवा अणुसरइ ।
ऊपनी शासनसुरी शोभन नाम **कंदर्पा** कहूं,
तनुरंग उज्वल मच्छ्य वाहन सकल सुखदायक लहूं ॥११॥
दक्षण दोइ करि जे धरइ, उत्पल अंकुश होइ(य)जी ।
डावइ बिहुं करि अणुसरइ, पंकज अभयद जोयजी ॥
हवइं जूउ परिकर स्वामि केरु सहस चउसठि मुनिवरू,
महासती बासठि सहस जाणउं च्यारिसइ गुणसुंदरू ।
श्रद्धालु सहस च्यालीस संयुत लाख दोइ वखाणीइ,
श्राविका तेरस सहस अधिकी च्यारि लाख ज जाणीइ ॥१२॥
भवियणजण प्रतिबोधतु, जिनवर करय विहारजी ।
मुक्तिसमय जांणी धरइ, अशन तणउ परिहारजी ॥
परिहरइ अशन **सम्मेत**शृंगिइं स्वामि मनरंगिइं वली,
तव आठ अधिका एक शत मुनि स्वामि साथ लहइ रुली ।
वर ज्येष्ठ मासिइं विशद पंचमि(मी?) पुष्य ऋक्ष तणइ समइ,
जिन अजर अमर अनंत अव्यय परम-पदवीसिउं रमइ ॥१३॥
कुमरपणइ प्रभु अतिक्रमइ, वत्सर साढ बि लाखजी ।
तेहथी बिमणां जाणीइ, नृपतिपणइ जिनभाखजी ॥
जिनभाख लाख अढी वखाणुं सार संयम अणुसरइ,
सर्वायु वत्सर पूर्ण पालइ लाख दस स्वामी सिरइ ।
श्रीधर्मसिंह मुणिंद केरुं चरणपंकज मनि धरी,
श्रीधर्मनाथ जिणंद केरुं वर्णविउं निर्मल चरी ॥१४॥

॥ *इति पण्डितश्री**धर्मसिंह**गणिशिष्य-पण्डितरत्न**सिंह**गणिविरचिते चतुर्विंशति-जिनस्तोत्रसङ्ग्रहे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीधर्मजिनस्तवनं पञ्चदशमम् ॥१५॥*

शांतिनाथ स्तवन

॥ ढाल - चऊदसुपननु ॥ राग - इंदोला गुडी ॥

शांति जिणेसर, वंछित सुरतर, जेहना सुरवर गुण स्तवइ ए,।
तास विचित्र ए, चारु चरित्र ए, पुण्य-पवित्र गाउं हवइं ए ॥
तस चरित गाऊं, विमल थाऊं, नयर **गजपुर** सार,
विश्वसेन राजा, तेजि ताजा, करइ राज उदार ।
तस नारि **अचिरा**, रूपि रुचिरा, कंतसिउं बहु नेह,
जिम रंभ-सुरपति, रत्ति(ति)-रतिपति, वीजली-घण मेह ।
पोहु पदारथ, **सिद्धि(द्ध) सर्वारथ, मेघरथ** नृप जीव,
निज आयु पूरी, पाप चूरी, लही पुण्य अतीव ।
भाद्रपद मासिइं, नवीअ आसिइं, बहुल सप्तमि(मी?) सार,
नक्षत्र भरणी, धरइ धरणी, देवि(वी?) उरि अवतार ।
तव देवि(वी?) देखइ, अति अलेखइ, सुपन चौद उदार,
हिव सपन पंडित, मति-अखंडित, करइ सुपन विचार ।
त्रैलोक्यपूजित, दोष-उज्झित, हसिइं पुत्र पवित्र,
ते सुणिय वांणी, अमिय जाणी, धरइ हर्ष विचित्र ।
तव ज्येष्ट मासिइं, गुण-निवासिइं, बहुल तेरसि जुत्त,
नक्षत्र भरणी, पुण्य-करणी, देवि प्रसवइ पुत्त ।
तनुवान कंचन, हरिण लंछन, रूप अधिक उदार,
छप्पन्न कुमरी, करइ अमरी, सूति-करणिअ सार ॥१॥
आसन कंपइ ए, हरि तव जंपइ ए, जनम हूउ भलइं जिन तणउ ए ।
रचिअ विमान कि, अति असमान कि, धरय बहुमान आणंद घणउ ए ॥
आणंद पामी, नमइ स्वामी, स्वामि-जननीनइं रंगि,
करि धरीअ जिनवर, सहित परिकर, चलइ सुरगिरिशृंगि ।
खीरोद-अंभिइं, भरीअ कुंभिइं, सयल सुरपति साथ,
वाजित्र वाजइ, गयण गाजइ, न्हवण विरचइ नाथ ।
जिन निज अ(आ)वासिइं, अति उल्हासिइं, ठविय बे कर जोडि,
मणि रयण सरसी, रंगि वरसी, कनक केरी कोडी ।

दिन आठ जत्ता, करीअ पत्ता, इंद निअ निअ ठाणि,
तव रचइ उत्सव, भूप नव नव, संपदा परमाणि ।
शिशु गर्भ वासिइं, मन उल्हासिइं, अशिव उपशम देखि,
सुत नाम थापइ, सुजस व्यापइ, शांतिकुमर अलेखि ।
क्रमि क्रमि वाधइ, कला साधइ, श्वेत-पखि जिम चंद,
च्यालीस धनु, उत्तुंग तनु, जव हूआ तरुण जिणंद ।
सारंगनयणी, चंदवयणी, चालि बाल-मराल,
निज भोग्य जाणी, पुण्य-प्राणी, भजइ भोग रसाल ।
सुत राज थापइ, सुजस व्यापइ, विश्वसेन नरिंद,
दुख दुरित डालइ, क्षोणि पालइ, सुरपुरी जिम इंद ॥२॥

आयुधमंदिरि, चक्र रयण धुरि, सूरमंडल परि ऊपजइ ए ।
देस साधन करइ, देव जयसिरि वरइ, क्षोणि(णी?) षट खंड सिरइ संपजइ ए ॥
षट खंड क्षोणी, जाण जोणी, आण मानइ जास,
बत्रीस सहस, नरिंद निरुपम, पाय प्रणमइ तास ।
हय गय चुलसी, सहस चऊदस, रयण नव निहि नाह,
थण कामकुंभा, रूप रंभा, सहस चउसठि ताह ।
पुर नगर पत्तन, खेट कर्बट, विविध देस निवेस,
संगीत संगत, सघट नाटक, प्रगट पेटक सेस ।
इम चक्रि संपति, सयल सम्मति, भोगवी बहु भंगि,
वैराग्य पामइ, स्वामि कामइ, साधु संयम संग ।
सारस्वतादिक, संपदाधिक, वदइ वाणि विशाल,
जय जीवनंदन, नरिंद सुंदर, छोडि भव-जंजाल ।
तव बोध पामी, मुगतिगामी, शांति देव दयाल ।
सुत **चक्रधर**नइं, रंगि मननइं, दीइ राज रसाल ।
स्वांमी स(सं)वत्सर, विगत-मत्सर, त्याग संग तरंग,
बहु दान देई, राग-जेयी, धरइ संयम संग ।
तव सयल सुरपति, सहित नरपति, करइ व्रत-अभिषेक,
आरुहइ **सर्वा-रथा** नामिइं, पालखी सुविवेक ॥३॥

सहस नरिंदसिउं, जनमन उल्हसिउं, **सहसरसाल** वनंतरिइं ए ।
पंच मौष्टिक करी, छठ तप मनि धरी, चारित्रदंडक उच्चरइ ए ॥
उच्चरइ ज्येष्ठ चतुर्दशी तिथि, असित भरणी भोग,
प्रभु त्यजइ माया, मोह जाया, सयल सुख संयोग ।
पारणूं(णुं) **मंदिर-पुर**-नराधिप, **सुमित्र** केरइ गेहि,
परमान्नि विरचइ, चरण चरचइ, राय अति घण नेहि ।
चारित्र पालइ, दोष टालइ, वरस एक विशाल,
तप छट्ठ निरमल, नंदि-तरुतल, लहइ ज्ञान रसाल ।
शुदि पोस मासिइं, नवमि(मी?) दिवसिइं, चंद्र भरणी संग,
सुर असुर किन्नर, रचइ सुंदर, समवसरण सुचंग ।
बहु बोध पामी, पुण्य-कामी, धरइ संयमभार,
छत्रीस गणधर, नमित-सुरनर, स्वामि थापइ सार ।
त्रिपदी प्रकासइ, भाव भासइ, सुणइ पर्षद बार,
सिद्धांत साधइ, सुकृत वाधइ, लहइ भवजल पार ।
जस तीर्थरक्षक, यक्ष कहीइ, **गरुड** नाम सधाम,
तनु श्याम सोहइ, मन्न मोहइ, क्रोडमुख अभिराम ।
जस बीजपुर, सरोज सुंदर, बाहु दक्षण दोइ,
नकुलाक्षसूत्र, पवित्र तेहना, वाम बे कर जोइ ॥४॥
शासनदेवीय, सुर-नर-सेवीय, नाम **निर्वाणीय** जाणीइ ए ।
गौरवरण-रुचि, परम-पंकज-शुचि, आसन जास वखाणीइ ए ॥
वखाणीइ पुस्तक, कमल-संयुत, बाहु दक्षण दोइ,
इणि परि कमंडलु, कमल-राजित, वाम कर तस जोइ ।
दारिद्र चूरक, आस पूरक, नामि लीलविलास,
हवइं सुणु भवियण, कवइ कवियण, स्वामि परिकर तास ।
मुनि सहस बासठि, सहस एकसठि, छसइ मुनिनी जाणि,
छिइ लाख श्रावक, सह[स] नेऊ, वली अधिक वखाणि ।
श्राविका त्राणउं सहस अधिकी, लाख त्रिणि विचारि,
ए स्वामि परकर-नइं निरंतर, नमउ नित नर नारि ।

प्रभु क्षोणिमंडल, नताखंडल, करइ विमल विहार,
भवि लोक तारइ, पाप वारइ, वदइ सुकृत-विचार ।
श्रीशांति जिनवर, सफल सुरतर, नमइ सुरनरवृंद,
भवताप-हारी, शांति-कारी, भविक-कैरव-चंद ।
निर्वाण जाणी, चित्ति आणी, चडइ मननइ रंगि,
सम्मेत नवशत, साधुसंयुत, धरी समता संगि ।
जिन ज्येष्ठ मासिइं, बहुल तेरसि, चंद्र भरणी योग,
एक मास अनशन, धरीअ पाम्या, मुगतिसिउं संयोग ॥५॥
कुमरपद नृपपदिं, चक्रिपद जिनपदिं वरस प्रत्येकि जगि जाणीइ ए ।
सहस पंचवीस तस, लाख एक वरस जस, स्वामि सर्वायु वखाणीइ ए ॥
सर्वायु पूरी, कर्म चूरी, धरी ध्यान जिणंद,
बहु लोक तारी, सुकृत सारी, लहिया परम-आनंद ।
सुर असुर किन्नर, नर विद्याधर, भगतिभाव अभंग,
निर्वाण केरु, नव नवेरु, करइ उत्सव चंग ।
दारिद्र नासइ, दुरित त्रासइ, पुण्य पामइ वृद्धि,
श्रीशांति जिनवर, सेव करतां, सयल संपद सिद्धि ।
रमणी रसाला, गुण विशाला, पुत्र परिकर सार,
हय गय धुरंधर, सुहग सुंदर, राज-रिद्धि उदार ।
श्रीशांति जिनवर, सकल सुरतर, शमित-पातक-पंक,
गुणरयण सागर, नमित-नागर, वदन-विजित-मृगांक ।
जय जय जनावन, भुवन-पावन, भव-दवानल-मेह,
सुरनरानंदन, वदन चंदन, कनक-कोमल देह ।
धर्मसिंह पंडित, मति-अखंडित, नमइ नरवर-वृंद,
तस चरण प्रामी, सीस नामी, थुणिउ शांति जिणंद ।
एह तवन सुणतां, भावि भणतां, सकल मंगल वास,
नर नारि इह भवि, अनइं पर-भवि, लहइ लीलविलास ॥६॥

*॥ इति पण्डितश्री**धर्मसिंह**गणिशिष्यविरचिते चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रसङ्ग्रहे*
साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीशान्तिजिनस्तवनं षोडशमम् ॥१६॥

कुंथुनाथ स्तवन

पयपंकज प्रणमी करी रे, निरुपम महिमनिवास ।
कुंथु जिणेसर गाईइ रे, भवियण पूरइ आस ॥१॥
मोरा जिनजी भवसायर मुझ तारि, दूतर पार ऊतारि, मोरा... (ध्रूपद)
हास्तिनपुर रलिआमणुं रे, राजा **सूर** नरेंद्र ।
श्री नामिइं तस सुंदरी रे, जिम इंद्राणी इंद्र ॥२॥ मोरा...
जीव **सिंहवह** राजा तणुं रे, सुर **सर्वारथ सिद्धि** ।
सुर भवना सुख भोगवइ रे, विलसइ सयल समृद्धि ॥३॥ मोरा...
श्रावण शुदि नवमी दिनिइं रे, दहनदैवत[२७] नक्षत्र ।
श्रीदेवी उरि अवतरइ रे, पोतइ पुण्य-पवित्र ॥४॥ मोरा...
पउढी निशि निद्रावशिइं रे, सुपन लहइ दस च्यार ।
अमृत मधुर वचने करी रे, पूछइ प्राण-आधार ॥५॥ मोरा...
सुपनपाठक राइं तेडिआ रे, ते करइ सुपन विचार ।
अनुपम सुत तुम्हे पामसिउ रे, जिनवर जगदाधार ॥६॥ मोरा...
अनुक्रमि सुत प्रसवइ सती रे, अधिक हूआ नव मास ।
राध बहुल चऊदशि(सि) तिथिइं रे, दहनदैवत शशि वास ॥७॥ मोरा...
अज लांछन जगि जाणीइ रे, कलधौतामल देह ।
विरचइ छपन कुमारिका रे, सूति-महोत्सव तेह ॥८॥ मोरा...
आसन कंपिइं आविआ रे, पुरहूतादिक देव ।
जिन जिनजननीनइं नमी रे, बहु विरचइ सुर सेव ॥९॥ मोरा...
पंच रूपि प्रभुनइं लेई रे, हरि सोवनगिरिशृंगि ।
कनक कलश भाविइं भरी रे, दुग्धजलधि जल रंगि ॥१०॥ मोरा...
सुरदुंदुभि घन गाजतइ रे, स्वामि शिरसि अभिषेक ।
चउसठि हरि अनुक्रमिइं करइ रे, हरख हीइ अतिरेक ॥११॥ मोरा...
श्री पासइ शिशुनइं ठवी रे, हरि **नंदीश्वरि** जाइ ।
अष्ट दिवस उत्सव करी रे, आवइ निज निज ठाइ ॥१२॥ मोरा...
राजा पणि उत्सव करइ रे, निज संपति अनुमानि ।
गीत गान नाटक रचइ रे, वरसइ अविरल दानि ॥१३॥ मोरा...

२७. कृत्तिका ।

गर्भिथिकइ श्रीइं पेखिउं रे, मणिमय कुंथु समूह ।
कुंथुकुमर एहवउं पिता रे, नाम धरइ धरी ऊह[२८] ॥१४॥ मोरा...
क्रमि क्रमि जिन यौवन लहइ रे, पांत्रीस धनु तनुमान ।
रूप कला अधिकी वहइ रे, दिनि दिनि वाधइ वान ॥१५॥ मोरा...
चकित-कुरंग-विलोचना रे, राजसुता शुभधाम ।
पितृ आदेश लही करी रे, स्वामि करइ उपयाम ॥१६॥ मोरा...
सुंदर रूप सोहाकरू रे, मानिनि मनि बहु रंग ।
भोग्यकर्म मनि भावतु रे, भोगवइ भोग अभंग ॥१७॥ मोरा...
शुभ महुरति सुतनइं दीइ रे, नरपतिपद निज तात ।
न्यायि करी पालइ प्रजा रे, जिन त्रिभुवनि विख्यात ॥१८॥ मोरा...
आयुधशालाइं ऊपनुं रे, चक्र रयण अभिराम ।
रविमंडल जिम झलहलइ रे, सोदामिनि सम धाम ॥१९॥ मोरा...
चक्रानुग चक्री चलइ रे, हय गय रह भड भूर ।
सूरिज खेहि छाहिउ रे, गयणि गडइ रणतूर ॥२०॥ मोरा...
पहिलूं(लुं) **मागध** साधिउ रे, अनइं **वरदाम** विशाल ।
सिंधु सुरी साधी करी रे, वसि कीधु **कृतमाल** ॥२१॥ मोरा...
तदनु **तिमिस्त्रा कंदरा** रे, ऊघाडइ तस द्वार ।
म्लेच्छ महीपतिसिउं भडइ रे, सेनानी सुविचार ॥२२॥ मोरा...
खंडत्रय साधी लिखइ रे, **ऋषभकूटि** निज नाम ।
गिरि वैताढ्यिं जे वसइ रे, नमइ विद्याधर ताम ॥२३॥ मोरा...
नाट्यमाल गंगा नदी रे, साधइ विविध विधान ।
नैसर्पादिक तिहां लहइ रे, स्वामी नवय निधान ॥२४॥ मोरा...
चक्रानुग पाछउ वलइ रे, **खंडप्रपाताद्वारि** ।
इम षट् खंडइ साधीआ रे, सुकृत तणइ आधारि ॥२५॥ मोरा...
छसइं वरस पूरा हूआ रे, देश साधननुं काल ।
चक्रवर्त्ति पदवी लही रे, पाम्या मंगलमाल ॥२६॥ मोरा...
चउसठि सहस अंतेउरी रे, सुत-संतति सुविशाल ।
सुर नर सवि सेवा करइ रे, पालइ राज रसाल ॥२७॥ मोरा...

२८. विचार ।

लोकांतिक सुर आवीआ रे, जांणी मनि वइराग ।
विनय करी वांणी वदइ रे, प्रणमी प्रभुना पाग ॥२८॥ मोरा...
स्वामी संयम अणूं(णु)सरी रे, भवसायर जन तारि ।
दांन दीइ संवच्छरी रे, संपति अथिर विचारि ॥२९॥ मोरा...
व्रत-उत्सक जिननइं लही रे, आवइ सुरपतिवृंद ।
व्रत-अभिषेक विधिइं करइ रे, पामइ परमानंद ॥३०॥ मोरा...
व्रत लेवा प्रभु संचरइ रे, **विजया** शिबिकारूढ ।
प्रभु-मारगनइं अणूं(णु)सरइ रे, सहस नरिंद अमूढ ॥३१॥ मोरा...
पुर-परिसरि वन जे अछइ रे, **सहसरसाल** विशाल ।
पंच मुष्ठि कच उच्चकइ रे, सहित सहस भूपाल ॥३२॥ मोरा...
राध बहुल तिथि पंचमी रे, हुतवहदैवत[२९] रिक्ष ।
दीक्षादंडक उच्चरइ रे, सुर नर सयल समक्ष ॥३३॥ मोरा...
चक्रपुराधिप जाणि(णी)इ रे, **व्याघ्रसिंह** नृप नाम ।
छट्ठ तणूं(णुं) करइ पारणूं(णु) रे, परमान्निइं अभिराम ॥३४॥ मोरा...
वसुधारा वरसइ तिहां रे, स्वामी करय विहार ।
तप जप संयम अणूं(णु)सरइ रे, सोल वरस सुविचार ॥३५॥ मोरा...
चैत्र शुद्ध तृतीया तिथिइं रे, दहनदैवत नक्षत्र ।
तिलक-तलइ प्रभु छठ धरी रे, पामइ नाण पवित्र ॥३६॥ मोरा...
समवसरण सुरवर रचइ रे, वप्र-त्रितय निवेश ।
कनककमल पद ठावतु रे, स्वामी करय प्रवेश ॥३७॥ मोरा...
वांणी योजनगामिनी रे, जिनवर करय वखाण ।
सुधा-मधुर वांणी सुणी रे, बूझइ बहु जण जाण ॥३८॥ मोरा...
कुंथुनाथ थापइ तिहां रे, गुण(णी)गणधर पांत्रीस ।
त्रिपदी तास प्रकासतुं रे, भासइ जगि जगदीस ॥३९॥ मोरा...
श्रीजिनपति आदेशथी रे, बोध लही बहु बुद्धि ।
भविकागम[३०] आगम् रचइ रे, प्रभु सेवइ मनशुद्धि ॥४०॥ मोरा...

---

२९. कृत्तिका (नक्षत्र) । ३०. भविकस्य कल्याणस्य आगमो यत्र, अथवा श्रवणार्थं भविकजनानां आगमो यत्र एवंविध आगमः – सिद्धान्तः ।

तीरथरक्षक जिन तणु रे, यक्ष हूउ **गंधर्व** ।
राजहंस रथ जेहनइं रे, सितरुचि-गर्व-अखर्व ॥४१॥ मोरा...
बिहुं दक्षणभुजि जे धरइ रे, शूल अनइं बीजपूर ।
तदितर करि बीजु(जो)रडुं रे, अंकुश रिपु चकचूर ॥४२॥ मोरा...
तीर्थसुरी नामिइं **बला** रे, वाहन जास मयूर ।
गौरवर्ण सोहइ सदा रे, नामिइं दुःकृत दूर ॥४३॥ मोरा...
यमणइ एकि बीजु(जो)रडुं रे, बीजइ शूल उदार ।
वामि मुखंढी(मुषुण्ढी?) करि धरइ रे, बीजइ पंकज सार ॥४४॥ मोरा...
कुंथुनाथ परिकर कहूं रे, साठि सहस मुनिनाथ ।
साठि सहस ऊपरि छसइं रे, मुनिनी सुगुण-सनाथ ॥४५॥ मोरा...
श्रावक एक लख ऊपरिइं रे, सहस उगण्यासी उदार ।
त्रिणि लाख वली श्राविका रे, सहस एकासी सार ॥४६॥ मोरा...
मुक्तिसमय जाणी करी रे, सहस मुनीसर साथ ।
शृंगि **समेत** तणइ चडइ रे, ध्यान धरइ जिननाथ ॥४७॥ मोरा...
राध बहुल पडवइ तिथिइं रे, दहनदैवत नक्षत्र ।
मास दिवस अनशन धरइ रे, पामइ पद सुपवित्र ॥४८॥ मोरा...
कुमरपणइ जेहनइं गमइ रे, वरस सहस त्रेवीस ।
ऊपरि साढां सातसइं रे, तेह नमुं निशिदीस ॥४९॥ मोरा...
राज्य चक्रि चारित्रनु रे, एहजि काल विशेस ।
सहस पंचाणउं जांणीइ रे, जिन सर्वायु अशेस ॥५०॥ मोरा...
धर्मसिंह पंडित तणा रे, प्रणमी चरण पवित्र ।
रत्नसिंह मुनिवर भणइ रे, कीधुं कुंथु चरित्र ॥५१॥ मोरा...

*॥ इति पण्डितश्री**धर्मसिंह**गणिशिष्य-पण्डित**रत्नसिंह**गणिविरचिते श्रीचतुर्विंशति-जिनस्तोत्रसङ्ग्रहे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीकुन्थुजिनस्तवनं सप्तदशम् ॥१७॥*

अरनाथ स्तवन

॥ राग-वइराडी ॥

अरजिन गुण पभणुं हवइ रे, प्रणमी तेहना पाय हो सुहज(ज्ज)न ।
हास्तिनपुर रलिआमणुं रे, सुभग **सुदर्शन** राय हो सुहज(ज्ज)न ॥१॥
अर जिनवर गुण गाईइ रे, थाईइ निरमल अंग हो सुहज(ज्ज)न,
पाईइ भोग अभंग हो सुहज(ज्ज)न ॥
धरिइ धर्मनुं रंग हो सुहज(ज्ज)न, शिवकमलानुं संग हो ॥ (द्रुपद)
तस पटरांणी जाणि(णी)इ रे, **देवी** जस अभिधान हो सुहज(ज्ज)न ।
दोगुंदक सुरनी परिइं रे, विलसइ सुख असमान हो सुहज(ज्ज)न ॥२॥ अर...
ग्रैवेयक नुमाथिकी रे, **धनपति** नरपति जीव हो सुहज(ज्ज)न ।
देवी कूखिइं अवतरइ रे, भोगवी भोग अभंग हो सुहज(ज्ज)न ॥३॥ अर...
फागुण शुदि द्वितीआ तिथिइं रे, रेवती नाम नक्षत्र हो सुहज(ज्ज)न ।
देखइ देवी दीपतां रे, चऊद सपन सुपवित्र हो सुहज(ज्ज)न ॥४॥ अर...
सुपन पाठक राइं तेडिआ रे, तेह करइ सुपन विचार हो सुहज(ज्ज)न ।
तीर्थंकर सुत पामसिउ रे, सुर-नर-नमित उदार हो सुहज(ज्ज)न ॥५॥ अर...
शुक्ति मुक्तामणिनी परिइं रे, गर्भ धरइ नृपनारि हो सुहज(ज्ज)न ।
मागशर शुदि दशमी तिथिइं रे, रेवती ऋक्ष विचारि हो सुहज(ज्ज)न ॥६॥ अर...
प्रसवइ सुत देवी सती रे, देह कनकरुचि सार हो सुहज(ज्ज)न ।
लांछन जास सोहइ सही रे, नंदावर्त उदार हो सुहज(ज्ज)न ॥७॥ अर...
दिसिकुमरी आवइ तिहां रे, लही जनम जिनराज हो सुहज(ज्ज)न ।
मनरंगिइं सघली मिली रे, करय सूतिनुं काज हो सुहज(ज्ज)न ॥८॥ अर...
इंद्र तणुं आसन चलइ रे, इंद्र आवइ तिणि ठाय हो सुहज(ज्ज)न ।
कर जोडी हरखिइं करी रे, प्रणमइ जिन जिनमाय हो सुहज(ज्ज)न ॥९॥ अर...
पंच रूपि प्रभुनइं लेई रे, मेरुशिखरि हरि जाय हो सुहज(ज्ज)न ।
इंद्र अवर आवइ तिहां रे, प्रणमइ प्रभुना पाय हो सुहज(ज्ज)न ॥१०॥ अर...
खीरजलधि जल पूरीआ रे, कणय रयणमय कुंभ हो सुहज(ज्ज)न ।
क्रमि क्रमि हरि हरखिइं करी रे, न्हवण करइ निर्दंभ हो सुहज(ज्ज)न ॥११॥ अर...
एक नाचइ खेलइ हसइ रे, गाइ गीत रसाल हो सुहज(ज्ज)न ।
उत्सव विविध विधिइं करइ रे, सुर किन्नर समकाल हो सुहज(ज्ज)न ॥१२॥ अर...

अंगूठइ अमृत ठवी रे, थापी जननीनइं पासि हो सुहज(ज्ज)न ।
नंदीश्वरि यात्रा करी रे, सुर जाइ सुरवासि हो सुहज(ज्ज)न ॥१३॥ अर...
नरपति घरि उत्सव करइ रे, सुर आविइं सविसेस हो सुहज(ज्ज)न ।
गीत गान जनमन हरइ रे, धवल मंगल वर वेस हो सुहज(ज्ज)न ॥१४॥* अर...
मणिमय आरु पेखिउ रे, सुपनि झलामल-धाम हो सुहज(ज्ज)न ।
तिणि कारणि राजा रचइ रे, कुंमर तणुं अर नाम हो सुहज(ज्ज)न ॥१४(१५)॥ अर...
लक्षण गुण वासिइं वसइ रे, दिनि दिनि वाधइ देव हो सुहज(ज्ज)न ।
सुर शिशूरूप धरी रमइ रे, स्वामि सारइ नित सेव हो सुहज(ज्ज)न ॥१५(१६)॥ अर...
क्रमि क्रमि यौवनवय धरइ रे, त्रीस धनुष तनु जाण हो सुहज(ज्ज)न ।
नृप-तनया अंगीकरइ रे, पितृ आदेश प्रमाण हो सुहज(ज्ज)न ॥१६(१७)॥ अर...
धीर धुरा धरणी धरइ रे, पालइ राज रसाल हो सुहज(ज्ज)न ।
सज्जन मन रंजइ सदा रे, रिपुजन केरु काल हो सुहज(ज्ज)न ॥१७(१८)॥ अर...
चक्र रयण तस ऊपनुं रे, तेज तणउं भरपूर हो सुहज(ज्ज)न ।
{तव उत्सव चक्री करइ रे, गयणंगणि घण तूर हो सुहज(ज्ज)न ॥१८(१९)॥ अर...
चक्रानुग चक्री चलइ रे, साधइ धरा षट खंड हो सुहज(ज्ज)न ।}*
सुर किन्नर नर जेहनी रे, मानइ आण अखंड हो सुहज(ज्ज)न ॥१९(२०)॥ अर...
देश साधनविधि भाखतां रे, वाधइ तवन प्रचार हो सुहज(ज्ज)न ।
तिणि कारणि तुम्हे जांणयो रे, अलं अधिक विस्तार हो सुहज(ज्ज)न ॥२०(२१)॥ अर...
हास्तिनपुरि प्रभु आविआ रे, सुर नर परिकर कोडि हो सुहज(ज्ज)न ।
सहस बत्रीस नरेसरू रे, दोय नमइ कर जोडि हो सुहज(ज्ज)न ॥२१(२२)॥ अर...
चउसठि सहस अंतेउरी रे, सुंदर सुभग सुरंग हो सुहज(ज्ज)न ।
लाख सवा वारांगना रे, भोगवइ भोग अभंग हो सुहज(ज्ज)न ॥२२(२३)॥ अर...
लाख चउरासी जाणि(णी)इ रे, हय गय रह अभिराम हो सुहज(ज्ज)न ।
कोडि छन्नूं वखाणि(णी)इ रे, पायक पूरइ काम हो सुहज(ज्ज)न ॥२३(२४)॥ अर...
चऊद रयण घरि जेहनइं रे, नवय निधान विधान हो सुहज(ज्ज)न ।
जनपद पुर पाटण बहू रे, नगर निगम अभिधान हो सुहज(ज्ज)न ॥२४(२५)॥ अर...

* आ गाथा हस्तप्रतमां पाछळथी उमेरेली छे ।

* { } गत पंक्तिओ मूल हस्त प्रतमांथी छेकी काढवामां आवी छे ।

इणि परि लीला भोगवइ रे, सुरपति जिम अरनाथ हो सुहज(ज्ज)न ।
जगि जेहनु जस जाणि(णी)इ रे, नमइ सुरासुर-साथ हो सुहज(ज्ज)न ॥२५(२६)॥ अर..
भव-नाटक मनि भावतु रे, प्रभु पामइ संवेग हो सुहज(ज्ज)न ।
लोकांतिक तव देवता रे, आवइ अति घण वेग हो सुहज(ज्ज)न ॥२६(२७)॥ अर...
मधुर वचन सुरनां सुणी रे, आणी चित्ति विवेक हो सुहज(ज्ज)न ।
तृण परि राज त्यजी करइ रे, निज सुतनइं अभिषेक हो सुहज(ज्ज)न ॥२७(२८)॥अर...
आसन कंपिइं आविआ रे, सुरपति सवि सविवेक हो सुहज(ज्ज)न ।
महीअलि मनरंगिइं मिली रे, करय उत्सव अतिरेक हो सुहज(ज्ज)न ॥२८(२९)॥ अर...
स्वामि आरोहइ पालखी रे, **विजयंती** तस नाम हो सुहज(ज्ज)न ।
आवइ सुरासुर परिवरिउ रे, **अंब-सहसवन** ठाम हो सुहज(ज्ज)न ॥२९(३०)॥ अर...
छट्ठु तणउ तप मनि धरइ रे, पंच मौष्टिक करइ लोच हो सुहज(ज्ज)न ।
भवसायर तरवा तणउ रे, कीधु मनि आलोच हो सुहज(ज्ज)न ॥३०(३१)॥ अर...
मागसिर शुदि एकादशी रे, रेवती शशि संयोग हो सुहज(ज्ज)न ।
राय सहससिउं उच्चरइ रे, व्रतदंडक गतशोग हो सुहज(ज्ज)न ॥३१(३२)॥ अर...
अपराजित नृप जाणि(णी)इ रे, **राजपुर** नयरनु नाथ हो सुहज(ज्ज)न ।
तिहां करइ खीरिइं पारणूं(णु) रे, तेह तरइ भवपाथ हो सुहज(ज्ज)न ॥३२(३३)॥ अर...
तप जप संय[म] अणुंसरइ रे, पालइ पंच आचार हो सुहज(ज्ज)न ।
त्रणि वरस मनसा वसिइं रे, भूतलि करय विहार हो सुहज(ज्ज)न ॥३३(३४)॥ अर...
अन्य दिवसि समता रसिइं रे, तरु-तलि वर सहकार हो सुहज(ज्ज)न ।
छट्ठु धरिइं केवल लहइ रे, पामी करमनु पार हो सुहज(ज्ज)न ॥३४(३५)॥ अर...
कार्त्तिक शुदि बारशि(सि) तिथिइं रे, निर्मल रेवती रिक्ष हो सुहज(ज्ज)न ।
भाव सयल संसारना रे, स्वामि लहइ परतक्ष हो सुहज(ज्ज)न ॥३५(३६)॥ अर...
समवसरण सुरवर रचइ रे, साल-त्रय सुविशाल हो सुहज(ज्ज)न ।
जिन पंकजि पद ठावतु रे, आवइ मंगलमाल हो सुहज(ज्ज)न ॥३६(३७)॥ अर...
स्वामि सुधा साधारणी रे, वाणी करइ विस्तार हो सुहज(ज्ज)न ।
भवियणजण भाविइं सुणइ रे, पामइ भव-निस्तार हो सुहज(ज्ज)न ॥३७(३८)॥ अर...
थापइ जस व्यापइ तिहां रे, प्रभु गणधर तेत्रीस हो सुहज(ज्ज)न ।
स्वामि प्रसाद करइ वली रे, त्रिपदी तस जगदीस हो सुहज(ज्ज)न ॥३८(३९)॥ अर...

गुणधर वर विरचइ वली रे, गणधर अंग अग्यार हो सुहृज(ज्ज)न ।
तीरथरक्षक जाणि(णी)इ रे, नाम **यक्षेंद्र** उदार हो सुहृज(ज्ज)न ॥३९(४०)॥
अर...

लोचन त्रिणि विराजतु रे, षणमुख शोभा जास हो सुहृज(ज्ज)न ।
शिखि(शंख?)-रथ तनुवन सामलुं रे, कर द्वादश छइ तास हो सुहृज(ज्ज)न
॥४०(४१)॥ अर...

बाण अनइं बीजु(जो)रडुं रे, खड्ग मुद्गर असमान हो सुहृज(ज्ज)न ।
पाश अभय दक्षण तणां रे, ए आयुध अभिधान हो सुहृज(ज्ज)न ॥४१(४२)॥ अर...
नकुल धनुष अंकुश वली रे, वर्म शूल अभिराम हो सुहृज(ज्ज)न ।
अक्षसूत्र वली जाणि(णी)इ रे, वाम करायुध नाम हो सुहृज(ज्ज)न ॥४२(४३)॥ अर...
शासनदेवी **धारणी** रे, नीलवरण तनुकंति हो सुहृज(ज्ज)न ।
केलि करइ कमलासना रे, जिन समरइ एकचिंति हो सुहृज(ज्ज)न ॥४३(४४)॥ अर...
मातुलिंग उत्पल धरइ रे, दक्षण भुजयुग जेह हो सुहृज(ज्ज)न ।
अक्षसूत्र पंकज ग्रहइ रे, वाम भुजद्वय तेह हो सुहृज(ज्ज)न ॥४४(४५)॥ अर...
हवइं परिवार सुणउ सहू रे, श्रमण सहस पंचास हो सुहृज(ज्ज)न ।
साठि सहस मुनिनी कहूं रे, भविअण पूरइ आस हो सुहृज(ज्ज)न ॥४५(४६)॥ अर...
सहस चउरासी आगला रे, श्रावक एक लख जास हो सुहृज(ज्ज)न ।
त्रणि लाख वलि श्राविका रे, सहस बहुत्तिरि तास हो ॥४६(४७)॥ अर...
मुक्तिसमय जाणी करी रे, स्वामि **समेतगिरि** जाइ हो सुहृज(ज्ज)न ।
अर जिनवर साथिइं तदा रे, सहस मुनीसर थाइ हो सुहृज(ज्ज)न ॥४७(४८)॥ अर...
मागशर शुदि दसमी तिथिइं रे, रेवती वर नक्षत्र हो सुहृज(ज्ज)न ।
मास दिवस अनशन लेई रे, पामइ धाम पवित्र हो सुहृज(ज्ज)न ॥४८(४९)॥ अर...
कुमरपणइ जेहनइं गयां रे, वरस सहस एकवीस हो सुहृज(ज्ज)न ।
नृपतिपणइ वली वुलीआ रे, वरस सहस एकवीस हो सुहृज(ज्ज)न ॥४९(५०)॥ अर...
चक्रवर्त्तिपद भोगविउं रे, वरस सहस एकवीस हो सुहृज(ज्ज)न ।
तीर्थंकरपद पामिउं रे, वरस सहस एकवीस हो सुहृज(ज्ज)न ॥५०(५१)॥ अर...
सहस चउरासी जाणि(णी)इ रे, जिन सर्वायु प्रमाण हो सुहृज(ज्ज)न ।
जे भविअण भाविइ भणइ रे, तेह घरि नितु कल्याण हो सुहृज(ज्ज)न ॥५१(५२)॥ अर...

धर्मसिंह पंडित तणउ रे, पामी चरण पसाय हो सुहज(ज्ज)न ।
रत्नसिंह मुनिवर भणइ रे, गायु अर जिनराय हो सुहज(ज्ज)न ॥५३॥* अर...

*॥ इति पण्डितश्री**धर्मसिंह**गणिशिष्य-पण्डित**रत्नसिंह**गणिविरचिते श्रीचतुर्विंशति-स्तोत्रसङ्ग्रहे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीअरजिनस्तवनं अष्टादशम् ॥१८॥*

मल्लिनाथ स्तवन

॥ ढाल-आषाढाभूतिनु ॥ प्रिउडउ रे घरि आवइ ॥ राग-धन्यासी ॥

तस चरणपंकज अणुसरी, मनि धरी तेहनुं ध्यान ।
श्री**मल्लि** जिन गुण गाईइ, वर नयरी रे **मिथिला** अभिधान कि ॥१॥
मल्लि जिनाधिप थुणिइ, फल लीजइ रे नरभवनुं आज कि ।
कीजइ रे शिवपुरनुं राज कि (द्रुपद)
तिहां **कुंभ** नरपति-राजीउ, गाजीउ जस भडवाय ।
तस नारि नाम **प्रभावती**, गुण गावती रे जेहना सुरराय कि ॥२॥ मल्लि...
वैजयंत सुरसदनि जे, नृप **महाबलनु** जीव ।
सुरलोकनां सुख भोगवइ, तेहनइ छइ पोतइ पुण्य अतीव कि ॥३॥ मल्लि...
वर मास फागुण जाणीइ, तेहनु जे शुदि पक्ष ।
सुरलोकथी ते सुर चिवइ, तिथि चउथि समन्वित अश्विनी ऋक्ष कि ॥४॥ मल्लि...
नृप-सुंदरी उरि अवतरइ, रयणी-समयि सुविचार ।
निशि नीद्रभरि सूति सती, इणि अवसरि सुपन लहइ दस च्यार कि ॥५॥ मल्लि...
गजराज-मंथर-गामिनी, भामिनी निज भरतार ।
कर जोडि पूछइ ते कहइ, तीर्थंकरनु होसिइ अवतार कि ॥६॥ मल्लि...
अनुक्रमिइं गर्भ धर्या पछी, अतिक्रम्या जव त्रिणि मास ।
तव देविनइं मनि ऊपनु, पुष्प-माल्य शयननउ दोहद तास कि ॥७॥ मल्लि...
ते देवताए पूरिउ, हवइ मागशर शुदि पक्ष ।
एकादशी तिथि अश्वनी, प्रसवइ तव देवि(वी?) सुता परतक्ष कि ॥८॥ मल्लि...

---

* आगळ कौंसमां आलेखाएल गाथाओना चरणो मान्य गणी तेमना पद्यांकने नंबरमां उमेरता काव्यमां आलेखायेल, ५३ नं. साचो गणाय.

तनु नीलमणि रलिआमणुं, घट प्रकट जस अहिनाण ।
आश्चर्य ए आगमि कहिउं, पूरव कृत कर्म तणउं परिमाण कि ॥९॥ मल्लि...
जे पूर्व भवि माया करी, तिणि कीउ तप बहु भेद ।
तेहनुं फल तिहां पामीउं, तीरथंकर रे होआ स्त्री वेद कि ॥१०॥ मल्लि...
आवइ छपन्न कुमारिका, ते करइ सूति अशेस ।
जिन जनम-उत्सव कारणिइं, इंद्रादिक सुर आवइ सविसेस कि ॥११॥ मल्लि...
जिन जननी गुण वर्णन करइ, हरि धरी पंच सरूप ।
गिरि-शिखरि जई शिशुनइं लेई, करइ जनम-उत्सव सुर केरु भूप कि ॥१२॥
मल्लि...
मणि कनकमय कलशे करी, जिन(हरि) करइ हरि(जिन) अभिषेक ।
घन नाद सुरदुंदुभि तणा, गुण गाइ नृत्य करइ सुविवेक कि ॥१३॥ मल्लि...
जिन जननी पासि ठवी, करइ मणि कनक केरी वृष्टि ।
सुरलोकि सुरपति संचरइ, **नंदीश्वरि** यात्रा करी मन तुष्टि कि ॥१४॥ मल्लि...
निज सदनि नृप उत्सव करइ, मनि धरइ हरख अपारि ।
तस नाम मल्ली(ल्लि) नृप धरइ, पुष्पमाल्य शयन दोहद अनुसारि कि॥१५॥ मल्लि...
जिननाथ जब यौवन धरइ, तनुमान धनु पंचवीस ।
लोकांतिकामर आविआ, व्रत लेवा समय जणावइ ईस कि ॥१६॥ मल्लि...
जिन दान दिइ संवत्सरी, आवइ सुरासुरवृंद ।
अभिषेक व्रत लेवा करइ, पुर परिसरि वन जिहां **सहसमाकंद** कि ॥१७॥
मल्लि...
बइसी **जयंती** पालखी, आवइ तिहां भगवान ।
प्रभु पंच(चउ?) मौष्टिक लोच लिइ, सुर विरचइ नृत्य करइ गुणगान कि ॥१८॥
मल्लि...
नर बाह्य-परिकर योग्य जे, त्रिणि सइं साथि उदार ।
स्त्री मध्ये-परिकर योग्य जे, तेह त्रिणिसइं साथि धरइ व्रतभार कि ॥१९॥ मल्लि...
सित मार्गशिर एकादशी, अश्विनी कहीइ ऋक्ष ।
पूर्वाह्न वेलां उच्चरइ, व्रतदंडक तप तपइ अष्टम दक्ष कि ॥२०॥ मल्लि...
तेणइ दिनि केवल लहइ, तरु-तलइ चारु अशोक ।
केवल तणउ महिमा करइ, सुर विरचइ समवसरण सुश्लोक कि ॥२१॥ मल्लि...

वाणी सुधा-साधारणी, दिइ देशना जगदीस ।
तिहां बोध बहु जन पामिआ, जिन थापीआ गणधर अट्ठावीस कि ॥२२॥ मल्लि...
गुणधा(ध)र गणधर वृंदनइ, प्रभु करइ त्रिपदी दान ।
तव अंग पूरव ते रचइ, जिनवचन तणउ महिमा असमान कि ॥२३॥ मल्लि...
तेणइ जि वनि भगवंतनइं, **विश्वसेन** नामि नरिंद ।
खीरिइं करावइ पारणुं, तस गुण थुणइ सयल सुरासुरवृंद कि ॥२४॥ मल्लि...
नामिइं **कुबेर** वखाणीइ, तस तीर्थरक्षक यक्ष ।
तनुरंग इंद्रायुध समु, च्यारि वदन मतंगज रथ परतक्ष कि ॥२५॥ मल्लि...
जस च्यारि दक्षण भुज अछइ, तिणि धरइ आयुध एह ।
वरदान परशु वखाणीइ, शूल अभयद च्यारइ कहीइ तेह कि ॥२६॥ मल्लि...
वाम च्यारि करि बीजु(जो)रडुं, अक्षसूत्र मुद्गर शक्ति ।
शासनसुरी तस जाणीइ, **वैरोट्या** मल्लि करइ बहु भक्ति कि ॥२७॥ मल्लि...
तनु श्यामरुचि कमलासना, भुज दोय दक्षण जेह ।
तिणि धरइ देवी दीपती, वरदान अनइं अक्षसूत्र सनेह कि ॥२८॥ मल्लि...
कर वाम युगि बीजोरडुं, अनइं शक्ति अरिअण-काल ।
शासनसुरी सेवइ जिके, तस घरि हुइ नित मंगलमाल कि ॥२९॥ मल्लि...
परिवार स्वामि तणउ सुणउ, जस नमइ जे जगि जाण ।
च्यालीस सहस मुनीसरू, मुनिनी पंचावन सहस प्रमाण कि ॥३०॥ मल्लि...
एक लाख श्रावक जाणीइ, अनइं असी सहस समेत ।
त्रिणि लाख कहीइ श्राविका, वली सित्तरि सहस समुज्वल चेत कि ॥३१॥ मल्लि...
निर्वाण समय लही करी, पांचसइ मुनिनी साथ ।
मुनि पांचसइ वली चालीआ, **सम्मेतशिखरि** संवेग-सनाथ कि ॥३२॥ मल्लि...
सित पक्ष फागुण जाणीइ, द्वादशी भरणी ऋक्ष ।
एक मास अनशन उच्चरी, निर्वाण-सदन पामइ परतक्ष कि ॥३३॥ मल्लि...
प्रभु आयु मांन कहूं हवइ, एक वरस शत कौमार ।
शत वरस ऊणुं जाणीइ, पंचावन सहस धरइ व्रतभार कि ॥३४॥ मल्लि...
जिन सहस पंचावन समा, सर्वायु पूरी सार ।
बहु भविकजन तारी करी, श्रीमल्लि जिणंद पाम्या भव पार कि ॥३५॥ मल्लि...

कवि-कोटि-कुल-कोटीर-मणि, धर्मसिंह पंडितराय ।
तस चरणपंकज मनि धरी, मिइं गाईआ मल्लि जिणेसर पाय कि ॥३६॥ मल्लि...

*॥ इति पण्डितश्री**धर्मसिंह**गणिशिष्य-पण्डित**रत्नसिंह**गणिविरचिते श्रीचतुर्विंशति-जिनस्तोत्रसङ्ग्रहे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीमल्लिजिनस्तवनं एकोनविंशतितमम् ॥१९॥*

मुनिसुव्रतस्वामि स्तवन

॥ राग- गुडी ॥ लघु विवाहलानी ढाल ॥

हवइं **मुनिसुव्रत** गाईइ ए, निज जन्म तणउं फल पाईइ ए ।
नयर **राजगृह** जाणीइ ए, तिहां भूप **सुमित्र** वखाणीइ ए ॥१॥
देवि **पद्मा** तस भामिनी ए, सवि सतीय शिरोमणि स्वामिनी ए ।
नारिसिउं राय रंगिइं रमइ ए, सुरपति परि काल केतु गमइ ए ॥२॥
जीव **सुरज्येष्ठ** भूपति तणउ ए, पोतइ सुकृत तणुं संचय घणउ ए ।
दसम स्वर्गिं सुख भोगवी ए, निज आयु पूरणपणइ जोगवी ए ॥३॥
मास श्रावण घण सोहतु ए, पूनिम दिन जन-मन मोहतु ए ।
श्रवण ऋक्ष शशि संचरइ ए, सुर चिवीय राणी उरि अवतरइ ए ॥४॥
सुपन चौद देखइ सती ए, पूछइ तदा पदमिनी निज पती ए ।
पति कहइ निज मति निरखतु ए, जिन सुत हसिइ संपति वरषतु ए ॥५॥
मास पूरण वुल्या जिसिइं ए, **पदमावती** पुत्र प्रसवइ तिसिइं ए ।
ज्येष्ठ बहुल अष्टमि समइ ए, तव श्रवण नक्षत्र जन-मन गमइ ए ॥६॥
आसन कंपि आवइ मिली ए, करइ कुमरीअ उत्सव मनि रुली ए ।
इंद्र इंद्रासन तव चलइ ए, जिन जनम लही सुर सवि मिलइ ए ॥७॥
पालकारूढ आवइ तदा ए, जिन जननीअ गुण पभणइ मुदा ए ।
एक रूपिइं प्रभु करि करइ ए, बिहुं रूपि करि चामर अणुसरइ ए ॥८॥
छत्र शिरि एकं रूपिइं धरइ ए, एकइं वज्र ऊलालतु संचरइ ए ।
इणि परिइं पंच रूपिइं करी ए, सोवनगिरिशिखरि आवइ हरी ए ॥९॥
सवि सुरपति तिहां संचरइ ए, जिन जनम-उत्सव तणु विधि करइ ए ।
सोविन रयण माटी तणा ए, आणइ अनुपम सुर घट अति घणा ए ॥१०॥

खीर-अंभोधि अंभिइं भरइ ए, अभिषेक जिननाथ मस्तकि करइ ए ।
केसर चंद्र चंदनि करी ए, तनु जिन तणउ चारु चरचइ हरी ए ॥११॥
एक नाचइ हसइ उल्हसइ ए, एक गीत गाइ धुरि धसमसइ ए ।
ताल कंसाल मादल मिलइ ए, उत्सव करी हरि हरखिइं चलइ ए ॥१२॥
स्वामिनइं मात पासिइं धरी ए, **नंदीश्वर** द्वीपि यात्रा करी ए ।
प्रभु तणा गुण मुखि उच्चरी ए, निज निज सुरलोकि जाइ हरी ए ॥१३॥
धवल मंगल जन-मन हरइ ए, सुत जनम-उत्सव नरपति करइ ए ।
जल जलधर जिम वरषतु ए, दीइ दान भूपति अति हरखतु ए ॥१४॥
गर्भ महिमाइं माता हवी ए, मुनिजन परिं सुव्रता सुर-तवी ए ।
नाम दिइ तेह भणी सुत तणउं ए, मुनिसुव्रत कुमर रलीआमणउं ए ॥१४(१५)॥
सुरतरु जिम जिन वाधतु ए, क्रमि क्रमि यौवनवय साधतु ए ।
वीस धनु देह उन्नत धरइ ए, प्रभु कूर्म लांछन जन-मन हरइ ए ॥१५(१६)॥
स्यामलवरण सोहाकरू ए, जस सघन घनाघन सुंदरू ए ।
राजसुता परणइ घणी ए, तनुकंति सोहंति सोविन तणी ए ॥१६(१७)॥
जनक आदेश अंगीकरइ ए, प्रभु दुर्धर धरणि धुरा धरइ ए ।
ईति अनीति भय टालतु ए, गमइ काल केतु प्रजा पालतु ए ॥१७(१८)॥
संग संवेग जव मनिधरइ ए, **लोकांतिक** देव जय जय करइ ए ।
दान संवत्सर प्रभु तदा ए, जल जलधर जिम वरसइ मुदा ए ॥१८(१९)॥
वृंद पुरंदर आवीआ ए, जिनराजना गुण मनि भावीआ ए ।
शिबिका मणिगण-राजिता ए, आरोहइ जिन **अपराजिता** ए ॥१९(२०)॥
नीलगृह नामि जे वन अछइ ए, तिहां पंच मौष्टिक विरचइ पछइ ए ।
फागुण शुदि बारशि(सि) दिनिइं ए, तव श्रवण नक्षत्र निर्मल मनिइं ए ॥२०(२१)॥
सहस मुनि साथि संयम धरइ ए, करइ छट्ठ व्रतदंडक उच्चरइ ए ।
नयर **राजगृह** जाणीइ ए, तिहां **ब्रह्मदत्त** भूप वखाणीइ ए ॥२१(२२)॥
तेह घरि जिनवर संचरइ ए, तिहां पारणूं(णुं) परमान्निइं करइ ए ।
प्रभु पदपंकज जिहां धरइ ए, नृप मणिमय पीठ तिहां करइ ए ॥२२(२३)॥
देव-वाजित्र वाजइ तदा ए, तस घरि सुर वसु वरसइ मुदा ए ।
असह परीसह बहु सहइ ए, प्रभु दुर्वह चरण धुरा वहइ ए ॥२३(२४)॥

मास अग्यार वुल्या जिसिइं ए, प्रभु ध्यान धरइं निर्मल तिसिइं ए ।
ताम तप छट्ठ केरउ करइ ए, चंपक-तरु-तलय केवल वरइ ए ॥२४(२५)॥
ततखिणि इंद्र आसन चलइ ए, सुरनायक सवि आवी मिलइ ए ।
समवसरण विरचइ मुदा ए, प्रभु बइसइ सिंहासन तदा ए ॥२६(२७)॥
चारु चतुर्मुख राजतु ए, जाणे सघन घनाघन गाजतु ए ।
वाणीअ योजनगामिनी ए, सुणइ सुर नर देशना स्वामिनी ए ॥२७(२८)॥
गुणधर गणधर थापीआ ए, अष्टादश जगि जस व्यापीआ ए ।
प्रभु त्रिपदी पामी तदा ए, सिद्धांत रचइ गणधर मुदा ए ॥२८(२९)॥
तीरथरक्षक जाणीइ ए, यक्ष **वरुण** नाम वखाणीइ ए ।
लोचन त्रण्य विराजतु ए, जगि चारु चतुर्मुख गाजतु ए ॥२९(३०)॥
स्वेत जटा छइ जेहनइं ए, अनइं मूषक (वृषभ) रथ छइ तेहनइं ए ।
च्यारि दक्षण भुज सोहता ए, बोलूं(लुं) च्यारि आयुध मन मोहता ए ॥३०(३१)॥
बाण गदा बीजु(जो)रडुं ए, चउथूं(थुं) शक्ति आयुध अति रूअडुं ए ।
च्यारि अछइ वाम जे वली ए, तेहनां आयुध सांभलउ सहु मिली ए ॥३१(३२)॥
नकुल अंबुज धनु जाणि(णी)इ ए, चउथउ परशु आयुध वखाणीइ ए ।
तीरथ रक्षा जे करइ ए, **नरदत्ता** देवी मन हरइ ए ॥३२(३३)॥
भद्रासनि बइसइ मुदा ए, तनु गौरवरण सोहइ सदा ए ।
दक्षण दोइ भुज जेहनइं ए, अक्षसूत्र वरदयुत तेहनइं ए ॥३३(३४)॥
वाम भुजद्वय जे धरइ ए, बीजु(जो)रूं शूल शोभा करइ ए ।
प्रभु-परिवार वखाणीइ ए, त्रीस सहस मुनीसर जाणीइ ए ॥३४(३५)॥
सहस पंचावन तप तपइ ए, मुनिनी जिननाम सदा जपइ ए ।
सहस बहुत्तिरि सोहता ए, एक लाख श्रावक मन मोहता ए ॥३५(३६)॥
साढ त्रिणि लाख बोलूं(लुं) वली ए, गुणभाविका श्राविका सवि मिली ए ।
हवइं निर्वाण जाणी करी ए, मुनि सहससिउं शिवगति-मति धरी ए ॥३६(३७)॥
सम्मेतशिखरिं सिरि आवीआ ए, तव ध्यान निर्मल मनि भावि(वी)आ ए ।
ज्येष्ठ बहुल नवमी समइ ए, तव श्रवण नक्षत्रसिउं मन रमइ ए ॥३७(३८)॥
मास दिवस अनशन धरी ए, स्वामीइ मुगति-शि(सि)री वरी ए ।
मुगति-महोत्सव सुर करइ ए, प्रभुनुं यश त्रिभुवनि विस्तरइ ए ॥३८(३९)॥

कुमरपणइ जस जाणीइ ए, साढा सात सहस वखाणीइ ए ।
सहस पन्नर नरपतिपणइ ए, साढा सात सहस व्रत मनि गणइ ए ॥३९(४०)॥
स्वामि सर्वायु वखाणीइ ए, वरस सहस त्रीस मनि आणीइ ए ।
थुणिउ जिणेसर वीसमु ए, मनमाहिइं निरंतर वीसमु ए ॥४०(४१)॥
धर्मसिंह पंडित तणउ(णु) ए, मनरंगि पसाय पामी घणु ए ।
सुव्रत जिनवर गाईउ ए, इह भवि पर-भवि सुह पाईउ ए ॥४१(४२)॥

*॥ इति पण्डितश्री**धर्मसिंह**गणिशिष्य-पण्डित**रत्नसिंह**गणिविरचिते श्रीचतुर्विंशति-जिनस्तोत्रसङ्ग्रहे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीमुनिसुव्रतस्वामिस्तवनं विंशतितमम् ॥२०॥*

नमिनाथ स्तवन

॥ राग- मारुणी ॥ ढाल - विणजारानु ॥

विणजारा रे पयपंकय पणमेवि, नमि जिनवर गुण गाईइ विणजारा रे ।
विणजारा रे तास संबंध संखेवि, हरख धरी बोलूं(लुं) हवइ विणजारा रे ॥१॥
विणजारा रे नयरी **मिथिला** नाम, इंद्रपुरी सम सोहती विणजारा रे ।
विणजारा रे सज्जन पूरइ काम, राय **विजय** तिहां राजीउ विणजारा रे ॥२॥
विणजारा रे **वप्रा**देवी तास, भुवनविभूषण भामिनी वणजारा रे ।
विणजारा रे सुकृत तणउ आवास, सतीय शिरोमणि स्वामिनी विणजारा रे ॥३॥
विणजारा रे **अपराजित** सुरलोकि, जीव **सिद्धारथ** नृप तणउ विणजारा रे ।
विणजारा रे तेह च्यवइ गतशोक, वप्रा कूखिइं अवतरइ विणजारा रे ॥४॥
विणजारा रे आसो मास उदार, पूनिम अश्विनी जाणीइ विणजारा रे ।
विणजारा रे सुपन लहइ सुविचार, पउढी देवि(वी?) निद्रावशिइं विणजारा रे ॥५॥
विणजारा रे आवी प्रियनइं पासि, सुधा मधुर वांणी वदइ विणजारा रे ।
विणजारा रे सूती सुखि आवासि, माझिम-रयणि एणइ समइ विणजारा रे ॥६॥
विणजारा रे सुपन लहियां सुह-हेत, पहिलइ मयगल मलपतु विणजारा रे ।
विणजारा रे बीजइ वृषभ सुसेत, त्रीजइ सिंह सोहामणु विणजारा रे ॥७॥
विणजारा रे चउथइ कमला सार, कुसुम-माल वली पांचमइ विणजारा रे ।
विणजारा रे छट्ठइ चंद्र उदार, सहसकिरण कहूं सातमइ विणजारा रे ॥८॥
विणजारा रे आठमइ धज उत्तंग, पूर्ण कुंभ नुमइ वली विणजारा रे ।
विणजारा रे दसमइ सरवर संग, खीरसमुद्र अग्यारमइ विणजारा रे ॥९॥

विणजारा रे बारमइ सुरगृह जोइ, रयणराशि प्रभु तेरमइ विणजारा रे ।
विणजारा रे चऊदमइ पावक होइ, एह तणूं(णुं) फल सिउं हसिइ विणजारा रे ॥१०॥
विणजारा रे निसुणी वाणी विशाल, प्रिय बोलइं प्रमदा प्रतिइं विणजारा रे ।
विणजारा रे एह सपन सुरसाल, कुलमंडन सुत पामसिउ विणजारा रे ॥११॥
विणजारा रे गर्भ धरइ नृपनारि, मणि रोहण-धरणी परिइं विणजारा रे ।
विणजारा रे अवर नही संसारि, जिनजननी सरखी सिरइ विणजारा रे ॥१२॥
विणजारा रे अधिक हूआ नव मास, सुत प्रसवइ तव सा सती विणजारा रे ।
विणजारा रे अश्विनी ऋक्ष प्रकास, श्रावण वदि अष्टमि(मी?) तिथिइं विणजारा रे ॥१३॥
विणजारा रे सोविनवन जस देह, नीलकमल लंछन भलउं विणजारा रे ।
विणजारा रे दिसिकुमरी गुणगेह, सूतिकृत्य आवी करइ विणजारा रे ॥१४॥
विणजारा रे अवधिज्ञानि सुरिंद, जाणी जन्म जिणंदनउ विणजारा रे ।
विणजारा रे आवइ मनि आणंद, सुर परिवारिइ परिवरिउं विणजारा रे ॥१५॥
विणजारा रे प्रणमी हरि जिन-अंब, शिशु लेई सुरगिरि चलइ विणजारा रे ।
विणजारा रे तव आवइ अविलंब, सयल सुरासुर हरखता विणजारा रे ॥१६॥
विणजारा रे सोविन मणिमय कुंभ, वदन जोअण जस जाणीइ विणजारा रे ।
विणजारा रे पूरी निर्मल अंभ, न्हवण करइ हरखिइं घणइ विणजारा रे ॥१७॥
विणजारा रे उत्सव करीअ असेस, मात पासि शिशुनइं ठवइ विणजारा रे ।
विणजारा रे सोविन वृष्टि विशेष, विरची हरि निज घरि गमइ विणजारा रे ॥१८॥
विणजारा रे पुत्र महोत्सव ताम, राजा निज मंदिर करइ विणजारा रे ।
विणजारा रे सुतनउं दिइ नमि नाम, शत्रु नमाव्या जेह भणी विणजारा रे ॥१९॥
विणजारा रे क्रमि क्रमि वाधइ बाल, ऊजल पखि जिम चंद्रमा विणजारा रे ।
विणजारा रे यौवनवय सुरसाल, धनुष पन्नर तनु अणुसरइ विणजारा रे ॥२०॥
विणजारा रे पामी पितृ आदेश, राजसुता अंगीकरइ विणजारा रे ।
विणजारा रे भोग्यकरम लही लेश, धरणी धीर धुरा धरइ विणजारा रे ॥२१॥
विणजारा रे पालइ राज उदार, सुरपति परि सुख भोगवइ विणजारा रे ।
विणजारा रे जाणी अथिर संसार, मनि संवेग धरइ शिरइ विणजारा रे ॥२२॥
विणजारा रे तव **लोकांतिक** देव, संयम समय आवी कहइ विणजारा रे ।
विणजारा रे स्वामी ततखिणमेव, व्रत लेवा उद्यम वहइ विणजारा रे ॥२३॥

विणजारा रे एक वरस पर्यंत, दान दीइ जलधर परिइं विणजारा रे ।
विणजारा रे सुव्रत सुत गुणवंत, जिनपति निज थानकि धरइ विणजारा रे ॥२४॥
विणजारा रे आवइ चउसठि इंद, व्रत-अभिषेक करइ तदा विणजारा रे ।
विणजारा रे आरोहइ जिनचंद, नामि **देवकुरु** पालखी विणजारा रे ॥२५॥
विणजारा रे सहस नराधिप साथ, **सहसरसाल** वनंतरिइं विणजारा रे ।
विणजारा रे पंच मुष्टि करी नाथ, संयमदंडक उच्चरइ विणजारा रे ॥२६॥
विणजारा रे बहुल नवमि(मी?) शुचि मास, अश्विनी ऋक्ष वखाणीइ विणजारा रे ।
विणजारा रे रंभा खेलइ रास, सुरपति जिनगुण उच्चरइ विणजारा रे ॥२७॥
विणजारा रे **दत्त** नराधिप नाम, नयर **वीरपुर** राजीउ विणजारा रे ।
विणजारा रे खीरिइं करइ तस धाम, छट्ठ तणूं(णुं) प्रभु पारणूं(णुं) विणजारा रे ॥२८॥
विणजारा रे विबुध करइ वसु वृष्टि, सुरदुंदुभि वाजइ वली विणजारा रे ।
विणजारा रे नृपति धरइ मन तुष्टि, रत्नपीठ विरचइ रुली विणजारा रे ॥२९॥
विणजारा रे चतुरपणइ चारित्र, निरतीचार समाचरइ विणजारा रे ।
विणजारा रे जिनपति पुण्य-पवित्र, इम नव मास अतिक्रमइ विणजारा रे ॥३०॥
विणजारा रे मार्गशीरष शुदि पक्ष, तिथि अग्यारसि अश्विनी विणजारा रे ।
विणजारा रे नामि बकुल जे वृक्ष, छट्ठ धरइ प्रभु तेह तलइ विणजारा रे ॥३१॥
विणजारा रे पामइ केवलज्ञान, घातिकर्मनउ क्षय करी विणजारा रे ।
विणजारा रे समवसरण असमान, सुरवर तिहां विरचइ वली विणजारा रे ॥३२॥
विणजारा रे उदयाचलि जिम भाण, तिम सिंहासनि सोहतु विणजारा रे ।
विणजारा रे स्वामी करय वखाणि, निसुणइ बारइ परषदा विणजारा रे ॥३३॥
विणजारा रे बोध देई गुण गेह, गणधर सत्तर थापीआ विणजारा रे ।
विणजारा रे आपइ त्रिपदी तेह, नेह धरी आगम रचइ विणजारा रे ॥३४॥
विणजारा रे शासनरक्षक यक्ष, **भ्रकुटी** नामि वखाणीइ विणजारा रे ।
विणजारा रे च्यारि वदन परतक्ष, लोचन त्रिणि विराजतु विणजारा रे ॥३५॥
विणजारा रे सोविनवन्न शरीर, मूषक(वृषभ?) रथ छइ जेहनइ विणजारा रे ।
विणजारा रे धीर धुरंधर वीर, आठ अछइ भुज तेहनइ विणजारा रे ॥३६॥
विणजारा रे दक्षण जे कर च्यारि, आयुध तेहना जांणीइ विणजारा रे ।
विणजारा रे मुद्गर अभयद सार, शक्ति अनइं बीजोरडुं विणजारा रे ॥३७॥

विणजारा रे वाम च्यारि भुज जेह, वज्र नकुल पशु(शृं) जाणीइ विणजारा रे ।
विणजारा रे अक्षसूत्र वली तेह, आयुध च्यार वखाणीइ विणजारा रे ॥३८॥
विणजारा रे शासनदेवी स्वामि, राजहंस वाहन वहइ विणजारा रे ।
विणजारा रे **गांधारी** निज नामि, श्वेतवर्ण तनु जे धरइ विणजारा रे ॥३९॥
विणजारा रे जिमणा दोइ कर जास, वरद खड्गधर जाणीइ विणजारा रे ।
विणजारा रे डावा दोइ क[र] तास, बीजपूर-युग माणीइ विणजारा रे ॥४०॥
विणजारा रे हवइ प्रभुनउ परिवार, वीस सहस मुनि जेहनइं विणजारा रे ।
विणजारा रे महसती सुविचार, सहस एकतालीस तेहनइं विणजारा रे ॥४१॥
विणजारा रे सहस सित्तिरि संजुत्त, एक लाख श्रावक कहूं विणजारा रे ।
विणजारा रे सहस च्यालीस संथु(यु?)त्त, त्रणि लाख वली श्राविका विणजारा रे॥४१॥
विणजारा रे आवइ शिखरि **सम्मेत**, मोक्षसमय जाणी करी विणजारा रे ।
विणजारा रे मुनिवर सहस समेत, मास एक अनशन धरइ विणजारा रे ॥४३॥
विणजारा रे अश्विनी नाम नक्षत्र, राध बहुल दशमी तिथिइं विणजारा रे ।
विणजारा रे पामइ परम पवित्र, मुक्तिधाम जिनवर गमइ विणजारा रे ॥४४॥
विणजारा रे सहस अढी जस होइ, वरस कुमरपदवीपणइ विणजारा रे ।
विणजारा रे सहस पांच नृप जोइं, सहस अढी संयम भणइ विणजारा रे ॥४५॥
विणजारा रे वरस सहस दस देव, जास सर्वायु वखाणीइ विणजारा रे ।
विणजारा रे देव करइ जस सेव, श्रीनमि जिन मनि आणीइ विणजारा रे ॥४६॥
विणजारा रे **धर्मसिंह** गुरुराय, नरवर जस सेवा करइ विणजारा रे ।
विणजारा रे प्रणमी तेहना पाय, श्रीनमि जिनवर गाईउ विणजारा रे ॥४७॥

*॥ इति पण्डितश्री**धर्मसिंह**गणिशिष्य-पण्डित**रत्नसिंह**गणिविरचिते श्रीचतुर्विंशति-जिनस्तोत्रसङ्ग्रहे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीनमिजिनस्तवनं एकविंशतितमम् ॥२१॥*

नेमिनाथ स्तवन

॥ राग- इंदोला गुडी ॥ ढाल - आषाढाभूतिनु ॥ विषय न गांजीइ - ए देशी ॥

नेमि जिणेसर पय नमी, संपति सयल निवास ।
स्वामि तणा गुण वर्णवउं, मझ मनि एह छइ वली आसो रे ॥

नेमि गुण गाईइ,
जिम मनवंछित सुह कामो रे, सवि संपति मिलइ,
अनइं वली मुगतिनूं(नुं) धामो रे, दुख दूरि पलइ ॥ (द्रुपद)
नयर **सू(सउ)रीपुर** जाणीइ, **समुद्रविजय** तिहां राय ।
शिवादेवी तस सुंदरी, नामिइ पातक जायो रे ॥२॥ नेमि...
अन्न दिवसि निशि पुण्यवशि, पउढी नीद्र-मझारि ।
समुद्रविजय नृप भामिनी, सुपन लहइ दस च्यारो रे ॥३॥ नेमि...
जीव **शंख** राजा तणउ, **सर्वारथसिद्धि** जेह ।
सुर भवनां सुख भोगवी, ज्ञान सहित च्यवइ तेहो रे ॥४॥ नेमि...
कार्त्तिक वदि तिथि द्वादशी, चित्रा चारु नक्षत्र ।
शिवादेवी उरि अवतरइ, पूरव पुण्य-पवित्रो रे ॥५॥ नेमि...
सुपन तणूं(णुं) फल स्वामिनइं, पूछइ प्रमदा जाम ।
तीर्थंकर सुत पामसिउ, इसिउं अ वदइ तामो रे ॥६॥ नेमि...
सुणी वयण हरखी हीइ, गर्भ वहइ सा ताम ।
मणि रोहण-धरति परिइं, मनवंछित लहइ कामो रे ॥६(७)॥ नेमि...
श्रावण शुदि तिथि पंचमी, चित्रा शशिधर भोग ।
प्रसवइ सुत देवी शिवा, शुभ मुहूरतनुं संयोगो रे ॥७(८)॥ नेमि...
सूति-महोत्सव कारणि, आवइ कुमरी ताम ।
सूतिकृत्य हरखिइं करी, जाइ निज निज धामो रे ॥८(९)॥ नेमि...
आवइ सुरवर सवि मिली, जनम लही मनरंगि ।
पय प्रणमी प्रभुनइं लेई, चालइ सुरगिरिनइं शृंगि{इं}रे ॥९(१०)॥ नेमि...
कनक कलश निर्मल जलिइं, पूरी हरि अभिषेक ।
जिनवर शिरि हरखिइं रचइं, मनि धरइ विविध विवेको रे ॥१०(११)॥ नेमि...
मात पासि शिशुनइं धरी, वरसी वसु सुरराय ।
नंदीश्वरि यात्रा करी, जाइ निज निज ठायो रे ॥११(१२)॥ नेमि...
अरिष्टरत्नमइ चक्रनी, धारा निरमल दीठ ।
शिवादेवी सुपनंतरिइं, तव मनि हरख पईठो रे ॥१२(१३)॥ नेमि...
तिणि कारणि सुतनुं दीइ, **अरिष्टनेमि** अभिधान ।
मात पिता मनरंग-भरि, वरसइ अविरल दानो रे ॥१३(१४)॥ नेमि...

सामलवन(न्न) सोहइ सदा, लांछन शंख विशाल ।
प्रभु दिनि दिनि वृद्धिइं चडइ, सुरगिरि जिम सुरसालो रे ॥१४(१५) नेमि...
क्रमि क्रमि जिन यौवन धरइ, दस धनु तनु उत्तंग ।
मानिनिजन मन मोहतु, सोहइ सरल सुरंगो रे ॥१५(१६)॥ नेमि...
अन्न दिवसि रस-रभस-वशि, देवि(वी?) शिवानउ पूत ।
रंगि रमंतु **हरि** तणइ, आयुधसदनि पहूतो रे ॥१६(१७)॥ नेमि...
आयुध सन्निधि आवीउ, रमत रमंत जिणंद ।
करि ग्रही कौतुकि पूरीउ, हरिनउ शंख अमंदो रे ॥१७(१८)॥ नेमि...
तिणि नादिइं गिरि गडगडइ, कंपइ आदि वराह ।
सायर सत्तइ झलझलइ, थरहरइ तव ग्रहनाहो रे ॥१८(१९)॥ नेमि...
धरणीधर श्रवणे सुणी, अदभुत शंख-निनाद ।
अति असमंजस भावतु, मनि आणइ विखवादो रे ॥१९(२०)॥ नेमि...
तव **हलधर** जंपइ हसी, अनुज किसिउ उदवेग ।
ए बल नेमीश्वर तणुं, सुरपति-पइं अतिरेगो रे ॥२०(२१)॥ नेमि...
तिणि अवसर तिहां आविआ, स्वामी नेमिकुमार ।
हरि हलधर मनि हरखीया, वचन रचइ सुविचारो रे ॥२१(२२)॥ नेमि...
जिनवर बल जोवा करइ, हरि निज कर विस्तार ।
जिन हेलां वालइ वली, प्रभु करइ बाहु प्रसारो रे ॥२२(२३)॥ नेमि...
हरि दोइ कर चरणे करी, चूडि भरी परचंड ।
हरि द्रमि जिम अवलंबिउ, तुहइ न नमइ भुजदंडो रे ॥२३(२४)॥ नेमि...
समुद्र शिवा अनुमति लही, हरि मनि हरख अपार ।
नेमि विवाह मनाविवा, विरचइ विविध विचारो रे ॥२४(२५०॥ नेमि...
मधुसूदन जिन नेमिसिउं, केलि करइ मधु मास ।
भामा रामा **रुकमिणी**, सवि रमणी गुणवासो रे ॥२५(२६)॥ नेमि...
हरि अंतेउरसिउं करइ, प्रभु जलकेलि-कलोल ।
मानइ अति आग्रहथिकी, पाणिग्रहण अलोलो रे ॥२६(२७)॥ नेमि...
वेगिइं मेलइ जिन तणउ, हरि मनि धरीअ उच्छाह ।
उग्रसेन-तनया सती, **राजीमती**सिउं विवाहो रे ॥२७(२८)॥ नेमि...

उत्सव कीजइ अति घणउ, बिहुं घरि मंगलमाल ।
गीत गान नाटक रचइ, सधवा धवल विशालो रे ॥२८(२९)॥ नेमि...
चालइ जिनवर परणवा, साथि सयल परिवार ।
करुणाकर श्रवणे सुणइ, पसुआं केरु पोकारो रे ॥२९(३०)॥ नेमि...
बंधन छोडी पशु तणां, पामी मनि संवेग ।
नेमिकुमर पाछा वलइ, व्रत लेवा धरइ वेगो रे ॥३०(३१)॥ नेमि...
लोकांतिक वाणी सुणी, दिइ संवत्सर दान ।
सुर दानव उत्सव करइ, व्रत केरु बहुमानो रे ॥३१(३२)॥ नेमि...
उत्तरकुरि शिबिका शुभा, आरोहइ जिननाथ ।
उज्जयंत सहसंबवनि, करइ पंच मुष्टि सनाथो रे ॥३२(३३)॥ नेमि...
श्रावण शुदि षष्ठी दिनिइं, चित्रा चारु नक्षत्र ।
सहस नराधिपसिउं ग्रहइ, संयम स्वामि पवित्रो रे ॥३३(३४)॥ नेमि...
वरदत्ताभिध विप्रनइं, घरि गोकुलि भगवंत ।
खीरिइं छठनूं(नुं) पारणउं, विरचइ दुरितनु अंतो रे ॥३४(३५)॥ नेमि...
जिन चउपन दिन तप तपइ, करइ करमनु अंत ।
अट्ठम तपि केवल लहइ, वेतस-तरुतलि संतो रे ॥३५(३६)॥ नेमि...
अश्विन मास अमावसिइं, चित्रा चारु संयोगि ।
केवल महिमा सुर करइ, मनि आणइ बहु रंगो रे ॥३६(३७)॥ नेमि...
समवसरण सुरवर रचइ, वप्र-त्रय सुविशाल ।
छत्र-त्रय सुर शिरि धरइ, बिहुं पखि चमर चउसालो रे ॥३७(३८)॥ नेमि...
हरि हलधर हरखिइं करी, आवइ **दसय दिसार** ।
शिवा रोहिणी देवकी, हरि बलनी बहु दारो रे ॥३८(३९)॥ नेमि...
अमीअ समी वाणी सुणी, बहु जन पाम्या बोध ।
मुनि श्रावक व्रत उच्चरइ, करइ दुरित तणउ रोधो रे ॥३९(४०)॥ नेमि...
वरदत्तादिक थापिया, गणधर वर अग्यार ।
त्रिपदी पामी प्रभुथिकी, रचइ सिद्धांत उदारो रे ॥४०(४१)॥ नेमि...
राजमतीनइं जिनपती(ति), अष्ट भवांतर नेह ।
व्रत आपी अंगीकरइ, दुह-दावानल-मेहो रे ॥४१(४२)॥ नेमि...

यक्ष हूउ **गोमेध** जस, देहवरण तस श्याम ।
त्रणि वदन छय भुज अछइ, नर-वाहन अभिरामो रे ॥४२(४३)॥ नेमि...
मातुलिंग पशु(शृं) चक्रधर, त्रणि दक्षण भुज जास ।
नकुल शक्ति शूलिइं कलित, वाम अछइ त्रणि सारो रे ॥४३(४४)॥ नेमि...
तीरथरक्षाकारिणी, सोविनवन्न शरीर ।*
नामिइं निरुपम **अंबिका**, वाहन सिंह सनेहो रे ॥४४(४५)॥ नेमि...
अंब-लुंबि एकिइं धरइ, बीजइ जिमणइ पाश ।
पुत्र अनइं अंकुश अछइ, वांम बिहुं भुज तासो रे ॥४५(४६)॥ नेमि...
नेमि तणउ परिकर सुणउ, सहस अढार मुनीस ।
कर जोडी नितु प्रणमीइ, मुनिनी सहस च्यालीसो रे ॥४६(४७)॥ नेमि...
सहस उगणोतिरि आगला, श्रावक एक लख भाख ।
सहस छत्रीसे आगली, श्रावी तस त्रणि लाखो रे ॥४७(४८)॥ नेमि...
वरस त्रणिसइं स्वामिनइ, कुमरपणइ जस जाय ।
सात सया संयमपणइ, वरस सहस सर्वायो रे ॥४८(४९)॥ नेमि...
मोक्षसमय जांणी गमइ, **रैवतगिरि** जिनराय ।
सहित छत्रीसे पांचसइं, मुनिवर जास सहायो रे ॥४९(५०)॥ नेमि...
शुचि सित चित्रा अष्टमी, शैलेशी सुविचार ।
मास दिवस अनशन धरी, पाम्या भव तणउ पारो रे ॥५०(५१)॥ नेमि...
नेमि नामि पातक पलइ, लहीइ मंगलमाल ।
दारिद दुह दूरिइं टलइ, सुख संपति सुरसालो रे ॥५१(५२)॥ नेमि...
धर्मसिंह पंडि[त]पवर, नरवर सेवइ पाय ।
नेमि जिणेसर गाईउ, पामी तास पसायो रे ॥५२(५३)॥ नेमि...

*॥ इति पण्डितश्री**धर्मसिंह**गणिशिष्य-पण्डितर**त्नसिंह**गणिविरचिते श्रीचतुर्विंशति-जिनस्तोत्रसंग्रहे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीनेमिजिनस्तवनं द्वाविंशतितमम् ॥२२॥*

---

* "सोविनवन्न जस देहो रे" एम होय तो सारुं लागे ।

पार्श्वनाथ स्तवन

॥ राग- केदारु ॥ चंद्रायणनउ ढाल ॥ अथवा आदनराय पहूतला जाम - ए ढाल ॥
अथवा आदीश्वर अरिहंत अवधारु - ए ढाल ॥

पास जिणेसर प्रणमी पाया, तस गुण थुणउ आनंद न माया ।
नयरि **वाराणसी** केरा राया, जाणे सुरिंद धरातलि आया ॥१॥
अश्वसेन नरपति गुण गाया, तस मनमोहन **वामा** जाया ।
बहु गुणगण जस सयरि समाया, सतीय शिरोमणि नाम रमाया ॥२॥
कलधौतामल कोमल काया, दोस दुहग दुह दूरि गमाया ।
रतिपति-रमणी रूप हराया, पूरव संचित सुकृत सहाया ॥३॥
जीव **सुवनबाहु** केरु जेह, देवलोकि **दसमइ** गुणगेह ।
सुर भवना बहु भोगवी भोग, पूरी आयु चवइ गतशोग ॥४॥
चउथि बहुल मधु[३१] मास विशाखा, सुर सुरलोकथिकी शुचिशाखा ।
वामा उअरि करइ अवतार, तव तस सफल भयु संसार ॥५॥
गज वृष सिंह सिरी सुम-दाम, शशि रवि धज निप[३२] सर अभिराम ।
जलनिधि सुरगृह मणि शिखि एह, चऊद सपन लहइ देवी तेह ॥६॥
पेखी सुपन कहइ निज कंत, पूछइ सुपनपाठक एकचित ।
ते भणइ सुपन तणउ सुविचार, सुत होसिइ जिन जगदाधार ॥७॥
रोहणगिरि-धरणी मणि जेम, देवी गरभ धरइ धुरि तेम ।
पोष बहुल दशमी अनुराधा, वामा सुत प्रसवइ गतबाधा ॥८॥
लांछन सुभग भुजंगम सोहइ, नीलवरण तनु जन-मन मोहइ ।
आवइ छपन कुमारी नारी, सूति-उत्सव विरचइ मनहारी ॥९॥
जाणी जनम सुराधिप आवइ, प्रणमी जिन जननी गुण गावइ ।
मेरुशिखरि जिननइं लेई जाइ, सुरपति हरखी हीइ न समाइ ॥१०॥
चउसठि इंद्र मिली तिहां विरचइ, जनम-महोत्सव चंदनि चरचइ ।
सुरदुंदुभि गयणंगणि गाजइ, गीत सनृत्य विशेष विराजइ ॥११॥
स्वामि तणी सेवा नवि चूकइ, जननि पासि जिननइं हरि मूंकइ ।
सोविन वृष्टि करी सुरराया, स्वामि नमी निज मंदिरि आया ॥१२॥

---

३१. चैत्र । ३२. कुंभ ।

हवइ नरपति घरि उत्सव छाजइ, बंदि बिरुद जय शबद विराजइ ।
पंचशबद वाजित्र वजावइ, सधवा धवल मंगल मिली गावइ ॥१३॥
जलधर परि नरपति कर वरषइ, बहु परि बंदि-बपीहा हरषइ ।
नव नव परि नाटक नित नाचइ, सुत जनमिइं साजन मनि राचइ ॥१४॥
पासइ अहि पेखइ एह माता, निशि अंधारि भई न असाता ।
सुहणइ तेणि कारणि सुत नाम, पासकुमर दीधुं अभिराम ॥१५॥
क्रमि क्रमि जिन यौवनवय पामइ, देखी युवतीजन मन कामइ ।
नव कर मित तनु जास विराजइ, निरखी रूप मदन मनि लाजइ ॥१६॥
नयर **कुशस्थल** केरु राया, **श्रीप्रसेनजित** नाम सुहाया ।
तास **प्रभावति** नामिइं तनया, सतीय शिरोमणि सुंदरि सनया ॥१७॥
सोविनवन झलकइ तनु-कंती(ति), करक[३३]-कली दीपइ दंत-पंती(ति) ।
कल-कंठी कल-वयण विशाला, रूपिइं रति यम रंग-रसाला ॥१८॥
सोहइ वेणि भुअंगम काली, बंधुर गति जित बाल-मराली ।
नयण-विजित मृग वेडि पईठा, वदन-चकित शशि गयणि बईठा ॥१९॥
पास प्रसिद्धि सुणी चिति आणी, विरह व्यथित वदइ सगबग वाणी ।
कइ उपयाम करुं पास केरु, कइ उस विरहि जाइ जीउ मेरु ॥२०॥
निसुणी वयण वाणारसी राया, तनय मनावा करय उपाया ।
राय प्रसेन तिहां वलि आयउ, पासकुमर उपयाम मनायउ ॥२१॥
बिहुं घरि बहु परि मंगलमाला, सधवा धवल दीइ सुरसाला ।
दुंदुभि ध्वनि गयणंगणि गाजइ, भाट भटित विरचंत विराजइ ॥२२॥
पासकुमार प्रभावति राणी, पाणिग्रहण करइ मनि आणी ।
रति-रतिपति जिम सहज सुरंगा, दंपति भोगवइ भोग अभंगा ॥२३॥
जलणि जलंतु भुअंगम राखिउ, कृपा करी सुरपतिपद दाखिउ ।
हठ शठ **कमठ** ऊतारिउ नाद, पासकुमर पायउ जयवाद ॥२४॥
स्वामि संसार अथिर मनि भावइ, तव तिहां **लोकांतिक** सुर आवइ ।
संयम लेवा समय जणावइ, त्रिभुवननाथ तणा गुण गावइ ॥२५॥
मात पिता बहु मानि मनावइ, किमहिइ अनुमति तेहनी पावइ ।
व्रत लेवा प्रभु उत्सक थावइ, वत्सर दान विविध देवावइ ॥२६॥

३३. दाडिम ।

इंद्रादिक उत्सव विरचावइ, व्रत-अभिषेक विशेष करावइ ।
शिबिका नाम **विशाला** ल्यावइ, मग्गणजण गुण मंगल मा(गा)वइ ॥२७॥
शत त्रणि राय सहित संवेगिइं, आवइ **आश्रमपद** वनि वेगिइं ।
कंचण मणि भूषण प्रभु मुंचइ, पंचे मुष्ठि करी कच लुंचइ ॥२८॥
सुर किन्नर नर उत्सव विरचइ, चंदनि चरणः-सरोरुह चरचइ ।
पोष बहुल एकादशि(शी?) राधा, व्रतदंडक उच्चरइ गतबाधा ॥२९॥
कोपकटाक्ष सन्निवेशिइं स्वामी, **धन्य** गृहस्थ सदनि मनकामी ।
करइ पारणूं(णुं) पायस अन्निइं, अष्टम तपनूं(नुं) निर्मल मन्निइं ॥३०॥
कांचन वृष्टि रचइ सुर तत्र, अनइ महोत्सव विविध विचित्र ।
प्रभु वसुधातलि करइ विहार, धारइ पंच महाव्रतभार ॥३१॥
कमठ मरी हऊउ **घनमाली**, प्रभु उपसर्ग करइ मन-चाली ।
तव तिहां आवइ पन्नगराया, घन तर्जी उपसर्ग शमाया ॥३२॥
तप जप विधि बहु परि अभ्यासी, इणि परि दिन वुल्या चउरासी ।
बहुल चउथि साधु मास विशाखा, **आश्रमपद** वनि सामि सुभाषा ॥३३॥
धातुकी-तरुतलि अट्ठम धरंतु, पामइ केवलन्यान अनंतु ।
केवल महिम करइ सुरराया, पास जिणेसर प्रणमी पाया ॥३४॥
समवसरण सुर निर्मित राजइ, छत्र चमर सुरदुंदुभि गाजइ ।
कनककमल पदपंकज ठावइ, समवसरणि स्वामी तव आवइ ॥३५॥
मणिमय सिंहासनि प्रभु बइसइ, भाविइं भविअणजन मन विहसइ ।
चिंहुदिसि चारु चतुर्मुख भासइ, योजन वाणि(णी?) वखाण प्रकासइ ॥३६॥
सुणीय वाणि(णी?) जिन केरु तात, अश्वसेन नरपति विख्यात ।
हस्तिसेन सुतनइं देई राज, लिइ संयम साधइ निज काज ॥३७॥
सतीय शिरोमणि वामा देवी, प्रभावती पयपंकय सेवी ।
याचइ संयम जोडी हाथ, आपइ बहुमानिइं जिननाथ ॥३८॥
पास सामि गणधर दस थापइ, कृपा करी त्रिपदी तस आपइ ।
विरचइ पूरव अंग सुरंग, जेहथी शिवकमलानुं संग ॥३९॥
पास जिणंद शासननउ यक्ष, **पास** नामि सोहइ परतक्ष ।
मस्तकि फणि-फण-छत्र विराजइ, गजमुख कच्छप-रथ जस छाजइ ॥४०॥

श्यामवरण तनु जन-मन मोहइ, चारु चतुर्भुज जे जगि सोहइ ।
बीजपूर अहि दक्षिण हाथिइं, नकुल सर्प दोइ वाम सनाथिइं ॥४१॥
पास शासनि **पदमावती** देवी, कुर्कुटअहि वाहन नित सेवी ।
सोविनवन(न्न) तनु जेहनुं सोहइ, चारु चतुर्भुज जनमन मोहइ ॥४२॥
पंकज पाशयुत दक्षण हस्ता, अंकुश फलयुत वाम प्रशस्ता ।
पास जिणेसर सेवाकारी, तस वंछित पूरइ मनहारी ॥४३॥
पास तणउ परिकर हवइ कहीस, साधु सहस तस सोलस लहीस ।
मुनिनीजन जिन सेवा सारइ, अडत्रीस सहस भविकजन तारइ ॥४४॥
चउसठि सहस करी अधिकेरा, श्रावक लाख टालइ भव फेरा ।
श्रावी त्रणि लाख जेहनइं कहीइ, सहस सित्योत्तिरि अधिकी लहीइ ॥४५॥
हवइं निर्वाणसमय प्रभु जाणी, मास एक अनशन मनि आणी ।
गिरि **सम्मेतशिखरि** प्रभु आवइ, मुनि तेत्रीस चरण तस पावइ ॥४६॥
श्रावण बहूल अष्टमि(मी?) तिथि जाणूं(णुं), ऋक्ष विशाखा मनमांहि आणूं(णुं)।
पास जिणंद धरी मनरंग, पाम्या शिवकमलानउ संग ॥४७॥
कुमरपणइ जिन त्रीस गमावइ, वरस सित्तिरि संयमसिरि पावइ ।
इम सर्वायु वहइ शत एक, पास स्वामि प्रणमुं सुविवेक ॥४८॥
पास नामिइं सुह संपति लहीइ, पास नामिइं दुह दोहग दहीइ ।
पास नामिइं जय मंगलमाला, पास नामिइं प्रमदा सुरसाला ॥४९॥
पास नामिइं सवि भोग संयोग, पास नामिइं नहीं रोग वियोग ।
पास नामिइं सुत-संतति छाजइ, पास नामिइं गयवर घरि गाजइ ॥५०॥
पास नामिइं सवि पुहुचइ आस, पास नामि[इं] सुरसदन-निवास ।
पास नामिइं नाटक नव रंग, पास नामि[इं] शिवकमला-संग ॥५१॥
धर्मसिंह पंडित केरु सीस, तस पयकमल नमी निशि दीस ।
पास जिणेसर चारु चरित्र, जंपइ इणि परि पुण्य-पवित्र ॥५२॥

॥ इति पण्डितश्रीधर्मसिंहगणिशिष्य-पण्डितरत्नसिंहगणिविरचिते श्रीचतुर्विंशति-जिनस्तोत्रसङ्ग्रहे साद्यन्तसम्बन्धबन्धुरे श्रीपार्श्वजिनस्तवनं त्रयोविंशतितमम् ॥२३॥

महावीरस्वामी स्तवन

॥ चउपई ॥ राग - गुडी ॥

प्रणमी **वर्धमान** जिनदेव, जस सुर नर सवि सारइ सेव ।
तेह तणा बोलिसु अवदात, **ब्राह्मणकुंड** नयर विख्यात ॥१॥
ऋषभदत्त वाडव तिहां वसइ, **देवानंदा** मनि उल्हसइ ।
शुदि आषाढ छट्ठि दिन सार, हस्तोत्तर नक्षत्र उदार ॥२॥
प्राणतथी नंदन नृपजीव, सुरभव सुख भोगविय अतीव ।
देवानंदा उरि अवतरइ, चौद सपन देखी मनि धरइ ॥३॥
सा पूछइ पतिनइं पति कहइ, निज मतिनइ अनुसारिइ लहइ ।
च्यारि वेद वेदांग विचार, सकल शास्त्रनउ पारावार ॥४॥
सुत होसिइ ते निसुणी नारि, गर्भ धरइ मनि हरख अपारि ।
ब्यासी दिन वउल्या जेतलइं, इंद्रासन कंपइ तेत[ल]इं ॥५॥
जाणी हरि जिननउ अवतार, विरचइ शक्रस्तव उच्चार ।
अच्छेरुं मनमाहिइं लहइ, **नैगमेषि** सुरनइं ते कहइ ॥६॥
ततखिणि सुर आवइ तिणि ठाय, करसंपुटि लेई जिनराय ।
क्षत्रियकुंड नगरनउ राय, **सिद्धारथ** निर्मल जसवाय ॥७॥
तस घरि **त्रिशला**देवी सती, तास उयरि थापइ शुभमती ।
आसो वदि तेरसि दिन सार, हस्तोत्तर नक्षत्र उदार ॥८॥
सुखि सूती सा रयणि मझारि, चऊद सपन देखइ नृपनारि ।
पूछइ प्रिउनइ आवी पासि, सपन तणउं फल मन उल्हासि ॥९॥
सुपनपाठक तेडावइ ताम, ते कहइ सुत होसिइ शुभधाम ।
शुक्ति धरइ मुक्तामणि जेम, आकर भूमि वहइ जिम हेम ॥१०॥
गर्भ धरइ तिम नृपभामिनी, सुरवर सवि सेवइ स्वामिनी ।
गर्भ तणी वेदन मनि धरइ, अंग उपांग सवे संवरइ ॥११॥
माता-सुख-कारणि प्रभु करइ, पणि माता मनि दुख अणुसरइ ।
जांणी जिन जननी मन भाव, देश(ह?) लेश फरकावइ जाव ॥१२॥
तव माता पामइ आणंद, एक अभिग्रह करइ जिणंद ।
मात पिता जीवित जां धरइ, तां नवि लेवउं संयमसिरइ ॥१३॥

हवइं साधिक वउल्या नव मास, मात पिता मनि पूगी आस ।
सुत प्रसवइ शुदि चैत्र पवित्र, तेरसि हस्तोत्तर नक्षत्र ॥१४॥
दिसिकुमरी आवइ छप्पन्न, सूतिकृत्य विरचइ एकमन्न ।
आपण कंपि लहइ सुरराय, जिन जिनजननी प्रणमइ पाय ॥१५॥
पंच रूप विरचइ मनरंगि, ल्यावइ शिशुनइं सुरगिरिशृंगि ।
तिहां आवइ त्रइसठि सुरनाथ, प्रणमइ प्रभुनइं जोडी हाथ ॥१६॥
स्नात्र-महोत्सव करवा काज, सामग्री मेलइ सुरराज ।
शक्र तणइ मनि संशय थाइ, बालकि बहु जल किम सहिवाइ ॥१७॥
तव सुरपतिनउ संशय जाणि(णी), जिन बल देखाडइ मनि आणि(णी) ।
वाम चरण अंगुष्ठिइं करी, कंपावइ शाश्वत सुरगिरी ॥१८॥
ततखिणि धरणीधर घडघडइ*, गयणंगण नादिइं गडगडइ ।
अवधिज्ञानि लही कहइ इंद, तुझ गति नवि जाणूं(णुं) मतिमंद ॥१९॥
कनक कुंभ निर्मल जल भरी, जिन अभिषेक करइ तव हरी ।
गीत गान नाटक नव रंग, सुर विरचइ उत्सव उत्तंग ॥२०॥
थापइ जिननइं जननी पासि, वासव वसु वरसइ आवासि ।
अमृत ठवी अंगूठइ स्वामि, यात्र करी हरि पुहचइ ठामि ॥२१॥
राजा निज घरि उत्सव करइ, जलधर परि बहु धन वावरइ ।
वृद्धि समृद्धि हुई असमान, वर्द्धमान तस दीधउं नाम ॥२२॥
पंचानन लांछन उदभूत, देहकांति झलकइ कलधौत ।
लक्षण व्यंजन सोहइ संत, दिनि दिनि जिन वाधइ गुणवंत ॥२३॥
आमलकी क्रीडा प्रभु करइ, सुर जिन बल जोवा संचरइ ।
गयणंगणि चालिउ भड भूर, मुष्टि प्रहारि कीधउ चूर ॥२४॥
लेखसाल-उत्सव नृप करइ, प्रभु परमारथ नवि उच्चरइ ।
आसन कंपिइं आवइ इंद्र, शब्द शास्त्र कीधउं **जैनेंद्र** ॥२५॥
क्रमि क्रमि जिन यौवनवय धरइ, सुभगपणइ मानिनि मन हरइ ।
सात हाथनुं मान उदार, पाणिग्रहण **यशोदा** दार ॥२६॥
मात-पिता पर-लोकि पहूत, प्रभु पाम्या संवेग बहूत ।
वधु(धू?) तणी अनुमति जिन लहइ, वरस दोइ गृहवासिइं रहइ ॥२७॥

---

* धडधडइ(?) ।

तव **लोकांतिक** आवइ देव, मधुर वचनि विरचइ जिन सेव ।
जिम जलधर वरसइ जलधार, तिम जिन धन आपइ अनिवार ॥२८॥
सुरपति सवि आवइ तिणि वार, विरचइ व्रत-अभिषेक उदार ।
शिबिका नामिइं **चंद्रप्रभा**, आरोहइ जिनपति अति शुभा ॥२९॥
सुर किन्नर नरवर सवि साथ, **ज्ञातखंड** वनि आवइ नाथ ।
जगभूषण भूषण परिहरइ, पंच मुष्टि करि कच उद्धरइ ॥३०॥
मार्गशीर्ष वदि दशमि(मी?) पवित्र, तिणि खिणि हस्तोत्तर नक्षत्र ।
छट्ठ तणउ तप स्वामी करइ, एकाकी दंडक उच्चरइ ॥३१॥
संयम लेई करइ विहार, छट्ठ पारणइ जगदाधार ।
सन्निवेश आवइ **कोल्लाग**, **बहुल** द्विज-मंदिरि महाभाग ॥३२॥
तास सदनि घृत साकर खीर, करइ पारणउं श्रीमहावीर ।
पंचदिव्य दैवत तिहां करइ, द्विज भंडार सुकृतनउ भरइ ॥३३॥
प्रभु उपसर्ग घणा कहिवाइ, तवनमार्हि गूंथ्या नवि जाइ ।
वीर चरित्रथिकी जाणयो, निसुणी निज मनि आणयो ॥३४॥
बार वरस महिमंडलि चरइ, शम दम संयम तप अणुसरइ ।
साल नाम तरु केरइ तलइ, धरइ छट्ठ प्रभु केवल कलइ ॥३५॥
सित दशमी दिन माधव मास, हस्तोत्तर नक्षत्र निवास ।
समवसरण विरचइ सुरराय, कनककमल प्रभु ठावइ पाय ॥३६॥
सिंहासनि बइसइ जिनदेव, छत्र धरइ सुर सारइ सेव ।
विरचइ योजन वाणि(णी?) वखाण, लाभाभाव लही जिन जाण ॥३७॥
आवइ नयरि **अपापा** नाम, तिहां जन वंछित सीझइ काम ।
गणधरपद थापइ अग्यार, त्रिपदी तस आपइ सुविचार ॥३८॥
ततखिणि तेह दुवालस अंग, विरचइ आगम सुगुण सुचंग ।
निसुणिइं लहीइ भवजल पार, **इंद्रभूति** नामिइं जयकार ॥३९॥
शासनरक्षक सुर **मातंग**, गजारूढ तनु श्यामल रंग ।
नकुल धरइ करि जिमणइ जेह, मातुलिंग करि डावइ तेह ॥४०॥
शासनदेवी **सिद्धायिका**, सेवक मनवंछित दायिका ।
नीलवरण तनु सोहइ रंग, आरोहइ मृगपति उत्तुंग ॥४१॥

अभयदान पुस्तकयुत जास, दक्षिण भुजयुग पूरइ आस ।
मातुलिंग वीणा विस्तार, वाम भुजद्वय सोहइ सार ॥४२॥
वर्द्धमान जिननउ परिवार, चऊद सहस मुनिवर सुविचार ।
मुनिनी सहस कहूं छत्रीस, तस पयकमल नमुं निसिदीस ॥४३॥
एक लाख ऊपरि अधिकार, सहस उगणसठि श्रावक सार ।
लाख त्रिणिनइं सहस अढार, श्रावी गुन नवि पामुं पार ॥४४॥
मुक्तिसमय जांणी जिनराय, आवइ नयरि अपापा ठाय ।
सोल पुहर प्रभु करइ वखाण, निसुणइ राय अढार सुजाण ॥४५॥
कार्त्तिक मासि अमावशि(सि) दिन्नि, स्वाति ऋक्ष योगिइं शुभ मन्नि ।
छट्ठ तणउ तप करी जिणंद, पाम्या अविचल परमानंद ॥४६॥
त्रीस वरस पदवी कौमार, बइतालीस चरण सुविचार ।
बहुत्तिरि वरस कहूं सर्वाय, आयुमान जाणउ जिनराय ॥४७॥
जिन जीवन गुणरयण-करंड, त्रिभुवनतारण-तरण-तरंड ।
भवियणजण-मण-नयणानंद, सेवइ सयल सुरासुरवृंद ॥४८॥
प्रभु सेविइं सवि संपति मिलइ, दुरित दुःख दर दूरिइं टलइ ।
मनवंछित सीझइ सवि काज, स्वामी आपइ अविचल राज ॥४९॥
धर्मसिंह गुरु केरा पाय, प्रण[मी].....*

---

* कृति अहींथी अपूर्ण छे ।

शब्दकोश

स्तवन नंबर	पद्य क्रमांक	पंक्ति क्रमांक	शब्द	अर्थ
१	१	१	चुवीस	चोवीस
१	१	३	तवन	स्तवन
१	४	३	परिं	नी जेम
१	६	४	चुर्थि	चोथना दिवसे
१	७	१	नींदरसि	निद्राना वेगमां
१	८	४	चित्रभानु	अग्नि
१	१०	२	सनय	विशेष बुद्धिमत्ता वाळो
१	१०	३	हर(रि)णंखी	हरण जेवी आंखवाळी
१	११	२	मधु	चैत्र
१	१४	२	ऊरू	जंघा
१	१६	१	आहरइ	आहार करे
१	१८	१	सखाय	(गुणेथी) सुन्दर
१	१९	१	निदेश	आज्ञा
१	२२	३	राज-धुर	राज्यनी धुरा
१	२५	३	चु	चार
१	३४	३	प्रसर	समुदाय (?)
१	४१	४	चउद्दसम	छ उपवास
२	३२	२	ऋक्ष	राशि(?) नक्षत्र
२	३२	३	अपुनर्भव	मोक्ष
२	३७	२	मिइं	में
३	३	१	अतीव	खूब
३	५	२	बिइ-सात	चौद
३	६	३	वशिइं	वश थई
३	८	३	गुणनिलु	गुणोनुं स्थान
३	८	४	कुलतिलु	कुलतिलक
३	११	४	पोतइ	भण्डार
३	१५	२	वाजि	घोडो

स्तवन नंबर	पद्य क्रमांक	पंक्ति क्रमांक	शब्द	अर्थ
३	१६	२	वरय	परणवुं
३	१६	४	रुचिजितरोचना	कान्ति वडे जीत्यो छे सूर्य जेणे तेवी
३	१७	२	सउंपी	सोंपी, भळावी
३	१८	३	व्रतमति	दीक्षाना भाव वनमां
३	२२	१	वनंत	वनमां
३	२३	२	आलोच	विचार
३	२६	४	कलइ	(धारण करे) मेळवे
३	२८	४	जूआ	जूदा
३	३०	४	तेतलां	तेटला
३	३१	३	छ्य	छ
३	३१	४	रुचिपूर	कान्तिथी परिपूर्ण
३	३२	३	बीजोरडूं	बीजोरुं
३	३२	४	अक्षदाम	रुद्राक्षनी माळा
३	३३	२	मेष	बकरो
३	३३	३	चारु	सुन्दर
३	३३	३	चतुर्भुजा	चार भुजा (वाळा)
३	३३	४	गौररुचि	श्वेतवर्णनी कान्ति(ना)
३	३३	४	व्रजा	समुदायवाळी
३	३४	१	विधान	अनुक्रम
३	३४	२	वरदान	आशीर्वाद (मुद्रा)
३	३४	४	अभयद	अभय दर्शावनार (मुद्रा)
३	३७	४	नीगमुं	पसार करुं
३	३९	२	साख	पेढी (राजा थवाना संदर्भे)
३	४१	४	सद्दहिउं	स्वीकार्युं
३	४२	१	समेत	सहित
४	१	२	वहुं	धारण करुं
४	२	१	सुभग	सुन्दर

स्तवन नंबर	पद्य क्रमांक	पंक्ति क्रमांक	शब्द	अर्थ
४	२	१	सुशाम	घणी श्याम(?) उत्तम सुखवाळी
४	२	४	जीअ	जीव
४	३	२	अभीचि	अभिजित (नक्षत्र नाम)
४	३	३	पुढीअ	सूती
४	३	३	समाज	परिवार
४	५	१	सुरिजन	देवो (?)
४	५	३	सूतिकृत्य	बाळकना जन्म समये करातुं एक शुद्धिनुं विधान
४	६	१	पयोनिधि	समुद्र
४	६	१	अम्भ	पाणी
४	६	२	न्हमण	स्नान
४	६	२	धामीअ	स्वर्गलोकमां रहेनार (?)
४	६	४	साथ	समुदाय
४	८	३	सुधाकर	चन्द्र
४	८	३	आकर	खाण
४	९	१	ईति	धान्य वगेरेने नुकसान पहोंचाडनार उपद्रव
		२	पुण्य-प्रचार	औपचारिक व्यवहार (?)
४	९	२	आखंडल	इन्द्र
४	९	४	मह	मोटा, श्रेष्ठ
४	९	४	रह	रथ
४	९	४	जोह	योद्धा
४	९	४	अखोह	अक्षौहिणी (चतुरंगी सेना)
४	१०	१	विपक्ष	शत्रू
	१०	२	मच्छर	मत्सर
४	११	४	अमान	विशाळ
४	१३	४	परमान्नि	खीर वडे
४	१४	१	पंचशब्द	पांच वाद्योनो मंगल सूचक ध्वनि
४	१४	४	सयमेव	पोते

स्तवन नंबर	पद्य क्रमांक	पंक्ति क्रमांक	शब्द	अर्थ
४	१५	१	पर	तत्पर
४	१५	१	प्रियाल	एक वृक्ष नाम (रायणवृक्ष)
४	१५	३	सशुचि	उज्वळ (?)
४	१५	४	चरचइ	पूजे
४	१६	१	देशन	देशना
४	१६	२	नागर	नगरना जन
४	१६	२	नाग	सर्प (उपलक्षण तिर्यंचो?नी पर्षदा)
४	१७	१	अनाण०	अज्ञान
४	१७	२	अभंग	सम्पूर्ण
४	१७	२	सुरंग	मनोहर
४	१८	१	सपक्ष	
४	१८	२	द्विरद	हाथी
४	१८	३	मातुलिंग	बीजोरुं
४	१८	४	नाग	सर्प
४	१९	१	घन-वन	मेघ समान वर्णवाळा
४	१९	२	भासन	प्रभा
४	१९	३	पाश	एक आयुधनुं नाम
४	२०	१	स-साख	
४	२२	३	अष्टांगोन	८ अंग न्यून
४	२२	३	व्रत-पर्याय	दीक्षा पर्याय
५	१	४	जगवदीता	जगतमां प्रसिद्ध
५	२	१	अनघ	दोष रहित
५	२	६	कुलांगना	कुलीन घरनी स्त्री
५	३	२	भूआल	भूजाल = वीर
५	३	६	मंजुल	मनोहर
५	४	२	केलीहरां	केलीघर
५	५	२	सधवा	सौभाग्यवती स्त्री
५	५	३	थिकइ	थकी
५	६	२	धीर-धी	स्थिरबुद्धिवान

स्तवन नंबर	पद्य क्रमांक	पंक्ति क्रमांक	शब्द	अर्थ
५	६	३	कामइ	इच्छवुं (?)
५	६	३	दर	दर=अन्दरना(?) (फारसी शब्द)
५	६	६	डालइ	अटकावे, दबावे
५	७	१	योगवइ	योग्य वयवाळी
५	७	४	मधु	मध
५	९	२	हरी	दूर करी, काढी नाखी
५	९	३	नित्यभक्तिइं	एकासणाथी
५	१३	३	सेवी	सेवकने
		४	भव्य	विद्यमान, वर्तमान
५	१४	६	पूगी	पहोंची
५	१५	६	साधु	सुन्दर
६	१	२	सखी	सुखी
६	१	३	वासिइं	निवासमां रहेवुं
६	२	४	प्रिउनइं	पतिने
६	३	३	अंक	चिह्न, लांछन
६	३	३	शंकर	सुखने करनार
६	३	४	कृत्यकारी	(सूति) कर्म करनार
६	४	२	जंग	समारम्भ
६	४	३	इसिउं	एवुं
६	४	५	रामति	रमत
६	५	१	साढां	सार्ध = अर्ध सहित
६	५	३	गंजइ	मर्दन करे
६	५	५	बंधुर	सुन्दर
६	५	५	सधर	तत्प्रायोग्य (?), सध्धर
६	६	१	घन	घणी (?)
६	६	६	पुरहूत	इन्द्र
६	७	४	चरणदंडक	चारित्रदंडक (दीक्षा लेता समये उच्चरातुं सूत्र)
६	८	५	वुल्या	गया-वीत्या

स्तवन नंबर	पद्य क्रमांक	पंक्ति क्रमांक	शब्द	अर्थ
६	८	६	जरतां	क्षय थता
६	१०	३	उचितप्रदा	योग्य वस्तुने देनारी
६	१०	६	बीजपूर	बीजोरू
६	११	२	यतिनीजन	साध्वीजी भगवंतो
६	१२	१	मारगशर	मागसर (महिनो)
७	१	१	दूतर	दुःखे तरी शकाय तेवुं
७	१	१	दयापर	दया करवामां तत्पर
७	२	३	चिवीनइ	च्यवीने
७	३	४	भाव भेद	हावभावना प्रकारो
७	४	२	सुहणइ	स्वप्नमां
७	४	३	सुलेखइ	—
७	४	४	शुचिशाखा	
७	६	४	दुग्धोदधि	क्षीरसमुद्र
७	८	१	पासा	चोपाट रमवानुं एक साधन
७	११	३	संवत्सरवितरण	वरस सुधी अपातुं दान
७	११	४	दिवाजा	शोभा
७	१३	१	व्रतदंडक	दीक्षा लेता समये उच्चारातुं सूत्र
७	१३	२	राइ	राजाओ
७	१३	३	द्येष्ठ	जेठ
७	१४	४	पंक	कादव
७	१५	४	वास	वासनन्-ज्ञान(?)
७	१५	२	शरीष	शिरीषनुं झाड
७	१८	३	मतंगज	हाथी
७	१८	४	ससाधन	साधन सहित
७	१९	१	बिल्व	बिलीपत्र
७	१९	४	सौदामिनि	वीजळी
७	२०	४	मुनिनीजन	साध्वीजी भगवंत
७	२२	२	धाम	स्थान (मोक्षरूपी)
७	२४	४	पयंपइ	बोले

स्तवन नंबर	पद्य क्रमांक	पंक्ति क्रमांक	शब्द	अर्थ
७	२४	४	संपइ	सम्पत्ति
८	२	३	सपन	स्वप्न
८	१	१	गुण गेलडी	गुणोमां आनन्द पामनारी
८	४	२	राका	रात्री
८	६	२	अतिरेक	घणो
८	६	३	सुरठामि	देवलोकमां
८	७	२	प्रपंच	माया
८	८	१	सित-धाम	चन्द्र
८	९	१	डुढसु	दोढसो
	९	३	पितादेश	पितानो आदेश
८	१०	२	सहाव	स्वभाव
८	११	१	मैत्र	अनुराधा (नक्षत्र)
८	१३	३	नाग-द्रुम	पुन्नागनुं वृक्ष
८	१४	३	प्रसाद	कृपा
८	१५	३	डावइ	डाबी बाजु
८	१६	१	बिडाल	बिलाडो
८	१६	३	फलक	ढाल
८	१६	४	शुभ-धाम	मंगलोना आवास
८	१७	४	सूधूं	निर्मळ
८	२०	२	पाख	पक्ष
९	१	१	नुमा	नवमा
९	२	१	सुरसद्म	देवलोक
९	२	२	अतिशयजवी	अतिशययुक्त
९	३	२	सपन्न	स्वप्न
९	४	३	सितेतर	कृष्ण
९	४	४	हृदयंगमी	हृदयने गमनार
९	६	४	सुरा-वृत	देवथी परिवरेला
९	७	२	मग्गणजण	याचक
९	टिप्पण		तत	तन्तुवाद्य

स्तवन नंबर	पद्य क्रमांक	पंक्ति क्रमांक	शब्द	अर्थ
९	टिप्पण		घन	नक्कर वाद्य
९	टिप्पण		शुषिर	फूंकीने वगाडातुं वाद्य
९	टिप्पण		आनद्ध	बांधेलुं के मढेलुं वाद्य
९	१०	१	तपन	सूर्य
१	१०	१	दहुं	दस
९	११	२	अविरल-तर	घणी बधी
९	१२	१	मारग	मागसर
९	१४	४	मालूर	एक वृक्षनुं नाम
९	१७	२	कुंत	भालो
९	१७	४	सितच्छवि	श्वेत रंगनी देहाकृति
९	१९	४	नडइ	दुःखी करे
९	२२	२	पलइ	जाय
९	३१	३	मुद्गवर्णा	मग जेवा वर्णवाळा
१०	१	१	आवास	घर
१०	१	४	उपायुं	मेळव्यो
१०	४	१	राध	वैशाख
१०	११	१	मृन्मणि	माटीना तथा रत्नना
१०	१२	४	थानकि	स्थानमां (माता पासे)
१०	१७	१	थिकु	थकी
१०	१९	४	छेक	अन्ते
१०	२३	३	असह	असह्य
१०	२४	३	प्लक्ष	अंजीरनुं झाड
१०	३१	३	अब्जवाहना	कमलवाहना
१०	३५	१	लही	जाणी
११	१	३	पदपंकेरुह	पदकमल
११	१	७	पौलोमी	इन्द्राणी
११	१	८	उदभूत	अद्भुत
११	२	१	सुरमंदिरि	देवलोकमां
११	२	४	उअरि	कुक्षिमां

स्तवन नंबर	पद्य क्रमांक	पंक्ति क्रमांक	शब्द	अर्थ
१२	२	६	चन्द्रमुही	चन्द्र जेवा मुखवाळी
१२	२	७	पामिसि	पामीस
१२	३	२	खड्गी	गेन्डो
११	३	६	बिडौजा	इन्द्र
११	३	८	दुग्धजलधि	क्षीरसमुद्र
११	५	६	राचइ	शोभावे
११	५	६	माचइ	आनन्द पामे
११	५	६	ऊजाइ	दोडी जाय
११	६	१	नाणइ	न लावे
११	७	६	दारिद	दारिद्र
११	८	५	तिन्दुक	तिन्दुक नामनुं वृक्ष
११	८	६	चल	विंझाता
११	९	७	मृगपति	सिंह
११	९	७	हलधर	बळदेव
११	१०	४	अडयाल	अडतालीस
१२	२	१	अलका	देवनगरी
१२	२	२	कंपा	हलावनार
१२	७	४	मनकामी	मननी इच्छाथी
१२	८	२	वारुण	शतभिषा (नक्षत्र)
१२	८	३	द्युतिपूर	घणी शोभावाळो
१२	२३	२	बारि	द्वारे
१२	२४	१	गामागर	श्रेष्ठ ग्राम (?) (ने विषें)
१२	२५	३	पाडल	पाटलनुं वृक्ष
१२	२९	१	रथ	वाहन
१२	३१	४	शक्ति	एक शास्त्रनुं नाम
१३	देशीमां		रंगडुं	–
१३	देशीमां		उचाऊं	–
१३	१	३	सलूणडा	मनोहर
१३	४	२	भद्र	भाद्रपद

स्तवन नंबर	पद्य क्रमांक	पंक्ति क्रमांक	शब्द	अर्थ
१३	६	३	पामसिउ	पामशो
१३	९	१	परिकर	परिवार
१३	११	१	कलधौत	सुवर्ण
१३	११	४	गडइ	गाजवुं
१३	१३	२	वादित्र	वाजित्र
१३	२०	२	विषाद	उदासीनता
१३	२१	३	उच्छक	उत्सुक - आतुर
१३	२३	२	ऊचा(च्चक?)इ	छोडे, दूर करे
१३	२६	३	विरतपणइ	विरक्तपणे
१३	२७	३	अश्वत्थ	पीपळानुं झाड
१३	३३	३	सायक	बाण
१३	३४	२	कोदंड	धनुष
१३	३५	४	वांनि	वर्णथी
१३	३७	४	तंग	उच्च
१३	४०	४	अपाण	जळ रहित (निर्जळ)
१४	७	२	यम	जेम
१४	८	४	श्येन	बाज
१४	९	४	सुचिर	घणा काळ सुधीनो
१४	१६	३	दार	पत्नी
१४	१७	३	उपम	उपमाथी (?)
१४	१७	४	निनाद	ध्वनि
१४	२९	४	रक्त-रुचि	लाल कान्ति(वाळो)
१५	२	३	पुण्यशलोक	रूडी कीर्तिवाळुं
१५	२	६	प्राणनाथ	पति
१५	६	८	सारस्वत	लोकान्तिक
१५	६	५	वच्छर	वर्ष
१५	७	६	तदौकसि	तेना घरे
१५	८	४	दधिपर्ण	एक वृक्षनुं नाम
१५	९	५	वासइ	वासित करे

स्तवन नंबर	पद्य क्रमांक	पंक्ति क्रमांक	शब्द	अर्थ
१५	१२	१	उत्पल	कमळ
१५	१२	५	श्रद्धालु	श्रद्धावाळा श्राक्को
१५	१३	२	अशन	भोजन
१५	१३	६	अव्यय	शाश्वत
१५	१४	४	सिरइ	–
१६	१	५	रुचिरा	कान्तिवाळी
१६	१	६	रत्ति	रत्ति – कामदेवनी पत्नी
१६	१	९	आसिइं	–
१६	११	११	अलेखइ	हिसाबमां न आवे तेवुं
१६	१	१३	दोष-उज्झित	उत्तम (?) दोषना त्यागवाळो
१६	१	१३	हसिइं	थशे
१६	२	९	जत्ता	यात्रा
१६	२	९	पत्ता	प्राप्त थया
१६	२	११	वासिइं	वसता, आवता
१६	२	११	अशिव	उपद्रव
१६	२	१५	मराल	हंस
१६	२	१८	क्षोणि	पृथ्वी
१६	३	१	आयुध-मंदिरि	शस्त्रशाळामां
१६	३	१	सूरमंडल	सूर्यबिम्ब
१६	३	२	साधन	जीतवुं
१६	३	२	जयसिरि	जयलक्ष्मी
१६	३	३	जोणी	(?)
१६	३	६	थण	स्तन
१६	३	६	ताह	त्यां (?)
१६	३	७	खेट	नानुं गाम
१६	३	७	कर्बट	कुनगर
१६	३	८	सधर	–
१६	३	८	पेटक	–
१६	३	१०	कामइ	इच्छवुं

स्तवन नंबर	पद्य क्रमांक	पंक्ति क्रमांक	शब्द	अर्थ
१६	३	१२	जीवनंदन	जीवोने आनन्द आपनार
१६	३	१५	संवत्सर	वर्ष
१६	३	१६	रागजेयी	रागने जीतनार
१६	४	८	नंदि	एक वृक्षनुं नाम
१६	४	१५	सधाम	—
१६	५	६	कवइं	स्तवे
१६	५	११	नताखंडल	नमेला छे इन्द्र जेमने जेवा
१६	५	१४	कैरव	कमळ
१६	६	६	नवेरु	नवुं
१६	६	१०	सुहग	सौभाग्यशाळी
१६	६	१३	जनावन	लोकरक्षक
१६	१४	२	कुंथु	स्तुप
१७	१४	४	ऊह	युक्ति
१७	२०	१	चक्रानुग	चक्रनी पाछळ
१७	२०	२	भड	योद्धा
१७	२०	२	भूर	घणा
१७	२२	३	भडइ	युद्ध करे
१७	२४	३	नैसर्प	नव निधिमांथी एक निधि नाम
१७	२८	४	पाग	पाद, पग
१७	३१	४	अमूढ	बुद्धिशाळी
१७	३२	३	उच्चकइ	दूर करे
१७	३६	३	तिलक	एक वृक्ष नाम
१७	३७	२	वप्र-त्रितय	त्रण गढ
१७	४१	४	अखर्व	घणुं
१७	४२	३	तदितर	बीजा
१७	४४	१	यमणइ	जमणा
१७	४४	३	भु(मु)सुंडी	शस्त्रविशेष
१८	२	३	दोगुंदक	देवनुं नाम
१८	१५	१	आरु	चक्र (आरा)

स्तवन नंबर	पद्य क्रमांक	पंक्ति क्रमांक	शब्द	अर्थ
१८	२१	४	अलं	सर्युं
१८	२३	३	वरांगना	गणिका
१८	२४	४	पायक	पायदळ
१८	२५	४	निगम	बजार (?)
१८	३२	४	भवपाथ	भवरूपी मार्ग
१८	३६	२	रिक्ष	नक्षत्र
१८	३७	२	साल-त्रय	त्रण गढ
१८	३८	१	साधारणी	बधाने समजाय तेवी (?)
१८	४३	२	वर्म	कवच (ढाल)
१८	४४	४	एकर्चिति	एकचित्त थई
१९	ढाल		प्रिउडउ	प्रियजन (पति)
१९	२	२	भडवाय	पराक्रमनी ख्याति
१९	६	१	मंथर	धीमी
१९	७	४	माल्य	माळा
१९	९	२	अहिनाण	चिह्न, लांछन
१९	१०	४	होआ	थया
१९	२५	३	इंद्रायुध	इन्द्रना आयुध (जेवुं)
१९	२९	३	जिके	जेने
१९	३३	४	निर्वाणसदन	मोक्ष
१९	३४	२	कौमार	कुमार अवस्था
१९	३६	१	कोटीर-मणि	मुगटना मणि (जेवा)
२०	६	१	जिसिइं	जेवामां
२०	६	२	तिसिइं	तेवामां
२०	८	१	पालकारूढ	पालक नामना विमान पर सवार थई
२०	९	२	ऊलालतु	उछाळतुं
२०	११	३	चंद्र	कपूर
२०	१५	२	तवी	स्तवाइ
२०	१७	२	सघन	घणु घट्ट (?)

स्तवन नंबर	पद्य क्रमांक	पंक्ति क्रमांक	शब्द	अर्थ
२०	१८	४	केतु	केटलोक
२०	४१	४	वीसमु	आश्चर्य
२१	५	४	वशिइं	परवशताथी
२१	७	३	सुसेत	घणो श्वेत
२१	१०	३	पावक	अग्नि
२१	१७	२	वदन	(कळशनुं) मुख्य नाळचुं
२१	३१	३	बकुल	बोरसलीनुं झाड
२१	३३	३	करय	करे
२१	३३	३	वखाणि	व्याख्यान
२२	७	१	हीइ	हृदयमां
२१	१३	४	पईठो	प्रवेश कर्यो, (आनन्द) थयो
२२	१७	१	रस-रभस	आनन्दना वेगथी
२२	१८	३	कौतुकि	कुतूहलथी
२२	१८	३	पूरीउ	फूंक्यो
२२	१८	४	अमंद	मोटो
२२	१९	३	झलझलइ	खळभळवुं
२२	२१	१	हलधर	बळदेव
२२	२१	२	किसिउं	केवो
२२	२१	४	अतिरेग	घणुं
२२	२४	२	चूडि	पक्कड
२२	२४	३	द्रमि	वृक्ष उपर
२२	२४	४	तुहइ	तो पण
२२	२६	१	मधुसूदन	कृष्ण
२२	२६	३	भामा	सत्यभामा (नाम)
२२	२७	४	अलोलो	चपळता रहित
२२	३६	४	वेतस	एक झाडनुं नाम
२२	३८	४	चमर	चामर
२२	३८	४	चउसाल	विशाळ
२२	४५	१	अंबलुंबि	आम्बानी लूम

स्तवन नंबर	पद्य क्रमांक	पंक्ति क्रमांक	शब्द	अर्थ
२२	४८	४	श्रावी	श्राविका
२३	२	३	सयरि	शरीरमां
२३	६	१	सुम-दाम	कुसुमनी माळा
२३	६	२	धज	ध्वज
२३	९	१	सुभग	मनोहर
२३	१४	२	बंदि-बपीहा	बन्दि रूपी चातक
२३	१५	२	अंधारि	अन्धारामां
२३	१९	३	वेडि	वनमां
२३	२०	२	सगबग	वेर विखेर-
२३	२२	४	भटित	उत्साहप्रेरक (वचनो)
२३	२६	२	किमहिइ	केमे करी
२३	२६	४	देवावइ	अपावे (?)
२३	३०	१	कोपकटाक्ष	गामनुं नाम
२३	३२	२	मन-चाली	मनने चलित करनार
	३२	३	पन्नगराया	धरणेन्द्र
२४	२	१	वाडव	ब्राह्मण
२४	१२	४	लेश	अंश
२४	१३	३	जीवित	जीवे छे (त्यां सुधी)
२४	१७	२	मेलइ	भेगी करे
२४	१९	१	घ(ध)डघ(ध)डइ	धड धड एवा अवाज करे
२४	२३	१	पंचानन	सिंह
२४	२३	३	व्यंजन	चिह्न
२४	२४	३	भूर	मूरखो, अबुध
२४	२५	१	लेखसाल	निशाळ
२४	२५	२	परमारथ	साचुं
२४	३८	४	लाभाभाव	लाभनो अभाव
२४	४८	१	करंड	करंडियो
२४	४८	२	तरंड	नौका

*

प्रवचन सारोद्धार तथा सप्ततिशत प्रकरण ग्रन्थना आधारे प्रो. कलाबेन शाहे तैयार करेल "आपणा तीर्थंकरो" पुस्तकना आधारे मेळवेला मतान्तरो

	व्यगत नोंध	मतान्तर
ऋषभदेव –	श्रावको → ३,०५,०००	३,५०,०००
यक्षिणी	अप्रतिचक्रा	चक्रेश्वरी
सम्भवनाथ -	द्विचरिम भवनुं नाम → विमलवाहन	विपुलबल
	- श्रावको → ६,३६,०००	५,३६,०००
	- निर्वाण नक्षत्र → मृगशीर्ष	आर्द्रा
	- जन्म तिथि → मागसर सुद १४	महा सुद १४ (विगत दोष)
अभिनन्दनस्वामी -	च्यवनादि ४ कल्याणकना नक्षत्र → अभिजित	पुनर्वसु
	- ज्ञानवृक्ष → प्रियाल	प्रियंगु
सुमतिनाथ -	दीक्षा शिबिका → उदयंकरा	अभयंकरा
पद्मप्रभस्वामी -	नृपतिपद पर्याय → साडा एकवीस लाख पूर्व	साडा एकवीस लाख पूर्व अने १६ पूर्वांग
	- देवी → अच्युता	श्यामा
सुपार्श्वनाथ -	च्यवन, दीक्षा नक्षत्र → अनुराधा	विशाखा
	- जन्म, केवलज्ञान नक्षत्र → विशाखा	अनुराधा
	- यक्षिणी → श्यामा	शान्ता
	- निर्वाण नक्षत्र → मूल	अनुराधा
चन्द्रप्रभस्वामी -	नगरी → चन्द्रानना	चन्द्रपुरी
	-पूर्वभव → वैजयन्त देव०	विजय देव०
	- यक्षिणी → भ्रु(भृ)कुटि	ज्वाला
	- निर्वाण नक्षत्र → श्रवण	ज्येष्ठा
सुविधिनाथ -	च्यवन तिथि → फागण वद ७ (विगत दोष)	फागण वद ९
	- पूर्वभव → वैजयन्त देव०	आनत देव०
	- निर्वाण तिथि → भादरवा वद ९	भादरवा सुद ९

शीतलनाथ	– श्राविका → ४,५०,०००	४,५८,०००
श्रेयांसनाथ	– यक्ष → यक्षेश्वर	ईश्वर
	– यक्षिणी → मानवी	श्रीवत्सा
	– पूर्वभव → अच्युत देव०	महाशुक्र
वासुपूज्यस्वामी	– श्रावक → २,१०,०००	२,१५,०००
	– यक्षिणी → चण्डा	प्रवरा
विमलनाथ	– केवलज्ञानवृक्ष → अश्वत्थ	जम्बू
	– यक्षिणी → विदिता	विजया
अनन्तनाथ	– गणधर → १०० (विगत दोष)	५०
	– यक्षिणी → अंकुशा	अंकुशी
धर्मनाथ	– पूर्वभव → वैजयन्त देव०	विजय देव०
	– दीक्षा स्थान → जगवृत्तवप्रगा वन	वप्रकांचन वन
	– श्रावक → २,४०,०००	२,०४,०००
	– यक्षिणी → कन्दर्पा	प्रज्ञप्ति
कुन्थुनाथ	– निर्वाण तिथि* –	
	वैशाख वद (पडवो) (गुज०/तिथि)	(मार०तिथि) चैत्र वद १
	श्रावक → १, १,७९,०००	१,८०,०००
	– यक्षिणी → बला	अच्युता
अरनाथ	– पूर्वभव → ग्रैवेयक देव०	सर्वार्थसिद्ध देव०
मल्लिनाथ	– पूर्वभव → वैजयन्त देव०	जयन्त देव०
	– श्रावक → १,८०,०००	१,८३,०००
	– यक्षिणी → वैरुट्या	धरणप्रिया
	– निर्वाण नक्षत्र → भरणी	अश्विनी
	– साथे अणसण करनार साध्वीजी → ५००	–
मुनिसुव्रत स्वामी	– पूर्व भव → प्राणत देव०	अपराजित देव०
	– द्विचरिमभव → सुरज्येष्ठ	सुरश्रेष्ठ, श्रीवर्म
	– साधु → ५५,०००	५०,०००
	– यक्षिणी → नरदत्ता	अच्छुप्ता

नमिनाथ	- पूर्वभव → अपराजित देव०	प्राणत देव०
	- साध्वी → ३,४०,०००	३,४८,०००
नेमिनाथ	- पूर्वभव → सर्वार्थसिद्ध देव०	अपराजित देव०
	- द्विचरिम भव → शंख	सुप्रतिष्ठ
	- साध्वी → ४०,०००	३४,०००
	- श्राविका → ३,३६,०००	३,३९,०००
पार्श्वनाथ	- जन्म, दीक्षा नक्षत्र → अनुराधा	विशाखा
महावीरस्वामी	- यक्ष → मातंग	ब्रह्मशान्ति

* प्रभुना च्यवनादि नक्षत्रोनी मतान्तरोनी एक विस्तृत चर्चा पू. मुक्तिचन्द्रसूरि-मुनिचन्द्रसूरि म.सा. ए करी छे ते चर्चा **श्रुतसंविभाग भा. १३**मां छपाई छे.

क्रम	१ भगवान	२ पिता	३ माता	४ गाम	५ पूर्वभव
१	ऋषभदेव	नाभि	मरुदेवी	अयोध्या	सर्वार्थसिद्ध (देवलोकमांथी)
२.	अजितनाथ	जितशत्रु	विजया	अयोध्या	विजय (देवलोकमांथी)
३.	सम्भवनाथ	जितारि	सेना	श्रावस्ती	आनत (देवलोकमांथी)
४.	अभिनन्दनस्वामी	संवर	सिद्धार्था	विनीता (अयोध्या)	विजय देवलोकमांथी
५.	सुमतिनाथ	मेघ (मेघरथ)	मंगला	विनीता (अयोध्या)	वैजयन्त (देवलोकमांथी)
६.	पद्मप्रभुस्वामी	धर	सुसीमा	कौशाम्बी	ग्रैवेयक (देवलोकमांथी)
७.	सुपार्श्वनाथ	सुप्रतिष्ठ	पृथ्वी	वाराणसी	ग्रैवेयक (देवलोकमांथी)
८	चन्द्रप्रभस्वामी	महसेन	लक्ष्मणा	चन्द्रानना	वैजयन्त (देवलोकमांथी)
९	सुविधिनाथ	सुग्रीव	रामा	काकन्दी	वैजयन्त (देवलोकमांथी)
१०	शीतलनाथ	दृढरथ	नन्दा	भद्दिलपुर	प्राणत (देवलोकमांथी)
११	श्रेयांसनाथ	विष्णु	विष्णु	सिंहपुर	अच्युत (देवलोकमांथी)
१२	वासुपूज्यस्वामी	वसुपूज्य	जया	चम्पापुरी	प्राणत (देवलोकमांथी)
१३	विमलनाथ	कृतवर्म	श्यामा	कम्पील्यपुर	सहस्रार (देवलोकमांथी)
१४	अनन्तनाथ	सिंहरथ	सुयशा	विनीता (अयोध्या)	प्राणत (देवलोकमांथी)
१५	धर्मनाथ	भानु	सुव्रता	रत्नपुर	वैजयन्त (देवलोकमांथी)
१६	शान्तिनाथ	विश्वसेन	अचिरा	गजपुर	सर्वार्थसिद्ध (देवलोकमांथी)
१७	कुन्थुनाथ	सूर[सेन]	श्री	हस्तिनापुर	सर्वार्थसिद्ध (देवलोकमांथी)
१८	अरनाथ	सुदर्शन	देवी	हस्तिनापुर	गैवेयक (देवलोकमांथी)
१९	मल्लिनाथ	कुम्भ	प्रभावती	मिथिला	वैजयन्त (देवलोकमांथी)
२०	मुनिसुव्रतस्वामी	सुमित्र	पद्मा (पद्मावती)	राजगृही	प्राणत (देवलोकमांथी)
२१	नमिनाथ	विजय	वप्रा	मिथिला	अपराजित (देवलोकमांथी)
२२	नेमिनाथ	समुद्र-विजय	शिवादेवी	शौरीपुरी	सर्वार्थसिद्ध (देवलोकमांथी)
२३	पार्श्वनाथ	अश्वसेन	वामा	वाराणसी	प्राणत (देवलोकमांथी)
२४	महावीर स्वामी	सिद्धार्थ	त्रिशला	क्षत्रियकुण्ड	प्राणत (देवलोकमांथी)

क्रम	६ द्विचरिमभव	७ च्यवन तिथि	८ च्यवन नक्षत्र	९ जन्म तिथि	१० वर्ण
१	वज्रनाभ नृप	अषाढ वद ४	उत्तराषाढा	चैत्र वद ८	सुवर्ण
२	विमलवाहन नृप	वैशाख सुद १३	रोहिणी	महासुद ८	सुवर्ण
३	विमलवाहन नृप	फागण सुद ८	मृगशीर्ष	मागसर सुद १४	सुवर्ण
४	महाबल नृप	वैशाख सुद ४	अभिजित	महासुद २	सुवर्ण
५	पुरुषसिंह नृप	श्रावण सुद २	मघा	वैशाख सुद ८	सुवर्ण
६	अपराजित नृप	महा सुद ६	चित्रा	कारतक वद १२	लाल
७	नन्दिषेण नृप	भादरवा वद ८	अनुराधा	जेठ सुद १२	सुवर्ण
८	पद्म नृप	चैत्र वद ५	अनुराधा	पोस वद १२	श्वेत
९	महापद्म नृप	फागण वद ७	मूल	मागसर वद ५	श्वेत
१०	पद्मोत्तर नृप	वैशाख वद ६	पूर्वाषाढा	महा वद १२	सुवर्ण
११	नलिनगुल्म नृप	जेठ वद ६	श्रवण	फागण वद १२	सुवर्ण
१२	सुनन्द नृप	जेठ सुद ९	शतभिषा	फागण सुद १४	लाल
१३	पद्मसेन नृप	वैशाख सुद १२	उत्तर भाद्रपद	महा सुद ३	सुवर्ण
१४	पद्मरथ नृप	श्रावण वद ७	रेवती	वैशाख वद १३	सुवर्ण
१५	दृढरथ नृप	वैशाख सुद ७	पुष्य	महा सुद ३	सुवर्ण
१६.	मेघरथ नृप	भादरवा वद ७	भरणी	जेठ वद १३	सुवर्ण
१७	सिंहावह नृप	श्रावण सुद ९	कृत्तिका	वैशाख वद १४	सुवर्ण
१८	धनपति नृप	फागण सुद २	रेवती	मागसर सुद १०	सुवर्ण
१९	महाबल नृप	फागण सुद ४	अश्विनी	मागसर सुद ११	नील
२०	सुरज्येष्ठ (सुरश्रेष्ठ)	श्रावण सुद १५	श्रवण	जेठ वद ८	श्याम
२१	सिद्धारथ नृप	आसो सुद १५	अश्विनी	श्रावण वद ८	सुवर्ण
२२	शंख नृप	कारतक वद १२	चित्रा	श्रावण सुद ५	श्याम
२३	सुवर्णबाहु नृप	चैत्र वद ४	विशाखा	पोष वद १०	नील
२४	नन्दन नृप	अषाढ सुद ६	हस्तोत्तर (उत्तरा फाल्गुनी)	चैत्र सुद १३	सुवर्ण

क्रम	११ जन्म नक्षत्र	१२ लांछन	१३ उंचाइ	१४ दीक्षा शिबिका	१५ दीक्षा तिथि
१	उत्तराषाढा	वृषभ	५०० धनुष	सुदर्शना	चैत्र वद ८
२.	रोहिणी	हाथी	४५० धनुष	सुप्रभा	महा वद ९
३.	मृगशीर्ष	घोडो	४०० धनुष	सिद्धार्था	मागसर सुद १५
४.	अभिजित	वान्दरो	३५० धनुष	अर्थ सिद्धा	महा सुद १२
५.	मघा	क्रोंच	३०० धनुष	उदयंकरा	वैशाख सुद ९
६.	चित्रा	पद्म	२५० धनुष	निवृत्तिकरा	कारतक वद १३
७.	विशाखा	स्वस्तिक	२०० धनुष	मनोहरा	जेठ सुद १३
८	अनुराधा	चन्द्र	१५० धनुष	मनोरमा	पोष वद १३
९	मूल	मगर	१०० धनुष	सुरप्रभा	मागसर वद ६
१०	पूर्वाषाढा	श्रीवत्स	९० धनुष	चन्द्रप्रभा	महा वद १२
११	श्रवण	खड्गी	८० धनुष	विमलप्रभा	फागण वद १३
१२	शतभिषा	पाडो	७० धनुष	पृथिवी	फागण वद ०॥
१३	उत्तर भाद्रपद	वराह	६० धनुष	देवदत्ता	महा सुद १४
१४	रेवती	सिंचाणो	५० धनुष	सागरदत्ता	वैशाख वद १४
१५	पुष्य	वज्र	४५ धनुष	नागदत्ता	महा सुद १३
१६	भरणी	हरण	४० धनुष	सर्वारथा	जेठ वद १४
१७	कृत्तिका	बोकडो	३५ धनुष	विजया	वैशाख वद ५
१८	रेवती	नन्दावर्त	३० धनुष	वि(वै)जयन्ती	मागसर सुद ११
१९	अश्विनी	कुम्भ	२५ धनुष	जयन्ती	मागसर सुद ११
२०	श्रवण	काचबो	२० धनुष	अपराजिता	फागण सुद १२
२१	अश्विनी	नीलकमल	१५ धनुष	देवकुरु	अषाढ वद ९
२२	चित्रा	शंख	१० धनुष	उत्तरकुरु	श्रावण सुद ६
२३	अनुराधा	सर्प	९ हाथ	विशाखा	पोष वद ११
२४	हस्तोत्तर (उत्तरा फाल्गुनी)	सिंह	७ हाथ	चन्द्रप्रभा	मागसर वद १०

क्रम	१६ दीक्षा नक्षत्र	१७ दीक्षा तप	१८ दीक्षा स्थान	१९ सह दीक्षित पुरुषो	२० प्रथम पारणुं करावनार
१	उत्तराषाढा	छट्ठ	सिद्धार्थ वन	४०००	श्रेयांसकुमार
२	रोहिणी	छट्ठ	सहस्राम्र वन	१०००	ब्रह्मदत्त नृप
३	मृगशीर्ष	छट्ठ	सहस्राम्र वन	१०००	सुरेन्द्रदत्त नृप
४	अभिजित	छट्ठ	सहस्राम्र वन	१०००	इन्द्रदत्त नृप
५	मघा	नित्यभक्त	सहस्राम्र वन	१०००	पद्म नृप
६	चित्रा	छट्ठ	सहस्राम्र वन	१०००	सोमदेव नृप
७	अनुराधा	छट्ठ	सहस्राम्र वन	१०००	महेन्द्र नृप
८	अनुराधा	छट्ठ	सहस्राम्र वन	१०००	सोमदत्त नृप
९	मूल	छट्ठ	सहस्राम्र वन	१०००	पुष्प नृप
१०	पूर्वाषाढा	छट्ठ	सहस्राम्र वन	१०००	पुनर्वसु नृप
११	श्रवण	छट्ठ	सहस्राम्र वन	१०००	नन्द
१२	शतभिषा	चउत्थ (१उप./एक्र.)	विहारगेहगृह वन	६००	सुनन्द
१३	उत्तर भाद्रपद	छट्ठ	सहसरसाल वन	१०००	जय नृप
१४	रेवती	छट्ठ	सहसरसाल वन	१०००	विजय नृप
१५	पुष्य	छट्ठ	जनवृत्तवप्रगावन	१०००	धर्मसिंह नृप
१६	भरणी	छट्ठ	सहस्राम्र वन	१०००	सुमित्र नृप
१७	कृत्तिका	छट्ठ	सहस्राम्र वन	१०००	व्याघ्रसिंह नृप
१८	रेवती	छट्ठ	सहस्राम्र वन	१०००	अपराजित नृप
१९	अश्विनी	अट्ठम	सहस्राम्र वन	३००+३०० (आभ्यन्तर/ बाह्य पर्षदा)	विश्वसेन नृप
२०	श्रवण	छट्ठ	नीलगृह वन	१०००	ब्रह्मदत्त नृप
२१	अश्विनी	छट्ठ	सहस्राम्र वन	१०००	दत्त नृप
२२	चित्रा	छट्ठ	सहस्राम्र वन	१०००	वरदत्त विप्र
२३	अनुराधा	अट्ठम	आश्रमपद वन	३००	धन्य गृहस्थ
२४	हस्तोत्तर (उत्तरा फाल्गुनी)	छट्ठ	ज्ञातखण्ड वन	—	बहुल विप्र*

* ''ऋषभ प्रभुने इक्षुरस छे, त्रेवीश प्रभुने खीर;
ऋषभ प्रभुने दाता क्षत्री, त्रेवीश ब्राह्मण धीर'' (अष्टापदपूजा, कवि दीपविजय)

क्रम	२१ पारणा स्थळ	२२ पारणा द्रव्य	२३ केवळज्ञान तिथि	२४ केवलज्ञान नक्षत्र	२५ छदमस्थपणानो पर्याय (केवल-प्राप्तिना दिवस सुधी)
१	हस्तिनापुर	इक्षुरस	फागण वद ११	उत्तराषाढा	१००० वर्ष
२	विनीता (अयोध्या)	परमान्न	पोस सुद ११	रोहिणी	१२ वर्ष
३	श्रावस्ति	परमान्न	कारतक वद ५	मृगशीर्ष	१४ वर्ष
४	विनीता (अयोध्या)	परमान्न	पोस सुद १४	अभिजित	१८ वर्ष
५	विजयपुर	परमान्न	चैत्र सुद ११	मघा	२० वर्ष
६	ब्रह्मस्थल	परमान्न	चैत्र सुद १५	चित्रा	६ मास
७	पाडलिपुर	परमान्न	फागण वद ६	विशाखा	९ मास
८	पद्मखंडपुर	परमान्न	फागण सुद ७	अनुराधा	३ मास
९	स्वेतनगरी	परमान्न	कारतक सुद ३	मूल	४ मास
१०	अरिष्टपुर	परमान्न	पोस वद १४	पूर्वाषाढा	३ मास
११	सिद्धारथपुर	परमान्न	महा वद ०॥	श्रवण	२ मास
१२	महापुर	परमान्न	महा सुद २	शतभिषा	१ मास
१३	धनकड (धान्यकुटपुर)	परमान्न	पोस सुद ६	उत्तरभाद्रपद	२ मास
१४	वर्धमानपुर	परमान्न	वैशाख वद १४	रेवती	३ वर्ष
१५	सौमनसपुर	परमान्न	पोस सुद १५	पुष्य	२ वर्ष
१६	मन्दिरपुर	परमान्न	पोस सुद ९	भरणी	१ वर्ष
१७	चक्रपुर	परमान्न	चैत्र सुद ३	कृत्तिका	१६ वर्ष
१८	राजपुर	परमान्न	कारतक सुद १२	रेवती	३ वर्ष
१९	मिथिला	परमान्न	मागसर सुद ११	अश्विनी	१ अहोरात्र
२०	राजगृही	परमान्न	फागण वद १२	श्रवण	११ मास
२१	वीरपुर	परमान्न	मागसर सुद ११	अश्विनी	९ मास
२२	उज्जयनी	परमान्न	आसो वद ०॥	चित्रा	५४ दिवस
२३	कोपकटाक्ष (कोपकट)	परमान्न	चैत्र वद ४	विशाखा	८४ दिवस
२४	कोल्लाग सन्निवेश	परमान्न	वैशाख सुद १०	हस्तोत्तर (उत्तरा फाल्गुनी)	बार वर्ष

क्रम	२६ केवळज्ञान तप	२७ केवळज्ञान वृक्ष	२८ गणधर	२९ यक्ष	३० यक्षिणी	३१ साधु
१	अट्ठम	न्यग्रोध	८४	गोमुख	अप्रतिचक्रा	८४,०००
२	छट्ठ	शाल	९५	महायक्ष	अजितबला	१,००,०००
३	छट्ठ	शाल	१०२	त्रिमुख	दुरितारि	२,००,०००
४	छट्ठ	शाल	११६	यक्षेश्वर	काली	३,००,०००
५	छट्ठ	शाल	१००	तुम्बरु	महाकाली	३,२०,०००
६	छट्ठ	वट	१०७	कुसुम	अच्युता	३,३०,०००
७	छट्ठ	शिरीष	९५	मातंग	श्यामा	३,००,०००
८	छट्ठ	पुन्नाग	९३	विजय	भ्रु(भृ)कुटि	२,५०,०००
९	छट्ठ	मालूर	८८	अजित	सुतारा	२,००,०००
१०	छट्ठ	प्लक्ष	८१	ब्रह्मा	अशोका	१,००,०००
११	छट्ठ	तिन्दुक	७६	यक्षेश्वर	मानवी	८४,०००
१२	चउत्थभक्त	पाडल	६६	कुमार	चंडा	७२,०००
१३	छट्ठ	अश्वत्थ	५७	षण्मुख	विदिता	६८,०००
१४	छट्ठ	अशोक	१००	पाताल	अंकुशा	६६,०००
१५	छट्ठ	दधिपर्ण	४३	किन्नर	कन्दर्पा	६४,०००
१६	छट्ठ	नन्दि	३६	गरुड	निर्वाणी	६२,०००
१७	छट्ठ	तिलक	३५	गन्धर्व	बला	६०,०००
१८	छट्ठ	सहकार (आम्र)	३३	यक्षेन्द्र	धारिणी	५०,०००
१९	अट्ठम	अशोक	२८	कुबेर	वैरुट्या	४०,०००
२०	छट्ठ	चम्पक	१८	वरुण	नरदत्ता	३०,०००
२१	छट्ठ	बकुल	१७	भ्रु(भृ)कुटि	गान्धारी	२०,०००
२२	अट्ठम	वेतस	११	गोमेध	अम्बिका	१८,०००
२३	अट्ठम	धातकी	१०	पार्श्व	पद्मावती	१६,०००
२४	छट्ठ	शाल	११	मातंग	सिद्धायिका	१४,०००

क्रम	३२ साध्वी	३३ श्रावक	३४ श्राविका	३५ कुमारपणानो पर्याय
१	३,००,०००	३,०५,०००	५,५४,०००	२७ लाख पूर्व
२	३,३०,०००	२,९८,०००	५,४५,०००	१८ लाख पूर्व
३	३,३६,०००	२,९३,०००	६,३६,०००	१५ लाख पूर्व
४	६,३०,०००	२,८८,०००	५,२७,०००	साडा १२ लाख पूर्व
५	५,३०,०००	२,८१,०००	५,१६,०००	१० लाख पूर्व
६	४,२०,०००	२,७६,०००	५,०५,०००	साडा ७ लाख पूर्व अने १६ पूर्वांग
७	४,३०,०००	२,५७,०००	४,९३,०००	५ लाख पूर्व
८	३,८०,०००	२,५०,०००	५,००,०००	अढी लाख पूर्व
९	१,२०,०००	२,२९,०००	४,७२,०००	५०,००० पूर्व
१०	१,०६,०००	२,८९,०००	४,५०,०००	२५,००० पूर्व
११	१,०३,०००	२,७९,०००	४,४८,०००	२१,००,००० वर्ष
१२	१,००,०००	२,१०,०००	४,३६,०००	१८,००,००० वर्ष
१३	१,००,८००	२,०८,०००	४,३४,०००	१५,००,००० वर्ष
१४	६२,०००	२,०६,०००	४,१४,०००	७,५०,००० वर्ष
१५	६२,०००	२,४०,०००	४,१३,०००	२,५०,००० वर्ष
१६	६१,६००	१,९०,०००	३,९३,०००	२५,००० वर्ष
१७	६०,६००	१,७९,०००	३,८१,०००	२३,७५० वर्ष
१८	६०,०००	१,८४,०००	३,७२,०००	२१,००० वर्ष
१९	५५,०००	१,८०,०००	३,७०,०००	१०० वर्ष
२०	५५,०००	१,७२,०००	३,५०,०००	७५०० वर्ष
२१	४१,०००	१,७०,०००	३,४०,०००	२५०० वर्ष
२२	४०,०००	१,६९,०००	३,३६,०००	३०० वर्ष
२३	३८,०००	१,६४,०००	३,७७,०००	३० वर्ष
२४	३६,०००	१,५९,०००	३,१८,०००	३० वर्ष

क्रम	३६ नृपति पर्याय पणानो	३७ दीक्षा पर्याय	३८ सर्व आयुष्य
१	६३ लाख पूर्व	एक लाख पूर्व	८४ लाख पूर्व
२	५३ लाख पूर्व अने १ पूर्वांग	१ पूर्वांग ओछा एक लाख पूर्व	७२ लाख पूर्व
३	४४ लाख पूर्व अने ४ पूर्वांग	४ पूर्वांग ओछा एक लाख पूर्व	६० लाख पूर्व
४	साडा ३६ लाख पूर्व ८ पूर्वांग	८ पूर्वांग ओछा एक लाख पूर्व	५० लाख पूर्व
५	२९ लाख पूर्व अने १२ पूर्वांग	१२ पूर्वांग ओछा एक लाख पूर्व	४० लाख पूर्व
६	साडा २१ लाख पूर्व	१६ पूर्वांग ओछा एक लाख पूर्व	३० लाख पूर्व
७	१४ लाख पूर्व अने २० पूर्वांग	२० पूर्वांग ओछा एक लाख पूर्व	२० लाख पूर्व
८	साडा ६ लाख पूर्व अने २४ पूर्वांग	२४ पूर्वांग ओछा एक लाख पूर्व	१० लाख पूर्व
९	५०,००० पूर्व अने २८ पूर्वांग	२८ पूर्वांग ओछा एक लाख पूर्व	२ लाख पूर्व
१०	५०,००० पूर्व	२५,००० पूर्व	१ लाख पूर्व
११	४२,००,००० वर्ष	२१,००,००० वर्ष	८४,००,००० वर्ष
१२	—	५४,००,००० वर्ष	७२००,००० वर्ष
१३	३०,००,००० वर्ष	१५,००,००० वर्ष	६०००,००० वर्ष
१४	१५,००,००० वर्ष	७,५०,००० वर्ष	३०००,००० वर्ष
१५	५,००,००० वर्ष	२,५०,००० वर्ष	१०००,००० वर्ष
१६	५०,००० वर्ष	२५,००० वर्ष	१,००,००० वर्ष
१७	४७,५०० वर्ष	२३,७५० वर्ष	९५,००० वर्ष
१८	४२,००० वर्ष	२१,००० वर्ष	८४,००० वर्ष
१९	—	५४,९०० वर्ष	५५,००० वर्ष
२०	१५,००० वर्ष	७,५०० वर्ष	३०,००० वर्ष
२१	५,००० वर्ष	२,५०० वर्ष	१०,००० वर्ष
२२	—	७०० वर्ष	१,००० वर्ष
२३	—	७० वर्ष	१०० वर्ष
२४	—	४२ वर्ष	७२ वर्ष

क्रम	३९ निर्वाण तिथि	४० निर्वाण नक्षत्र	४१ निर्वाण तप	४२ निर्वाण स्थळ	४३ साथे अणसण करनार मुनिओ
१	महा वद १३	अभिजित	६(छ)उपवास	अष्टापद	१०,०००
२	चैत्र सुद ५	मृगशीर्ष	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	१,०००
३	चैत्र सुद ५	मृगशीर्ष	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	१,०००
४	वैशाख सुद ८	पुष्य	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	१,०००
५	चैत्र सुद ९	पुनर्वसु	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	१,०००
६	मागसर वद ११	चित्रा	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	३०८
७	फागण वद ७	मूल	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	५००
८	भादरवा वद ७	श्रवण	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	१,०००
९	भादरवा वद ९	मूल	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	१,०००
१०	वैशाख वद २	पूर्वाषाढा	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	१,०००
११	श्रावण वद ३	धनिष्ठा	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	१,०००
१२	अषाढ सुद १४	उत्तर भाद्रपद	मासक्षमण	चंपा	६००
१३	अषाढ वद ७	रेवती	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	६,०००
१४	चैत्र सुद ५	रेवती	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	७,०००
१५	जेठ सुद ५	पुष्य	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	१०८
१६	जेठ वद १३	भरणी	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	९००
१७	वैशाख वद १	कृत्तिका	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	१,०००
१८	मागसर सुद १०	रेवती	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	१,०००
१९	फागण सुद १२	भरणी	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	३०० साधु ३०० साध्वी
२०	जेठ वद ९	श्रवण	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	१,०००
२१	वैशाख वद १०	अश्विनी	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	१,०००
२२	अषाढ सुद ८	चित्रा	मासक्षमण	रैवताचल	५३६
२३	श्रावण वद ८	विशाखा	मासक्षमण	सम्मेत शिखर	३३
२४	कारतक वद ०॥	स्वाति	छट्ठ	पावापुरी	–

मूळ कृतिना आधारे करेलुं यक्षनुं स्वरूप

क्रम	तीर्थंकर	यक्ष	वर्ण	वाहन	मुख	नेत्र	भुजा	जमणा हाथना आयुध	डाबा हाथना आयुध
१	ऋषभदेव	गोमुख	सुवर्ण	हाथी	—	—	४	वरद, अक्षमाला	बीजोरुं, पाश
२*	अजितनाथ	महायक्ष	श्याम	हाथी	४	—	८	वरद, अक्षमाला, मुद्गर, पाश	बीजोरुं, अंकुश, अभय, शक्ति
३	सम्भवनाथ	त्रिमुख	श्याम	मोर	३	३	६	नकुल, गदा, अभय	बीजोरुं, अक्षमाला, नाग[१]
४	अभिनन्दन स्वामी	यक्षेश्वर	श्याम	हाथी	—	—	४	अक्षसूत्र, बीजोरुं	नाग, अंकुश
५	सुमतिनाथ	तुम्बरु	श्वेत	गरुड	—	—	४	वरद, शक्ति	गदा, पाश
६	पद्मप्रभस्वामी	कुसुम	नील	हरण	—	—	४	फल, अभय	नकुल, अक्षसूत्र
७	सुपार्श्वनाथ	मातंग	नील	हाथी	—	—	४	बिल्व, पाश	नकुल, अंकुश
८	चन्द्रप्रभस्वामी	विजय	नील	राजहंस	—	३	२	चक्र	मुद्गर
९	सुविधिनाथ	अजित	श्वेत	कूर्म	—	—	४	बीजोरुं, अक्षसूत्र	नकुल, भालो
१०	शीतलनाथ	ब्रह्मा	श्वेत	कमल	४	३	८	बीजोरुं, मुद्गर, अभय, पाश	नकुल, गदा, अंकुश, अक्षसूत्र
११	श्रेयांसनाथ	यक्षेश्वर	श्वेत	वृषभ	—	३	४	बीजोरुं, गदा	अक्षसूत्र, नकुल
१२	वासुपूज्यस्वामी	[सुर]कुमार	श्वेत	राजहंस	—	—	४	बीजोरुं, बाण	नकुल, धनुष

क्रम	तीर्थंकर	यक्ष	वर्ण	वाहन	मुख	नेत्र	भुजा	जमणा हाथना आयुध	डाबा हाथना आयुध
१३	विमलनाथ	षण्मुख	श्वेत	मोर	६	—	१२	फल, चक्र, बाण, खड्ग, पाश, अक्षसूत्र	चक्र, नकुल, धनुष, ढाल, अंकुश, अभय
१४	अनन्तनाथ	पाताल	रक्त	मगर	३	—	६	कमल, खड्ग, पाश	नकुल, ढाल, अक्षसूत्र
१५	धर्मनाथ	किन्नर	रक्त	कूर्म	३	—	६	बीजोरुं, अभय, गदा	नकुल, कमल, अक्षमाला
१६	शान्तिनाथ	गरुड	श्याम	वराह	—	—	४	बीजोरुं, कमळ	नकुल, अक्षसूत्र
१७	कुन्थुनाथ	गन्धर्व	श्याम	राजहंस	—	—	४	शूल, बीजोरुं[२]	बीजोरुं, अंकुश
१८	अरनाथ	यक्षेन्द्र	श्याम	मोर(शंख)[३]	६	३	१२	बाण, बीजोरुं, खड्ग, पाश, मुद्गर, अभय	नकुल, धनुष, अंकुश, ढाल, शूल, अक्षसूत्र
१९	मल्लिनाथ	कुबेर	नील	हाथी	४	—	८	वरद, परशु, शूल, अभय	बीजोरुं, अक्षसूत्र, मुद्गर, शक्ति
२०	मुनिसुव्रतस्वामी	वरुण	श्वेत	वृषभ	४	३	८	बाण, गदा, बीजोरुं, शक्ति	नकुल, कमल, धनुष्य, परशु
२१	नमिनाथ	भृकुटि	सुवर्ण	वृषभ	४	३	८	मुद्गर, अभय, शक्ति, बीजोरुं	वज्र, नकुल, परशु, अक्षसूत्र
२२	नेमिनाथ	गोमेध	श्याम	नर	३	—	६	बीजोरुं, परशु, चक्र	नकुल, शक्ति, शूल
२३	पार्श्वनाथ	पार्श्व	श्याम	कूर्म	—	—	४	बीजोरुं, नाग	नकुल, नाग[४]
२४	महावीर	मातंग	श्याम	हाथी	—	—	२	नकुल	बीजोरुं

मूळ कृतिना आधारे करेलुं यक्षिणीनुं स्वरूप

क्रम	तीर्थंकर	यक्षिणी	वर्ण	वाहन	मुख	नेत्र	भुजा	जमणा हाथना आयुध	डाबा हाथना आयुध
१	ऋषभदेव	अप्रतिचक्रा	सुवर्ण	गरुड			८	वरद, चक्र, बाण, पाश	धनुष, वज्र, चक्र, अंकुश
२*	अजितनाथ	अजिता (अजितबला)	श्वेत	बकरो[५]			४	वरद, पाश	बीजोरुं, अंकुश
३	सम्भवनाथ	दुरितारी	श्वेत	मेष			४	अक्षसूत्र, वरदान	अभय, नाग
४	अभिनन्दन स्वामी	काली	श्याम	कमल			४	वरद, पाश	नाग, अंकुश
५	सुमतिनाथ	महाकाली	सुवर्ण	कमल			४	वरद, पास	अंकुश, बीजोरुं
६	पद्मप्रभस्वामी	अच्युता	श्याम	नर			४	वरद, अंकुश	बीजोरुं, पाश
७	सुपार्श्वनाथ	श्यामा (शान्ता?)	सुवर्ण	हाथी			४	वरद, अक्षसूत्र	अभय, शूल
८	चन्द्रप्रभस्वामी	भ्रुकुटि	पीळो	बिडाल			४	मुद्गर, खड्ग	ढाल, परशु
९	सुविधिनाथ	सुतारा	श्वेत	वृषभ			४	अक्षसूत्र, वरद	कलश, अंकुश
१०	शीतलनाथ	अशोका	नील	पद्मकमल			४	वरद, पाश	फल, अंकुश
११	श्रेयांसनाथ	मानवी	श्वेत	सिंह			४	वरद, मुद्गर	कलश, अंकुश
१२	वासुपूज्यस्वामी	चण्डा	श्याम	अश्व			४	वरद, शक्ति	पुष्प, गंदा
१३	विमलनाथ	विदिता	नील	कमल			४	बाण, पाश	नाग, धनुष
१४	अनन्तनाथ	अंकुशा	श्वेत	कमल			४	खड्ग, पाश	ढाल, अंकुश
१५	धर्मनाथ	कन्दर्पा	श्वेत	मत्स्य			४	कमल, अंकुश	कमळ, अभय
१६	शान्तिनाथ	निर्वाणी	श्वेत	कमल			४	पुस्तक, कमल	कमण्डल, कमल

क्रम	तीर्थंकर	यक्षिणी	वर्ण	वाहन	मुख	नेत्र	भुजा	जमणा हाथना आयुध	डाबा हाथना आयुध
१७	कुन्थुनाथ	बला	श्वेत	मोर			४	बीजोरुं, शूल	भु(मु)सण्डी, कमल
१८	अरनाथ	धारणी	नील	कमल			४	बीजोरुं, कमल	अक्षसूत्र, कमल
१९	मल्लिनाथ	वैरुट्या	श्याम	कमल			४	अक्षसूत्र, वरद	बीजोरुं, शक्ति
२०	मुनिसुव्रतस्वामी	नरदत्ता	श्वेत	भद्रासन			४	अक्षसूत्र, वरद	बीजोरुं, शूल
२१	नमिनाथ	गान्धारी	श्वेत	राजहंस			४	वरद, खड्ग	बीजोरुं, बीजोरुं
२२	नेमिनाथ	अम्बिका	सुवर्ण	सिंह			४	आम्बानी लुम, पाश	पुत्र, अंकुश
२३	पार्श्वनाथ	पद्मावती	सुवर्ण	कुकुटसर्प			४	कमल, पाश	अंकुश, फल
२४	महावीर स्वामी	सिद्धायिका	नील	सिंह			४	अभय, पुस्तक	बीजोरुं, वीणा

टिप्पणी :

* अहीं कृतिमां बीजुं स्तवन त्रूटक होवाथी ते विगत 'आपणा तीर्थंकरो'मांथी उतारी छे.

१. अहीं कृतिकारश्री कृतिमां त्रीजा नंबरनुं आयुध लखवानुं भूली गया लागे छे.

२. आयुधनां आ बे नामो प्रस्तुत कृति सिवाय अन्य कोई सन्दर्भ ग्रन्थोमां मलता नथी / ते ते ग्रन्थोमां विशेषे करीने बे आयुधोमां वरद तथा पाशनी नोंध मळे छे। अहीं कोई लेखन दोष सर्जायो होवानुं विचारी शकाय खरुं ?

३. यक्षेन्द्रना पाठान्तरे षण्मुखना वाहनरूपे महत्तम ग्रन्थोमां शिखि नहीं परन्तु शंखनो उल्लेखज मळे छे माटे अहीं ए लहियानी भूल होय तेवुं समजवु रह्युं.

४. कृतिमां मळती आयुधादिनी महत्तम नोन्धो कविए कांतो ''आचार दिनकर''मांथी लीधी छे कां तो ''चतुर्विंशति जिन संक्षिप्त चरित्र के त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित'' मांथी लीधी छे. ज्यारे पार्श्वयक्षना आयुधोनी नोंध निर्वाणकलिकाना आधारे करी होवानुं अनुमान थाय छे, तेवुं करवानुं कृतिकारश्रीनुं प्रयोजन विचारवुं रह्युं।

५. अजितनाथ प्रभुना यक्षिणीना वाहन तरीके अन्य ग्रन्थमां लोहासन पण मळे छे.

६. सुपार्श्वनाथ प्रभुना यक्षिणीनुं नाम महत्तम ठेकाणे ''शान्ता'' होवानुं लखाएलुं मळे छे तो अहीं कृतिकारे प्रयोजेलुं ''श्यामा'' नाम लहियानी भूल हशे ?